यज्ञ

आज़ादी का अमृत महोत्सव

अंक 14

संयुक्तांक 2021–22

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान

(मानित विश्वविद्यालय)

नई दिल्ली

परिकल्पना

अंतरराष्ट्रीय व्यापार अनुसंधान, प्रशिक्षण एवं शिक्षा के क्षेत्र के रूप में श्रेष्ठतम शैक्षिक केंद्र के रूप में स्थापित होना।

ध्येय

ज्ञानार्जन हेतु एक ऐसे वातावरण का निर्माण करना और उसे पोषित करना जिससे कि शिक्षार्थी समाज के प्रति संवेदनशीलता के साथ अंतरराष्ट्रीय व्यापार के क्षेत्र में पथ प्रदर्शक बनने में सक्षम हो सकें।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

सत्यमेव जयते

हिंदी दिवस 2021

के अवसर पर माननीय गृहमंत्री जी का संदेश

राजभाषा विभाग

गृह मंत्रालय, भारत सरकार

सत्यमेव जयते

अमित शाह
गृह और सहकारिता मंत्री
भारत सरकार
AMIT SHAH
HOME AND COOPERATION MINISTER
GOVERNMENT OF INDIA

प्यारे देशवासियों !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

भाषा मनोभाव व्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम है। किसी भी देश का समग्र विकास तभी संभव है जब उसके निवासी अपनी मातृभाषा में चिंतन एवं लेखन करें। मातृभाषा ही ज्ञान और अभिव्यक्ति का सबसे अच्छा माध्यम है। भारत जैसे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध देश के प्राचीन ज्ञान में ही आज के युग के अनेक जटिल प्रश्नों के उत्तर छुपे हैं और 21वीं सदी के भारत के विकास में इस ज्ञान का एक महत्वपूर्ण स्थान है। इस ज्ञान का उचित दोहन मातृभाषा के विकास के बिना संभव नहीं है। मातृभाषा में वह क्षमता है जो ज्ञान, गौरव और स्वाभिमान भी प्रदान करती है।

आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाने वाले भारतेंदु हरिश्चंद्र जी ने कहा है:

“मातृभाषा की उन्नति के बिना किसी भी समाज की तरक्की संभव नहीं है तथा अपनी भाषा के ज्ञान के बिना मन की पीड़ा को दूर करना असंभव है।“

हिंदी का उद्भव एवं विकास भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के साथ हुआ है। मूलत: इन सभी भाषाओं में भारतीय संस्कृति की मिट्टी की खुशबू आती है। यह आवश्यक है कि क्षेत्रीय भाषाओं का संरक्षण, संवर्धन और विकास किया जाए तथा अनुवाद के माध्यम से इनके बीच एक सेतु बनाया जाए,ताकि भारतीय साहित्य समृद्ध हो सके। इससे भारतीय भाषाओं में आपसी सामंजस्य, सहिष्णुता, सम्मान और सौहार्द भी बढ़ेगा तथा हमें एक-दूसरे का साहित्य पढ़ने का अवसर भी मिलेगा एवं देश की भाषाई एवं राष्ट्रीय एकता और मजबूत होगी। देश की सभी भाषाओं की आपसी सहभागिता, उनका स्वतंत्र विकास और संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग देश में शांति, परस्पर सद्भावना एवं प्रगति का मुख्य आधार बन सकता है। तिरुवल्लूवर और सुब्रमण्यम भारती जैसे तमिल के महान कवियों की साहित्यिक रचनाएं कालजयी हैं, जिन पर सभी देशवासियो को गौरव है।

इसी प्रकार बांग्ला के रवींद्रनाथ टैगोर हों, शरतचंद्र हों या महाश्वेता देवी अथवा पंजाब की अमृता प्रीतम, हम इनका साहित्य भी उसी प्रकार हिंदी में पढ़ते हैं, जिस प्रकार हम हिंदी के प्रेमचंद का साहित्य पढ़ते हैं। वास्तव में, हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाएं हमें विरासत में मिली हैं तथा इस धरोहर की रक्षा एवं संवर्धन करना हमारा महत्वपूर्ण दायित्व भी है और वर्तमान सरकार इसी दिशा में प्रतिबद्ध है। दशकों के बाद देश के माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में एक ‘नई शिक्षा नीति’ हमें मिली है, जिसका उद्देश्य मातृभाषा में शिक्षा उपलब्ध कराना तथा सभी भारतीय भाषाओं को पल्लवित और पुष्पित करना है।

विभिन्न भाषाएं और संस्कृतियां भारत की पहचान हैं, सभी भाषाओं का समृद्ध इतिहास है, समृद्ध साहित्य है और बड़ी संख्या में बोलने वाले भी मौजूद हैं किंतु पूरे राष्ट्र को एकसूत्र में पिरोने का काम हिंदी ने बखूबी किया है। देश की आजादी की लड़ाई में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता सेनानियों को एक करने का काम उस जमाने में हिंदी भाषा ने किया था। इस कार्य में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी, उन्होंने कहा था,

“जो भाषा भारत के दिलों पर राज करती है, वह भाषा हिंदी है।“

भाइयों, बहनों ! वैज्ञानिकों ने माना है कि हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है, हिंदी में उच्चारित होने वाली ध्वनियों को व्यक्त करना अत्यंत सरल है। हिंदी में जैसा बोला जाता है, वैसे ही लिखा जाता है और हिंदी की इन्हीं विशेषताओं और लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने गंभीर विचार-विमर्श के बाद आपसी सहमति से हिंदी को भारत संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा हिंदी संबंधित संवैधानिक प्रावधानों को आज के ही दिन यानि 14 सितंबर 1949 को अंगीकार किया। इसी उपलक्ष में हम प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं।

प्यारे देशवासियों! जैसा कि आप जानते हैं,कोरोना के कारण भारत ही नहीं अपितु पूरी दुनिया में गंभीर संकट आ गया और सभी देशों ने इस समस्या से निदान पाने के लिए हर संभव प्रयास किए। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत में कोरोना की लड़ाई अत्यंत सफलतापूर्वक लड़ी गई। इस लड़ाई में सभी राज्य सरकारों और भारत की 130 करोड़ की जनता ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में इस लड़ाई से लड़ने में हमें अनेक विकसित देशों से बेहतर सफलता मिली और यदि जनसंख्या के अनुपात से देखें तो हम पूरी दुनिया में सबसे कम मृत्यु दर के साथ महामारी से हुई हानि को कम रखने में सफल हुए हैं। इस लड़ाई में माननीय प्रधानमंत्री जी ने देश की जनता के हौसले को बढ़ाने के लिए समय-समय पर जनता की भाषा में ही राष्ट्र को संबोधित किया ताकि देश के अधिक से अधिक लोगों तक प्रभावी ढंग से बात पहुंच सके।

कोरोना काल की विषम परिस्थितियों में राजभाषा संबंधी संवैधानिक दायित्वों के निर्वहन में राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित किया। माननीय प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर भारत और स्वदेशी के आह्वान से प्रेरित होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने स्मृति आधारित कंप्यूटर सॉफ्टवेयर स्वदेशी टूल 'कंठस्थ' को अधिक लोकप्रिय बनाया। विभिन्न सरकारी संगठनों के हिंदी अधिकारियों को ई-प्रशिक्षण देकर प्रोत्साहित भी किया है। इसी प्रकार स्वयं हिंदी भाषा सीखने के लिए बनाए गए 'लीला हिंदी ऐप',- *लर्निंग इंडियन लैंग्वेजेज थ्रू आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस* का भी प्रचार किया जा रहा है। इस ऐप के माध्यम से अंग्रेजी के अलावा 14 अन्य भारतीय भाषाओं, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम, बांग्ला, असमिया, मणिपुरी, मराठी, उड़िया, पंजाबी, नेपाली, कश्मीरी, गुजराती एवं बोडो से स्वयं हिंदी सीखी जा सकती है।

कोरोना महामारी में भी राजभाषा संबंधी कर्तव्यों को ध्यान में रखते हुए राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों/ विभागों/ उपक्रमों आदि के द्वारा प्रकाशित की जाने वाली गृह पत्रिकाओं के लिए ई-पत्रिका पुस्तकालय प्लेटफार्म उपलब्ध कराया, जिसके माध्यम से देश-विदेश में कहीं भी बैठकर केंद्र सरकार के संस्थानों की गृह-पत्रिकाओं को पढ़कर उसका लाभ उठाया जा सकता है। वर्तमान में राजभाषा विभाग ने इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से बैठकें एवं निरीक्षण कर राजभाषा संवर्धन में एक नई पहल की है। ई-महाशब्दकोश मोबाइल ऐप' तथा 'ई-सरल हिंदी वाक्यकोश मोबाइल ऐप' भी उपलब्ध कराए हैं, इनके प्रयोग से अधिकारियों को हिंदी में टिप्पणी लिखने में बहुत सुविधा हो रही है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की सुविचारित नीति है कि केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग प्रेरणा, प्रोत्साहन व सद्भावना से बढ़ाया जाए। माननीय प्रधानमंत्री जी के स्मृति विज्ञान संबंधी प्रेम और प्रयोग से प्रभावित होकर राजभाषा विभाग ने हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए बारह 'प्र' की रूपरेखा और रणनीति पर काम करना शुरू किया है, जिसमें महत्वपूर्ण स्तंभ हैं: प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम, पुरस्कार, प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रबंधन, प्रोन्नति, प्रतिबद्धता और प्रयास। राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न बैठकों में संबंधित कार्यालय के शीर्ष नेतृत्व को इन्हीं बारह 'प्र' की रणनीति के अनुसार कार्यालय के अधिक से अधिक कार्य को मूल रूप से सरल एवं सहज हिंदी में करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

हम सभी जानते हैं कि भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी स्वयं हिंदी और भारतीय भाषाओं के प्रति अनुराग रखते हैं। माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में दिए गए ओजस्वी संबोधन तथा देश-विदेश में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में प्रधानमंत्री जी द्वारा हिंदी में किए गए संबोधन से सिर्फ देश ही नहीं बल्कि,विदेश में

रहने वाले भारतीयों को भी बहुत गर्व होता है। प्रधानमंत्री जी द्वारा भारत की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में स्थानीय लोगों को संबोधित करने का प्रयास भी क्षेत्रीय भाषाओं के प्रति सम्मान व्यक्त करने का एक सराहनीय और अनुकरणीय कदम है।

मुझे लगता है कि, जब हम आजादी के 75वें वर्ष में, अमृत पर्व में, प्रवेश कर रहे हैं, तो हमें इस वर्ष राष्ट्रकार्यों को हाथ में लेना चाहिए। महात्मा गांधी जी ने राजभाषा को राष्ट्रीयता के साथ जोड़ा था। हमारे आजादी के आंदोलन के तीन स्तंभ थे, स्वभाषा, स्वदेशी और स्वराज। स्वराज की कल्पना, स्वदेशी के संस्कार से उत्पन्न हुई स्वभाषा। आजादी के आंदोलन की यदि कोई सशक्त नींव थी, तो वह स्वभाषा ही थी। इस स्वभाषा से स्वदेशी के संस्कार ने जन्म लिया, स्वराज की कल्पना मिली, जिसने 15 अगस्त 1947 को आजादी दिलाई। इस आजादी के आंदोलन में हमारी स्वभाषाओं में राजभाषा और स्थानीय भाषाओं की भूमिका पर जो अलग-अलग साहित्य की रचनाएँ हुई हैं, इसका एक संग्रह कर देश के सामने रखना चाहिए ताकि नई पीढ़ी को स्वभाषा का महत्व पता चल सके।

दूसरा विषय जो मेरे मन में है, क्षेत्रीय इतिहास को राजभाषा में ढंग से अनुवादित करना चाहिए। विभिन्न क्षेत्रों की गौरवशाली संस्कृति और उन क्षेत्रों के महानायकों के इतिहास का राजभाषा में सही भाव के साथ अनुवाद होना चाहिए और ये अनुवादित ग्रंथ देश के विभिन्न ग्रंथालयों में उपलब्ध भी होने चाहिए। मैं मानता हूं कि आजादी के 75वें साल में मनाए जा रहे अमृत महोत्सव पर राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए हमारा बहुत बड़ा काम होगा।

संविधान द्वारा दिए गए राजभाषा संबंधी दायित्वों के निर्वहन की दिशा में माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम-काज मूल रूप से हिंदी में किया जा रहा है। गृह मंत्रालय में सभी फाइलें हिंदी में प्रस्तुत की जाती हैं, क्योंकि मेरा मानना है कि हिंदी में कार्य कर हम अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वहन तो कर ही रहे हैं, आम-जन तक सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों की जानकारी आम जनता की भाषा में देने का महत्वपूर्ण काम भी इसके साथ ही होता है।

आइए! हिंदी दिवस के इस पावन पर्व पर हम प्रतिज्ञा लें कि हम अपने राष्ट्रीय कर्तव्यों का पूर्ण रूप से पालन करेंगे और अधिक से अधिक मूल कार्य हिंदी में कर संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करेंगे।

हिंदी दिवस के अवसर पर सभी देशवासियों को पुन: हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं, वंदे मातरम् !

(अमित शाह)

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2021

सत्यमेव जयते
हिंदी दिवस 2022
के अवसर पर
माननीय गृह मंत्री जी
का संदेश
राजभाषा विभाग
गृह मंत्रालय, भारत सरकार

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

प्रिय देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

हमारा देश सांस्कृतिक और भाषाई दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। देश की भाषाई संपन्नता को ध्यान में रखते हुए संविधान निर्माताओं ने भारत के संविधान में भाषाओं के लिए अलग से आठवीं अनुसूची का प्रावधान किया जिसमें प्रारंभ में 14 भाषाएं रखी गयी थीं और अब इस अनुसूची में कुल 22 भाषाएं सम्मिलित हैं। भारत की सभी भाषाएं महत्वपूर्ण हैं और अपना समृद्ध इतिहास भी रखती हैं। विभिन्न भारतीय भाषाओं के साथ समन्वय स्थापित करते हुए हिंदी ने जनमानस के मन में विशेष स्थान प्राप्त किया है। यही कारण है कि आज़ादी के आंदोलन में अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने हिंदी को संपर्क भाषा बनाकर आंदोलन को गति प्रदान की। 'स्वराज' प्राप्ति के हमारे स्वतंत्रता आंदोलन में स्वभाषा का आन्दोलन निहित था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिंदी की महती भूमिका को देखते हुए संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा हिंदी और देवनागरी लिपि को अपनाया। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश दिए गए हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रेरणादायक नेतृत्व में आज जब पूरा देश आज़ादी का अमृत महोत्सव मना रहा है और प्रत्येक क्षेत्र में हम नई ऊर्जा के साथ नये संकल्प ले रहे हैं, ऐसे में यह सामूहिक प्रयास होना चाहिए कि राजभाषा हिंदी को लेकर संविधान द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जाए।

किसी लोकतांत्रिक देश में सरकारी कामकाज की भाषा तभी सार्थक भूमिका अदा कर सकती है जब वह देश के जन सामान्य से जुड़ी हो और प्रयोग करने में आसान हो, ज्यादा से ज्यादा लोग उसे समझते हों और जनसामान्य में लोकप्रिय हो। हिंदी की इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए 14 सितंबर 1949 के दिन हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। इसके साथ ही राजभाषा हिंदी में आवश्यकता के अनुसार शब्दावली निर्माण, वर्तनी के मानकीकरण किए गए और सरकारी कार्यालयों में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन की नीति अपनाई गई। राजभाषा की इस विकास यात्रा में हमने कई लक्ष्य प्राप्त किए हैं लेकिन अभी भी बहुत कुछ किया जाना शेष है। विगत तीन वर्षों से प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम–काज में हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करने के लिए गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयासरत है जिससे विभिन्न मंत्रालयों/विभागों में हिंदी का काम–काज तेजी से बढ़ा है। मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि वर्तमान में गृह मंत्रालय में ज्यादातर कार्य हिंदी में किया जाता है तथा कई अन्य मंत्रालयों में माननीय मंत्री भी अपना अधिकांश कार्य राजभाषा हिंदी में करते हैं।

राजभाषा कार्यान्वयन की गति तीव्र करने और समय समय पर किए गए कार्यों की समीक्षा हेतु मई, 2019 में नई सरकार के गठन के पश्चात 57 मंत्रालयों में से 53 में हिंदी सलाहकार समितियों का गठन किया गया है तथा निरंतर बैठकें आयोजित की जा रही हैं। देश भर में विभिन्न शहरों में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने की दृष्टि से अब तक कुल 527 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया जा चुका है। विदेशों में लंदन, सिंगापुर, फिजी, दुबई और पोर्ट लुई में भी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया गया है। राजभाषा कार्यान्वयन को और मजबूत करने की दिशा में संसदीय राजभाषा समिति अपनी सिफारिशों के दस खंड माननीय राष्ट्रपति जी को

प्रस्तुत कर चुकी है तथा 11 वां खंड शीघ्र ही सौंपा जा रहा है।

राजभाषा विभाग द्वारा 13–14 नवंबर, 2021 को बनारस में पहला अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन तथा नई दिल्ली में केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग के अधिकारियों के लिए पहला तकनीकी सम्मेलन आयोजित किया गया। इन कार्यक्रमों से हिंदी प्रेमियों के उत्साह में अपार वृद्धि हुई है। यह और भी सुखद है कि हिंदी दिवस–2022 तथा द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का ऐतिहासिक आयोजन गुजरात के सूरत शहर में हो रहा है।

गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग की दिशा में निरंतर प्रयत्नशील है। राजभाषा विभाग ने स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली 'कंठस्थ' का निर्माण और विकास किया है जिसमें आज लगभग 22 लाख वाक्य शामिल किए जा चुके हैं। इस टूल का प्रयोग सुनिश्चित कर सरकारी कार्यालयों में अनुवाद की गति एवं गुणवत्ता बढ़ाई गई है। राजभाषा विभाग द्वारा जन–साधारण के लिए **'लीला हिंदी प्रवाह'** मोबाइल ऐप तैयार किया गया है जिसे अपनाकर 14 विभिन्न भाषा–भाषी अपनी–अपनी मातृभाषाओं से निःशुल्क हिंदी सीख सकते हैं। राजभाषा विभाग के 'ई–महाशब्दकोश' में 90 हज़ार शब्द सम्मिलित किए गए हैं और 'ई–सरल' हिंदी वाक्यकोश में 9 हज़ार वाक्य शामिल हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश को नई शिक्षा नीति मिली जिसमें मातृभाषा में शिक्षा देने को प्राथमिकता दी जा रही है। राजभाषा विभाग ने अमृत महोत्सव के अवसर पर विधि, तकनीकी, स्वास्थ्य, पत्रकारिता तथा व्यवसाय आदि सहित विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्दों को शामिल करते हुए हिंदी से हिंदी **'बृहत शब्दकोश'** के निर्माण पर भी काम शुरु किया है और सुलभ संदर्भ के लिए एक अच्छे शब्दकोश का सृजन किया जा रहा है। इस तरह की उन्नत शब्दावली प्रशिक्षण, अनुवाद तथा शीघ्रता से ग्रहण करने में भाषा की जानकारी की दृष्टि से महत्वपूर्ण होगी।

हजारों वर्षों से भारतीय सभ्यता की अविरल धारा हमारी भाषाओं, संस्कृति और लोकजीवन में सुरक्षित रही है। भारत में स्थानीय भाषाओं का योगदान हमारी संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए अतुलनीय रहा है। इन भाषाओं ने हिंदी को समृद्ध किया है। हिंदी उन समस्त भारतीय भाषाओं की मूल परंपरा से है जो इस देश की मिट्टी से उपजी हैं, यहीं पुष्पित पल्लवित हुई हैं और जिन्होंने अपनी शब्द–संपदा, भाव संपदा, रूप, शैली और अपने पदों से हिंदी को लगातार समृद्ध किया है। **राजभाषा हिंदी किसी भी भारतीय भाषा की प्रतिस्पर्धी नहीं बल्कि उसकी सखी है और हमारी सभी भाषाओं का विकास एक दूसरे के परस्पर सहयोग से ही संभव है।**

प्रिय देशवासियो ! हिंदी दिवस के इस अवसर पर मैं आप सभी का आह्वान करता हूँ कि आप और हम मिलकर यह संकल्प लें कि अपनी भाषाओं पर गर्व की अनुभूति करेंगे। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी देश–विदेश के मंचों पर हिंदी में उद्बोधन देते हैं जिससे सभी हिंदी प्रेमियों में उत्साह का संचार होता है। आज़ादी के 75 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं और माननीय प्रधानमंत्री जी के प्रतिभाशाली नेतृत्व में आने वाले 25 वर्षों को देश में अमृतकाल के रूप में मनाया जा रहा है। ऐसे में भाषाई समरसता को ध्यान में रखते हुए हिंदी तथा हमारी सभी भारतीय भाषाओं का विकास अत्यंत आवश्यक है।

आइये, आज संकल्प लें कि अपने दैनिक कार्यों में, कार्यालय के कामकाज में अधिक से अधिक काम हिंदी तथा स्थानीय भाषाओं में करके दूसरों के लिए भी अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करेंगे तथा संवैधानिक दायित्वों की पूर्ति करेंगे।

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को पुनः मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिंद!

नई दिल्ली

14 सितंबर, 2022

(अमित शाह)

कुलपति की कलम से...

प्रो. सतिंदर भाटिया
कुलपति

नमस्कार,

यह हमारे लिए उल्हास का विषय है कि भारतीय विदेश व्यापार संस्थान, अंतर्राष्ट्रीय व्यवसाय एवं व्यापार के क्षेत्र में शिक्षण, प्रशिक्षण एवं अनुसंधान के माध्यम से कौशल निर्माण में अपना उत्कृष्ट योगदान देने के साथ–साथ भारत की राजभाषा हिंदी के प्रयोग एवं प्रचार–प्रसार में भी संस्थान की गृह पत्रिका 'यज्ञ' के प्रकाशन के माध्यम से आंशिक योगदान देने हेतु प्रयासरत है।

भारत के जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की संवाहक, संप्रेषक एवं परिचायक, और राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित हिंदी के प्रति अपनी वचनबद्धता का निर्वहन करते हुए, संस्थान की गृह पत्रिका 'यज्ञ' अपने अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा के लिए मंच प्रदान करती है। हमारे संस्थान के कर्मियों ने उपलब्ध मंच की उपयोगिता को पहचान कर न केवल अपनी सृजनात्मक प्रतिभा, बल्कि हिंदी में अपनी अभिरुचि का भी परिचय दिया है। इसके लिए वे निश्चित ही बधाई के पात्र हैं। पत्रिका को सुंदर कलेवर प्रदान करने के लिए हिंदी अनुभाग एवं संपादक मंडल का भी मैं अभिनंदन करती हूँ।

'यज्ञ' पत्रिका के विमोचन के शुभ अवसर पर हार्दिक बधाई एवं इसके सातत्य हेतु शुभकामनाएँ।

— (प्रो. सतिंदर भाटिया)

सरंक्षक की कलम से....

डॉ. प्रमोद कुमार गुप्ता
कुलसचिव

शुभेच्छा,

यह प्रसन्नता का विषय है कि भारतीय विदेश व्यापार संस्थान अंतरराष्ट्रीय व्यापार में शिक्षण, प्रशिक्षण एवं अनुसंधान के क्षेत्र में एक अग्रणी संस्थान होने के साथ–साथ राष्ट्रभाषा हिंदी के कार्यान्वयन व प्रचार प्रसार के लिए भारत सरकार द्वारा समय–समय दिए गए निर्देशों का भली–भांति अनुपालन कर रहा है। हिंदी भारतीय जनजीवन एवं संस्कृति के साथ साथ व्यापार वाणिज्य की भी माध्यम भाषा है। निस्संदेह हिंदी के प्रचार प्रसार में यह साकारात्मक कदम है। अतः हमारा कर्तव्य बनता है कि हम सभी हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करें और हिंदी के प्रति संवेदनशील और सक्रिय बने। अंततः 'यज्ञ' के सतत एवं सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल और उसके लेखकों को बधाई देता हूं। साथ ही आशा करता हूं कि संस्थान में राजभाषा हिंदी विकास का क्रम जारी रहेगा तथा यह पत्रिका अपने आप में रोचक और ज्ञानवर्धक विषय–वस्तु और समग्र गुणवत्ता के कारण पाठकों को आकर्षित करती रहेगी। सभी कार्मिकों से मेरा अनुरोध है कि राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में इसी प्रकार अपना सहयोग बनाए रखें और इस दिशा में उत्तरोत्तर वृद्धि हेतु प्रयासरत रहें।

मंगलकामनाओं सहित।

प्रमोद गुप्ता

(डॉ. प्रमोद कुमार गुप्ता)
कुलसचिव

मार्गदर्शक की कलम से...

डॉ. के रंगराजन
केंद्र प्रधान
कोलकाता परिसर

प्रिय सहकर्मियों,

प्रणाम!!

संस्थान की गृह पत्रिका 'यज्ञ' के सफल प्रकाशन पर हिंदी प्रभाग और सभी सदस्यों को बधाई देता हूं। यह वार्षिक प्रकाशन अपने संस्थान के सदस्यों की हिंदी भाषा के प्रति वचनबद्धता को दर्शाता है। हिंदी का योगदान वर्तमान युग में हर क्षेत्र में प्रसारित हो रहा है, जिससे हिंदी भाषा को अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में ख्याति दिलाने का यथासंभव प्रयास कार्यरथ है। वर्तमान समय में हिंदी भाषा अपने व्यापक प्रचार–प्रसार के कारण अलग–अलग भाषाएं बोलने वाले लोगों के बीच संपर्क भाषा बन रही है। इस प्रकार बहुभाषी संप्रेषणीयता के कारण मैं लोगों को अपने बहुत करीब पाता हूं। पत्रिका में संस्थान के सदस्यों के विचार, लेखन आदि की हिंदी के कार्यकलापों की श्रृंखला को देखकर मुझे प्रसन्नता हो रही है। अतः आशा है कि संस्थान में राजभाषा हिंदी के विकास का यह क्रम जारी रहेगा। हिंदी प्रभाग और सभी सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाएं!!

जय हिंद !!

के. रंगराजन

(डॉ. के रंगराजन)

संपादक की कलम से...

हिंदी हमारी भाषा हमारा प्रतिबिंब है।
– महात्मा गांधी

डॉ. मेघा आचार्य
हिंदी अधिकारी

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) अर्थात कृत्रिम बुद्धिमत्ता, जिसका प्रारंभ 1950 के दशक में हुआ, आज के युग की नवीनतम तकनीकी उपलब्धि है। इसके जनक जॉन मैकार्थी के अनुसार आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) कृत्रिम पद्धति से तैयार की गई बौद्धिक क्षमता अर्थात बुद्धिमान कंप्यूटर प्रोग्राम बनाने की विज्ञान और अभियांत्रिकी है। तकनीकी को मानवीय बुद्धिमत्ता प्रदान करना, निश्चित रूप से एक क्रांतिकारी उपलब्धि है। इसी क्रम में इसके एक शाखा के रूप में प्राकृतिक भाषा संसाधन अंतर्गत भाषा एवं अनुवाद के साथ भी यह प्रयोग बहुत हद तक सफल हुए हैं। गूगल जैसे कई प्लेटफॉर्म अनेक भाषाओं में मशीनी अनुवाद उपलब्ध करवा रहे हैं। राजभाषा के क्षेत्र में राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा सी–डैक, पुणे के माध्यम से 'स्मृति आधारित टूल–कंठस्थ' का निर्माण करवाया गया है, जिसे न्यूराल मशीन अनुवाद, वॉइस टायपिंग आदि जैसी आधुनिक सुविधाओं के साथ और अधिक उन्नत करने के उद्देश्य से हाल ही में इसका नवीन संस्करण कंठस्थ 2.0 विकसित किया गया है। यह टूल केंद्र सरकार के कामकाज में नियमित आधार पर बड़ी मात्रा में किए जाने वाले अनुवाद कार्य में लगने वाले मानव संसाधन एवं समय को बचाने में उपयोगी सिद्ध हो रहा है। यह समय है कि राजभाषा के क्षेत्र में 'कंठस्थ' के माध्यम से तकनीकी से जुड़कर हम भी राजभाषा हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें और भविष्य में बड़े पैमाने में कार्यालयीन सामग्री का निर्माण कर उसे प्रयोग में लाए।

राजभाषा के अधिकाधिक प्रयोग एवं प्रसार में तकनीकी के साथ कदम से कदम मिलाते हुए गृह पत्रिकाओं का भी अपना विशेष योगदान है। सरकार के मितव्यतता संबंधी आदेश तथा डिजिटलीकरण की नीति के अनुसरण में अब गृह पत्रिकाएँ न केवल हिंदी पत्रिका के पाठकों की संख्या में वृद्धि कर रही हैं, बल्कि इन्टरनेट पर हिंदी की विषय वस्तु बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इस भाषायी यज्ञ में आहुती स्वरूप भारतीय

विदेश व्यापार संस्थान की पत्रिका 'यज्ञ' और इसके माध्यम से संस्थान के स्टाफ सदस्य भी लेखकीय सहयोग दे कर जन–जन की भाषा हिंदी के प्रति अपना उत्तरदायित्व पूर्ण कर रहे हैं।

उच्चाधिकारियों के दिशा–निर्देश, मार्गदर्शन एवं संपादक मंडल के सहयोग से संस्थान की गृह पत्रिका 'यज्ञ' के 14 वें अंक का संपादन सफल हो पाया है। एक अंतराल के पश्चात प्रकाशित यह अंक भारतीय विदेश व्यापार संस्थान के गतिविधियों को प्रतिबिंबित करने का प्रयास करते हुए, कई कार्यक्रमों की झलकियों को समेटे हुए हैं और साथ ही संस्थान के स्टाफ सदस्यों व उनके परिवार के सदस्यों के मौलिक लेखन एवं कला को आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा है। 'यज्ञ' को और बेहतर बनाने के लिए आप सभी सुधि पाठकों के मौखिक/लिखित प्रतिक्रियाओं की भी प्रतीक्षा रहेगी।

धन्यवाद।

मेघा

डॉ. मेघा आचार्य

हिंदी अधिकारी

विषय-सूची

अंक–14 संयुक्तांक 2021–22

प्रधान संरक्षक
प्रो. सतिंदर भाटिया

संरक्षक
डॉ. प्रमोद कुमार गुप्ता
कुलसचिव

संपादक
डॉ. मेघा आचार्य
हिंदी अधिकारी

संपादक मंडल
डॉ. आशीष पांडेय
डॉ. प्रतीक माहेश्वरी
डॉ. आशीष गुप्ता

सहयोग
समस्त
आई.आई.एफ.टी परिवार

प्रकाशक
हिंदी अनुभाग
भारतीय विदेश व्यापार संस्थान
बी–21
कुतुब इंस्टीट्यूशनल एरिया
नई दिल्ली–110 016

पत्रिका में प्रकाशित लेखों और रचनाओं में अभिव्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं। हिंदी अनुभाग का उनसे सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

क्रमांक	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ सं.
1.	हिंदी दिवस 2021 के अवसर पर माननीय गृहमंत्री का संदेश		1
2.	हिंदी दिवस 2022 के अवसर पर माननीय गृहमंत्री का संदेश		5
3.	कुलपति की कलम से		8
4.	संरक्षक की कलम से		9
5.	मार्गदर्शक की कलम से		10
6.	संपादक की कलम से		11
7.	12 'प्र' से किया जा सकता है राजभाषा हिंदी का समुचित विकास		15
8.	राजभाषा प्रतिज्ञा		19
9.	उपलब्धिः 'द एसोसिएशन टू एडवांस कॉलेजिएट स्कूल्स ऑफ बिजनेस' (AACSB) द्वारा भारतीय विदेश व्यापार संस्थान को मान्यता		20
10.	पुस्तकालय– शिक्षण संस्थान का दिल	अमिता आनंद	22
11.	वायरल होती दुनिया	अतुल	24
12.	"एक (अ) सफलता की कहानी"	एस बालासुब्रमण्यम	25
13.	बौद्ध दर्शन की मूल्य मीमांसा	चंदा रानी	27
14.	व्यावसायिक शिक्षाः पढ़ाना बंद करें, प्रबंधकों को सीखने दें	डॉ आर पी शर्मा	29
15.	जीवन में सामंजस्य का महत्व	गौरव गुप्ता	31
16.	बातें जो आपको रखेंगी गुस्से से दूर	मोनिका सैनी	32
17.	स्वामी विवेकानंद का जीवन परिचय और शैक्षिक दर्शन	चंदा रानी	34
18.	चित्रकला	प्रिशा वर्मा	39

क्रमांक	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ सं.
19.	विज्ञान, प्रौद्योगिकी और अर्थव्यवस्था की समसामयिकी	अजय शर्मा	40
20.	राधे श्याम	राहुल पाठक	41
21.	नारी हूँ	विशाखा सिंह	42
22.	मैं ही क्यों ?	सुश्री प्रीति वाजपेयी	42
23.	कैसे करें अदा 'प्रकृति का कर्ज'	डॉ. प्रतीक माहेश्वरी	43
24.	विश्व मित्रता दिवस	सतपाल सिंह	44
25.	तुम पिता हो गए हो	नीता पांडेय	44
26.	संगति का प्रभाव	सीमा	45
27.	बारूद	मेघा आचार्य	46
28.	आइए ले चलें आपको ''लक्षद्वीप''	राजिंदर सिंह बेवली	47
29.	मतभेद और मनभेद	सतपाल सिंह	53
30.	आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और उसके उपयोग	नेहा विनायक	55
31.	अंधा प्रेम	मेघा आचार्य	57
31.	'द मार्केटिंग गीता' : पुस्तक समीक्षा	श्री आयुष बाडोले	58
32.	वाणिज्य और लघुउद्योग मंत्रालय सरल हिंदी वाक्यकोश		59
33.	संस्थान में हिंदी सप्ताह 2021		60
34.	भारत में हिंदी भाषा की प्रमुख संस्थाएँ		64
35.	हिंदी कार्यशाला		65
36.	संस्थान में स्वागत		66
37.	सेवानिवृत्ति पर संस्थान से विदाई		67
38.	राजभाषा नियम, 1976		68
39.	हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2021–22 का वार्षिक कार्यक्रम		69
40.	राजभाषा हिंदी का सरल कार्यान्वयन कैसे हो ?		70
41.	भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल भाषाओं की सूची		70
42.	याद रखने योग्य बातें		71
43.	हिंदी सीखें आसानी से		72
44.	हिंदी की कुछ उपयोगी वेबसाइटें		72

12 'प्र' से किया जा सकता है राजभाषा हिंदी का समुचित विकास

– डॉ. सुमीत जैरथ

राजभाषा अर्थात राज–काज की भाषा, अर्थात सरकार द्वारा आम–जन के लिए किए जाने वाले कार्यों की भाषा/राजभाषा के प्रति लगाव और अनुराग राष्ट्र प्रेम का ही एक रूप है। संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया था। वर्ष 1975 में राजभाषा विभाग की स्थापना की गई और यह दायित्व सौंपा गया कि सभी केंद्र सरकार के कार्यालयों/मंत्रालयों/बैंकों आदि में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में किया जाना सुनिश्चित किया जाए। तब से लेकर आज तक देश भर में स्थित केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों एवं विभागों आदि में सरकार की राजभाषा नीति का अनुपालन तथा सरकारी काम–काज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने में राजभाषा विभाग की अहम भूमिका रही है। राजभाषा विभाग अपने क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों और नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के माध्यम से सभी स्तरों पर राजभाषा का प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित करता है ।

हम सभी जानते हैं कि जब हमारे संविधान निर्माता संविधान को अंतिम स्वरूप दे रहे थे, इसका आकार बना रहे थे, उस वक्त कई सारी ऐसी चीजें थी जिसमें मत–मतांतर थे। देश की राजभाषा क्या हो?, इसके विषय में इतिहास गवाह है कि तीन दिन तक इस संदर्भ में बहस चलती रही और देश के कोने–कोने का प्रतिनिधित्व करने वाली संविधान सभा में जब संविधान निर्माताओं ने समग्र स्थिति का आंकलन किया, दूरदर्शिता के साथ अवलोकन, चिंतन कर एक निर्णय पर पहुँचे तो पूरी संविधान सभा में सर्वानुमत से 14 सितंबर 1949 के दिन हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार करने का निर्णय लिया।

26 जनवरी 1950 को लागू भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में यह प्रावधान रखा गया कि संघ की राजभाषा 'हिंदी' व लिपि 'देवनागरी' होगी ।

अनुच्छेद 351 के अनुसार भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसाध करते हुए और जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द–भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से, और गौणतरू अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए हिंदी की समृद्धि सुनिश्चित की जानी है ।

महान लेखक महावीर प्रसाद द्विवेदी की पंक्तियाँ 'आप जिस प्रकार बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए। 'भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए' को ध्यान में रखते हुए राजभाषा–हिंदी को और सरल, सहज, स्वाभाविक बनाने के लिए राजभाषा विभाग दृढ़ संकल्प है। केंद्र सरकार के कार्यालयों/मंत्रालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में राजभाषा हिंदी में काम करने को दिन–प्रतिदिन सुगम और सुबोध बनाने का प्रयास किया जा रहा है । साथ ही साथ प्रधानमंत्री जी के "आत्मनिर्भर भारत""स्थानीय के लिए मुखर हों (Self-reliant India – Be vocal for local) के अभियान को आगे बढ़ाते हुए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत में सी–डेक, पुणे के सौजन्य से निर्मित स्मृति आधारित अनुवाद टूल "कंठस्थ" का विस्तार कर रहा है जिससे अनुवाद के क्षेत्र में समय की बचत करने के साथ–साथ एकरूपता और उत्कृष्टता भी सुनिश्चित हो।

राजकीय प्रयोजनों में राजभाषा हिंदी का प्रचार–प्रसार बढ़ाने तथा विकास की गति को तीव्र करने संबंधी संवैधानिक दायित्वों को पूर्ण करने के संबंध में हमारी प्रभावी रणनीति किस प्रकार की होनी चाहिए, इसका मूल सूत्र क्या होना चाहिए?, इस पर विचार करने के दौरान मुझे माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा दिए जाने वाले 'स्मृति–विज्ञान' (Mnemonics) की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और उपयोगी नजर आती है। विदेश से भारत में निवेश बढ़ाने के लिए माननीय प्रधानमंत्री जी के छह डी–

Democracy (लोकतंत्र)

Demand (माँग)

Demographic Dividend (जन सांख्यिकीय विभाजन)

Deregulation (अविनियमन)

Descent (उत्पत्ति)

Diversity (विविधता)

से प्रेरणा लेते हुए राजभाषा के सफल कार्यान्वयन के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने 12 "प्र" की रणनीति–रूपरेखा (Framework) की संरचना की है, जो निम्न प्रकार से है–

1. प्रेरणा (Inspiration and Motivation)

प्रेरणा (Inspiration) का सीधा तात्पर्य पेट की अग्नि (Fire in the belly) को प्रज्वलित करने जैसा होता है। हम सभी यह जानते हैं कि प्रेरणा में बड़ी शक्ति होती है और यह प्रेरणा सबसे पहले किसी भी चुनौती को खुद पर लागू कर दी जा सकती है। प्रेरणा कहीं से भी प्राप्त हो सकती है, लेकिन यदि संस्थान का शीर्ष अधिकारी किसी कार्य को करता है तो निश्चित रूप से अधीनस्थ अधिकारी/कर्मचारी उससे प्रेरणा प्राप्त करते हैं।

2. प्रोत्साहन (Encouragement)

मानव स्वभाव की यह विशेषता है कि उसे समय–समय पर प्रोत्साहन की आवश्यकता पड़ती है। राजभाषा हिंदी के क्षेत्र में यह प्रोत्साहन अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अधीनस्थ अधिकारियों/कर्मचारियों को समय–समय पर प्रोत्साहित करते रहने से उनका मनोबल ऊंचा होता है और उनके काम करने की शक्ति में बढ़ोत्तरी होती है ।

3. प्रेम (Love and Affection)

वैसे तो प्रेम जीवन का मूल आधार है किंतु कार्य क्षेत्र में अपने शीर्ष अधिकारियों द्वारा प्रेम प्राप्त करना कार्य क्षेत्र में नई ऊर्जा का संचार करता है। राजभाषा नीति सदा से ही प्रेम की रही है यही कारण है कि आज पूरा विश्व हिंदी के प्रति प्रेम की भावना रखते हुए आगे बढ़ रहा है।

4. प्राइज अर्थात पुरस्कार (Rewards)

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा प्रत्येक वर्ष राजभाषा कीर्ति पुरस्कार और राजभाषा गौरव पुरस्कार दिए जाते हैं। राजभाषा कीर्ति पुरस्कार केंद्र सरकार के मंत्रालयों/विभागों/बैंकों उपक्रमों आदि को राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए दिए जाते हैं और राजभाषा गौरव पुरस्कार विभिन्न मंत्रालयों/विभागों/उपक्रमों बैंकों आदि के सेवारत तथा सेवानिवृत्त अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा हिंदी में लेखन कार्य को प्रोत्साहित करने के लिए प्रदान किए जाते हैं। यह पुरस्कार 14 सितंबर, हिंदी दिवस के दिन माननीय राष्ट्रपति महोदय द्वारा प्रदान किए जाते हैं। पुरस्कारों का महत्व इस बात से समझा जा सकता है कि देश के कोने–कोने से इन पुरस्कारों के लिए प्रविष्टि आती है। जब मैंने राजभाषा विभाग का कार्यभार संभाला उस समय स्मृति आधारित अनुवाद टूल 'कंठस्थ' के अंदर डाटाबेस को मजबूत करने के लिए स्वस्थ प्रतियोगिता एवं सचिव (रा.भा.) की ओर से प्रशस्ति पत्र देने का निर्णय किया। इस कदम का यह परिणाम हुआ कि छह महीने के अंदर ही कंठस्थ का डाटा 20 गुना से ज्यादा बढ़ गया। इसलिए हम यह कह सकते हैं कि प्रतिस्पर्धा एवं प्राइज यानी पुरस्कार का महती योगदान होता है।

5. प्रशिक्षण (Training)

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान तथा केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के माध्यम से प्रशिक्षण का कार्य करता है। पूरे वर्ष अलग–अलग आयोजनों में सैकड़ों की संख्या में प्रशिक्षणार्थी इन संस्थानों के माध्यम से प्रशिक्षण पाते हैं। कहते हैं – "आवश्यकता, आविष्कार और नवीकरण की जननी है। "कोरोना महामारी ने हम सभी के सामने अप्रत्याशित संकट और चुनौती खड़ी कर दी। समय–समय पर प्रधानमंत्री जी ने राष्ट्र को संबोधित कर हम सभी को इस महामारी से लड़ने के लिए संबल प्रदान किया। इससे प्रेरित होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने आपदा को अवसर में परिवर्तित कर दिया। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का आश्रय लेते हुए – ई–प्रशिक्षण और माइक्रोसॉफ्ट टीम्स के माध्यम से हमारे दो प्रशिक्षण संस्थान – केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान तथा केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो ने पहली बार ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया। माननीय प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर भारत– स्थानीय के लिए मुखर हों (Be Local for Vocal) अभियान के अंतर्गत राजभाषा विभाग द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम के स्वदेशी NIC – Video Desk Top पर माइग्रेट किया जा रहा है।

6. प्रयोग (Usage)

'यदि आप प्रयोग नहीं करते हैं तो आप भूल जाते हैं' (If you do not use it, you lose it) हम जानते हैं कि यदि किसी भाषा का प्रयोग कम किया जाए या न के बराबर किया जाए तो वह धीरे–धीरे मन मस्तिष्क के पटल से लुप्त होने लगती है इसलिए यह आवश्यक होता है कि भाषा के शब्दों का व्यापक प्रयोग समय समय पर करते रहना चाहिए। हिंदी का प्रयोग अपने अधिक से अधिक काम में मूल रूप से करें ताकि अनुवाद की बैसाखी से बचा जा सके और हिंदी के शब्द भी प्रचलन में रहें।

7. प्रचार (Advocacy)

संविधान ने हमें राजभाषा के प्रचार का एक महत्वपूर्ण दायित्व सौंपा है, जिसके अंतर्गत हमें हिंदी में कार्य करके उसका अधिक से अधिक प्रचार सुनिश्चित करना है। हिंदी के प्रचार में हमारे शीर्ष नेतृत्व–माननीय प्रधानमंत्री जी तथा

माननीय गृह मंत्री जी राजभाषा हिंदी के मेसकोट–ब्रैंड राजदूत (Brand Ambassadors) के रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। देश–विदेश के मंचों पर हिंदी के प्रयोग से राजभाषा हिंदी के प्रति लोगों का उत्साह बढ़ा है। हम जानते हैं कि स्वतंत्रता के संघर्ष के दौरान राजनीतिक, सामाजिक आदि क्षेत्रों में एक संपर्क भाषा की आवश्यकता महसूस की गई । संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का पक्ष इसलिए प्रबल था, क्योंकि इस का अंतरप्रांतीय प्रचार शताब्दियों पहले ही हो गया था। उसके इस प्रचार में किसी राजनीतिक आंदोलन से ज्यादा भारत के विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित तीर्थ स्थानों में पहुँचने वाले श्रद्धालुओं का योगदान था। उनके द्वारा भिन्न–भिन्न भाषा–भाषियों के साथ संपर्क करने का एक प्रमुख माध्यम भाषा हिंदी थी जिससे स्वतः ही हिंदी का प्रचार होता था। आधुनिक युग में प्रचार का तरीका भी बदला है। तकनीक के इस युग में संचार माध्यमों का बड़ा योगदान है, इसलिए राजभाषा हिंदी के प्रचार में भी इन माध्यमों का अधिकतम उपयोग समय की मांग है।

8. प्रसार (Transmission)

राजभाषा हिंदी के काम का प्रसार करना सभी केंद्र सरकार के कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों आदि की प्राथमिक जिम्मेदारी में है और यह संस्था प्रमुख का दायित्व है कि वह संविधान के द्वारा दिए गए दायित्वों जिसमें प्रचार–प्रसार भी शामिल है, का अधिक से अधिक निर्वहन करें। राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने और कार्यालय स्तर पर हिंदी में लेखन को प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने में हिंदी गृह–पत्रिकाओं का विशेष महत्व है, इसलिए राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न केंद्रीय संस्थानों द्वारा प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ पत्रिकाओं को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार दिया जाता है। राजभाषा विभाग द्वारा अपनी वेबसाइट rajbhasha.gov.in पर बनाए गए ई–पत्रिका पुस्तकालय के माध्यम से हिंदी के पाठक विभिन्न सरकारी संस्थानों द्वारा प्रकाशित होने वाली ई–पत्रिकाओं से लाभान्वित हो सकेंगे। राजभाषा हिंदी के प्रसार में दूरदर्शन, आकाशवाणी की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसके साथ–साथ बॉलीवुड ने हिंदी के प्रसार में अद्वितीय योगदान दिया है ।

9. प्रबंधन (Administration and Management)

यह सर्वविदित है कि किसी भी संस्थान को उसका कुशल प्रबंधन नई ऊंचाइयों तक ले जा सकता है इसे ध्यान में रखते हुए संस्था प्रमुखों को राजभाषा के कार्यान्वयन संबंधी प्रबंधन की जिम्मेदारी सौंपी गई है। राजभाषा नियम, 1976 के नियम 12 के अनुसार केंद्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व है कि वह राजभाषा अधिनियम 1963, नियमों तथा समय–समय पर राजभाषा विभाग द्वारा जारी दिशा–निर्देशों का समुचित रूप से अनुपालन सुनिश्चित कराएं, इन प्रयोजनों के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जाँच–बिंदु बनवाएँ और उपाय करें।

10. प्रमोशन (पदोन्नति) (Promotion)

राजभाषा हिंदी में तभी अधिक ऊर्जा का संचार होगा, जब राजभाषा कार्यान्वयन के लिए नियुक्त अधिकारी एवं कर्मचारीय केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग के सदस्यगण, सभी उत्साहवर्धक और ऊर्जावान हों और अपना कर्तव्य पूरी निष्ठा और समर्पण से निभाएं। समय–समय पर प्रमोशन (पदोन्नति) मिलने पर निश्चित रूप से उनका मनोबल बढ़ेगा और इच्छाशक्ति सुदृढ़ होगी ।

11. प्रतिबद्धता (Commitment)

राजभाषा हिंदी को और बल देने के लिए मंत्रालय विभाग सरकारी उपक्रम राष्ट्रीयकृत बैंक के शीर्ष नेतृत्व (माननीय मंत्री महोदय, सचिव, संयुक्त सचिव (राजभाषा), अध्यक्ष और महाप्रबंधक) की प्रतिबद्धता परम आवश्यक है। माननीय संसदीय राजभाषा समिति के सुझाव अनुसार और राजभाषा विभाग के अनुभव से यह पाया गया है कि जब शीर्ष नेतृत्व हिंदी के प्रगामी/उत्तरोत्तर ही नहीं, अपितु अधिकतम प्रयोग के लिए स्वयं मूल कार्य हिंदी में करते हैं तब उनके उदाहरणमय नेतृत्व (Exemplary Leadership) से पूरे मंत्रालय/विभाग/उपक्रम/बैंक को प्रेरणा और प्रोत्साहन मिलता है । जब वे हिंदी के कार्यान्वयन की निगरानी (Monitoring) करते हैं तब हिंदी की विकास यात्रा और तीव्र होती है जैसे कि गृह मंत्रालय और शिक्षा मंत्रालय में देखा गया है। अभी हाल में ही राजभाषा विभाग ने सबको पत्र लिखकर आग्रह किया है–

क) हर माह में एक बार सचिव/अध्यक्ष अपनी अध्यक्षता में जब वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक करते हैं तब इसमें हिंदी में काम–काज की प्रगति और राजभाषा नियमों के कार्यान्वयन का मद भी अवश्य रखें और चर्चा करें ।

ख) अपने मंत्रालय/विभाग/संस्थान में अपने संयुक्त सचिव (प्रशासन)/प्रशासनिक प्रमुख को ही हिंदी कार्यान्वयन का उत्तरदायित्व दें और हर तिमाही में उनकी अध्यक्षता में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति (OLIC) की बैठक करें।

12. प्रयास (Efforts)

राजभाषा कार्यान्वयन को प्रभावी रूप से सुनिश्चित करने की दिशा में यह अंतिम 'प्र' सबसे महत्वपूर्ण है। इसके अनुसार हमें लगातार यह प्रयास करते रहना है कि हिंदी का संवर्धन कैसे किया जाए। यहां कवि सोहन लाल द्विवेदी जी की पंक्तियाँ एकदम सटीक बैठती हैं कि –

"लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती
नन्ही चींटी जब दाना लेकर चलती है

चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती
डुबकियाँ सिंधु में गोताखोर लगाता है
जा जाकर खाली हाथ लौटकर आता है
मिलते नहीं सहज ही मोती गहरे पानी में
बढ़ता दुगना उत्साह इसी हैरानी में
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती
असफलता एक चुनौती है, स्वीकार करो
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो
जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम
संघर्ष का मैदान छोड़ मत भागो तुम
कुछ किए बिना ही जय जयकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।"

संवैधानिक दायित्वों को पूर्ण करते हुए राजभाषा हिंदी को और अधिक सरल बनाने के लिए राजभाषा विभाग दृढ़ संकल्प और निरंतर प्रयासरत है। विभाग सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (Information and Communication Technology) का भी आश्रय ले रहा है। विभाग का मानना है कि राजकीय प्रयोजनों में हिंदी की गति को तीव्र करने के लिए ये दोनों आवश्यक परिस्थितियाँ (Necessary Conditions) हैं। इस दिशा में और गति देने के लिए शीर्ष नेतृत्व की प्रतिबद्धता और प्रयास पर्याप्त परिस्थितियाँ (Sufficient Conditions) हैं।

संघ की राजभाषा नीति के अनुसार हमारा संवैधानिक दायित्व है कि हम राजभाषा संबंधित अनुदेशों का अनुपालन तत्परता और पूरी निष्ठा के साथ करें। हम स्वयं मूल कार्य हिंदी में करते हुए अन्य अधिकारियों/कर्मचारियों से भी राजभाषा अधिनियमों का अनुपालन सुनिश्चित कराएँ ताकि प्रशासन में पारदर्शिता आए और आमजन सभी सरकारी योजनाओं व कार्यक्रमों का लाभ निर्बाध रूप से उठा सके। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इन बारह 'प्र' को ध्यान में रखकर राजभाषा हिंदी का प्रभावी कार्यान्वयन करने की दिशा में सफलता प्राप्त होगी और हम मिलकर माननीय प्रधानमंत्री जी के 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत–सुदृढ़ आत्मनिर्भर भारत' के सपने को साकार करने में सफल होंगे ।

सचिव
राजभाषा विभाग,
गृह मंत्रालय,
भारत सरकार

भारत के संविधान के अनुच्छेद 343 में देवनागरी को भारत की राजभाषा हिंदी की आधिकारिक लिपि स्वीकार किया गया है। देवनागरी मात्र हिंदी की ही लिपि नहीं है, संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल संस्कृत, मराठी, डोगरी, बोडो, नेपाली, मैथिली आदि भाषाओं की आधिकारिक लिपि भी है। संथाली, कोंकणी तथा सिंधी के अतिरिक्त अपभ्रंश और प्राकृत भी नागरी में ही लिखी जाती हैं। भारत के संविधान निर्माता इतने नासमझ नहीं थे कि वे बिना सोचे-समझे नागरी लिपि को राज भाषा हिंदी की अधिकृत लिपि स्वीकार करते। जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।

–– डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से; अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से; प्रशिक्षण और प्राइज़ से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाए रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए; अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा-हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा! जय हिंदी!

उपलब्धि: भारतीय विदेश व्यापार संस्थान को AACSB से मान्यता प्राप्त

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान (IIFT) ने एएसीएसबी व्यावसायिक मान्यता (AACSB Business Accreditation) प्राप्त कर लिया है। 21 दिसंबर, 2021 को एमडीआई, गुरूग्राम में प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया।

1916 में स्थापित एएसीएसबी, बिजनेस स्कूलों के लिए सबसे लंबे समय से सेवारत वैश्विक मान्यता प्राप्त निकाय है, और दुनिया भर में शिक्षार्थियों, शिक्षकों और व्यवसायों को जोड़ने वाला सबसे बड़ा व्यावसायिक शिक्षा नेटवर्क है। एएसीएसबी मान्यता उन संस्थानों को प्रदान की जाती है, जिन्होंने शिक्षण, अनुसंधान, पाठ्यक्रम विकास और छात्र शिक्षा सहित सभी क्षेत्रों में उत्कृष्टता पर ध्यान केंद्रित किया है।

गुणवत्ता के उच्चतम मानकों का पर्याय, एएसीएसबी मान्यता विश्व स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा में नए अनुसंधानों को प्रेरित करती है। परिणामस्वरूप, व्यावसायिक डिग्री कार्यक्रम प्रदान करने वाले विश्व के 6 प्रतिशत से भी कम स्कूलों ने एएसीएसबी व्यावसायिक मान्यता प्राप्त की है। आज की स्थिति में देंखे तो 58 देशों एवं प्रदेशों में कुल 890 व्यावसायिक संस्थानों ने एएसीएसबी मान्यता प्राप्त की है, जिनमें से 17 भारत से हैं।

एएसीएसबी मान्यता निरंतर सुधार सुनिश्चित करती है और स्कूलों को अपने मिशन, नवाचार और प्रभाव को बढ़ाने के लिए ध्यान केंद्रित करती है। एएसीएसबी मान्यता प्राप्त स्कूलों ने यह सुनिश्चित करते हुए कि उनके पास छात्रों को प्रथम–दर, भविष्य–केंद्रित व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करने के लिए आवश्यक संसाधन, साख और प्रतिबद्धता है, व्यावसायिक शिक्षा समुदाय में अपने समकक्ष लोगों द्वारा आयोजित एक कठोर समीक्षा प्रक्रिया को सफलतापूर्वक पूरा किया है।

भारत सरकार के नीति आयोग के उपाध्यक्ष डॉ. राजीव कुमार ने एएसीएसबी इंटरनेशनल द्वारा प्रदत्त प्रत्यायन प्रमाण पत्र प्रदान किया।

एएसीएसबी पीआरटी वर्चुअल विजिट 6 से 9 सितंबर 2021 तक

आईआईएफटी ने वर्ष 2020–2021 में निम्नलिखित बिजनेस–स्कूल रैंकिंग में भाग लिया है और इस प्रकार रैंक प्राप्त किया:

1. नेशनल इंस्टीट्यूट रैंकिंग फ्रेमवर्क में 25वां (एनएईआरएफ2021)
2. बिजनेस टुडे–एमडीआरए में 10वां –
3. क्रॉनिकल्स ऑल इंडिया बी–स्कूल सर्वे में 6वां
4. बिजनेस वर्ल्ड– बी–स्कूल रैंकिंग में 7वां
5. आउटलुक–बी–स्कूल सर्वे में 15वां
6. एमबीए यूनिवर्स बी–स्कूल रैंकिंग में 11वां
7. इनसाइडआईआईएम एमबीए रैंकिंग में 10वां

पुस्तकालय- शिक्षण संस्थान का दिल

अमिता आनंद

सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष

मैं पुस्तकालय हूँ। पुस्तकालय– जहाँ विविध प्रकार का ज्ञान, सूचनाएँ, सेवाएँ और इन्हें प्रदान करने वाली सामग्री का संग्रह रहता है। चलिए आज आपको अपनी कहानी सुनाता हूँ।

मेरा इतिहास लेखन प्रणाली, पुस्तकों व दस्तावेजों का संरक्षण, व आवश्यकता अनुसार इन्हें पाठकों को उपलब्ध करवाने की पद्धती और प्रणाली से जुड़ा है। मेरे ही सहायता से वर्तमान भूत में झांक पाता है, जिसके सहारे भविष्य की ओर अग्रसर होता है। मैं दो शब्दों – पुस्तक और आलय – से मिल कर बना हूँ। शाब्दिक अर्थ के साथ–साथ पुस्तकालय पठन सामग्री का संकलन, संग्रहण व विकीर्णन (Dissemination) है। सही समय पर सही पाठक को सही सूचना उपलब्ध करवाना ही मेरा दायित्व है। यही कारण है कि पुस्तकों से भरी अलमारी अथवा पुस्तक विक्रेता के पास पुस्तकों का भंडार पुस्तकालय नहीं कहलाता।

मुझे राष्ट्रीय, सार्वजनिक, अनुसंधान, व्यावसायिक, शिक्षण संस्थान इत्यादि पुस्तकालय के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। मेरे प्रत्येक प्रकार के उप–प्रकार भी होते हैं। प्रत्येक प्रकार व उप–प्रकार का अपना–अपना क्षेत्र, उद्देश्य, कार्य, संग्रह व सेवाएँ भी अलग–अलग प्रकार की होती हैं।

सर साइरिल नरवूड ने कहा है 'किसी को कितनी उत्तम शिक्षा मिली है, इसका पता इससे नहीं लगाया जा सकता कि उसका पास किसी विश्वविद्यालय की उपाधि है या नहीं अपितु इस बात से लगाया जा सकता है कि उसे पुस्तकालय का उपयोग करना आता है या नहीं।'

सामाजिक व्यवस्था व तकनीकी विकास के साथ–साथ मेरा रूप भी परिवर्तित होता रहा। आज का युग कंप्यूटर व इंटरनेट का है। पुस्तकालय भी नवीन उपकरण व तकनीकों तथा ई–बुक्स, ई–जर्नल, ई–डाटाबेस के माध्यम से समाज के साथ कंधे से कंधा मिला अपने उद्देश्यपूर्ति में संलग्न है। आज के समय में मेरे रूप में डिजिटल और ई–पुस्तकालय भी सम्मिलित हो गए हैं। यह एक इलेक्ट्रॉनिक या ऑनलाइन पुस्तकालय है, जहां कोई भी व्यक्ति इंटरनेट पर पुस्तकों, पत्रिकाओं, उपन्यासों, लेखों या किसी अन्य जानकारी तक पहुंच प्राप्त कर सकता है। आजकल तो सामान्य पाठक या शोधार्थी के पास घर बैठे ही कई ई–पुस्तकालयों तक पहुंच सकती है।

आप कहेंगे कि आजकल पुस्तकालय का काम तो गूगल ही कर देता है। उसमें अनेकों सूचनाएं, पुस्तकें एवं विषय सम्बंधित सामग्री/आंकड़े उपलब्ध रहते हैं। ठीक है। लेकिन फिर भी गूगल एक इंटरनेट खोज इंजन (Internet Search Engines) ही है। गूगल को ई–पुस्तकालय नहीं माना जा सकता, क्योंकि इंटरनेट खोज इंजन आपके कीवर्ड के लिए सेकंडों में अरबों सार्वजनिक वेब पेज खोज सकते हैं, लेकिन आपको प्रमाणिक सूचना व सामग्री प्रदान नहीं कर सकता। विद्वत्तापूर्ण (Scholarly) संसाधनों वाले डेटाबेस तक पहुँचाने के लिए पुस्तकालय ही प्रमाणिक स्त्रोत है। क्योंकि विद्वत्तापूर्ण संसाधनों वाले डेटाबेस उपलब्ध करवाने के लिए पुस्तकालय सेवाप्रदाता अथवा निर्माताओं को भुगतान करता है। अगर हस्तलिखित ग्रंथों को बिना व्यवस्था और सुरक्षा के रखने की अनुमति दे दी जाती तो हमारे सभ्यता के लिखित अभिलेख नष्ट हो गए होते और हम अपने स्वर्णिम इतिहास से अनभिज्ञ ही होते।

पुस्तकालय का स्वरूप पूर्णतः प्रजातांत्रिक है। पुस्तकालय विज्ञान इसके 5 सूत्रों पर बल देता है। पुस्तकें उपयोग के लिए हैं (Books are for use); प्रत्येक पाठक को उसकी पुस्तक मिले (Every Reader His/ Her Book); प्रत्येक

पाठक को उसकी पुस्तक मिले (Every Reader His/ Her Book); प्रत्येक पुस्तक को उसका पाठक मिले (Every Book its Reader); पाठकों का समय बचाएं (Save The Time of Reader); पुस्तकालय एक वर्धनशील (बढ़ती हुई) संस्था है (Library is a growing organism) | पुस्तकालय व पुस्तकालय विज्ञान के समस्त कार्यकलाप इन पाँचों नियमों का पालन करने के इर्द–गिर्द घूमते हैं।

क्रियाशीलता विकास की निशानी है और निष्क्रियता उसकी मृत्यु को इंगित करती है। इस दृष्टि से पुस्तकालय अपने पांचवें सिद्धांत 'पुस्तकालय एक वर्धनशील संस्था है' इसे सिद्ध करता है। समय के साथ पुस्तकालय का संग्रह, पाठक, इत्यादि बढ़ते रहते हैं। इसी प्रकार पुस्तकालय का आकार निरंतर बढ़ता है साथ में नई–नई तकनीकों को आत्मसात करता जाता है।

भारतीय विदेश व्यापार पुस्तकालय, संस्थान की स्थापना के समय 1963 में ही स्थापित हुआ था। संस्थान की स्थापना के पीछे विदेश व्यापार प्रबंधन को व्यावसायिक रूप देने का उद्देश्य था। इसके अलावा मानवीय संसाधनों के विकास, आंकड़ों के संकलन, विश्लेषण व वितरण व अनुसंधान के माध्यम से निर्यात को बढ़ावा देना था। अतः मेरा उद्देश्य संस्थान को उद्देश्य पूर्ती व विद्यार्थियों के लिए अंतराष्ट्रीय व्यवसाय के क्षेत्र में प्रशिक्षण को पठनीय संसाधनों के माध्यम से सहायता प्रदान करना रहा। उस समय में मुझे अनुसंधान व शिक्षण संस्थान पुस्तकालय के रूप में विकसित किया गया और मैं उद्योग, शोध छात्र एवं प्रबंधन छात्रों के लिए महत्वपूर्ण संदर्भ स्थान होने के साथ–साथ एफएओ (FAO), आईएमएफ (IMF), ओईसीडी (OECD), अंकटाड (UNCTAD), विश्व बैंक (World Bank) और अन्य अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के प्रकाशनों का संग्रह व विकीर्णन (Dissemination) केंद्र बना। धीरे–धीरे जैसे–जैसे संस्थान का विकास होता गया, मेरे रूप में भी परिवर्तन आता गया। संस्थान को 2002 में 'मानित विश्वविद्यालय' का दर्जा दिया गया। तब भी मेरे स्वरूप में भी बदलाव आया। आज इंटरनेट के युग में भी मेरे रूप में परिवर्तन हो रहा है। मेरे संग्रह में डिजिटल संसाधनों का विकास हुआ है। प्रिंटेड पुस्तकों के साथ कंप्यूटर टर्मिनलों की संख्या भी बढ़ रही है।

अपने संग्रह व रूप में बदलाव के साथ साथ मेरे और पाठकों के लिए पुल, या परदे के पीछे काम करने वालों के बारे में कुछ न कहना ज्यादती होगी। जिस प्रकार सिनेमा बनने की प्रक्रिया में बहुत सारे चरण व कार्य होते हैं, उसी प्रकार मेरे संग्रह को पाठकों तक पहुचाने के लिए भी अनेक चरणों व प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ता है। पुस्तकालय के सुव्यवस्थित संचालन हेतु प्रशिक्षित पुस्तकालय कर्मियों का होना अतिआवश्यक होता है। पुस्तकालय की रीढ़ कर्मी पुस्तकों/पत्र पत्रिकाओं एवं ई–संसाधनों को वर्गीकृत करके अभिलेख रखता है, पाठकों/विद्यार्थियों और संकाय सदस्यों को उनकी रूचि और आवश्यकतानुसार तथा उपयोगिता के आधार पर उनके लिए पठन सामग्री चुनने में सहायता करता है, पुस्तकों/पत्र पत्रिकाओं को अलमारियों में विषयानुसार रखने एवं पुस्तकालय के नियमों का पालन करवाने का कार्य भी इन्हीं के द्वारा किया जाता है।

भारत की सब प्रांतीय बोलियां, जिनमें सुंदर साहित्य की सृष्टि हुई है, अपने घर में रानी बनकर रहें। प्रांत के जनगण की हार्दिक चिंता की प्रकाशभूमि स्वरूप कविता की भाषा होकर रहे और आधुनिक भाषाओं के हार की मध्यमणि हिंदी भारत-भारती हो कर विराजती रहे।

-विश्व कवि रवीन्द्रनाथठाकुर

वायरल होती दुनिया

अतुल
नेटवर्क प्रबंधक

अपने मन की बात दूसरों से बांटना, इन्सान के सहज स्वाभाव का हिस्सा है। उसका यही स्वाभाव उसे समाज से जोड़ता है और सामाजिक प्राणी बनता है। कोई भी व्यक्ति अपनी भावनाओं को सिर्फ परिवार में ही नहीं, बल्कि उसके बाहर भी साझा करता है। एक जमाने से बैठकी, गप्पबाजी और चिट्ठी–पत्री के जरिये हम अपनी भावनाओं को एक दूसरे तक पहुंचाते रहे हैं । फिर एक ऐसा दौर आया जब हम पत्र पत्रिकाओं तथा टेलीफोन के माध्यम से ये काम करते रहे। ये तरीके आज भी मौजूद हैं पर इनका चलन धीरे–धीरे कम होता जा रहा है। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि पिछले दो दशकों में दुनिया बहुत तेजी से बदली है। इस बदलाव ने हमें एक से एक नायब तोहफे दिए हैं। मोबाइल फोन, कंप्यूटर से लेकर इंटरनेट और सोशल मीडिया के रूप में 'फेसबुक', 'ट्वीटर', 'व्हाट्सएप', 'इन्स्टाग्राम', 'लिंक्डइन', 'ब्लॉग', 'युट्यूब', और 'जूम'– जैसे अचंभे में डालने वाले आभासी दोस्त। हैरानी होती है देखकर कि इन सब ने किस तरह से हमारे पूरे जीवन को बदल कर रख दिया है। कई बार तो ऐसा लगता है की हम इन्हें नहीं, ये हमारा इस्तेमाल कर रहे हैं । जब, जहां और जैसे चाहे !

बहुत दिलचस्प बात है कि हम इसके मार्फत अपने से सैंकड़ों मील दूर मौजूद लोगों को तो 'लाइक' और 'शेयर' करते हैं, लेकिन बगल में रहने वाले अपने पडोसी की मौजूदगी को 'लाइक' नहीं करते। उसके दुःख दर्द और अकेलेपन को 'शेयर' नहीं करते। 'सेल्फी' में नकली मुस्कुराहटों को तो कैद करते हैं, लेकिन किसी के होठों पर असली मुस्कराहट लाने की जहमत नहीं उठाते । एक तरफ हमारी दुनिया तो बड़ी होती जा रही है, लेकिन दूसरी तरफ हम अपने आप में ही सिमटे जा रहे हैं।

लेकिन ये तस्वीर का एक पहलू है। दूसरा पहलू है कि इसने हमे पहले की तुलना में सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनितिक रूप से ज्यादा जागरूक किया है। ऐसी अनेक घटनाएं हैं जब मुसीबत में फंसे व्यक्ति या फिर प्राकृतिक आपदा में फंसे लोगों को बचाने में सोशल मीडिया ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कई सामाजिक और राजनितिक आंदोलनों को नई दिशा दी है।

सबसे जरूरी बात यह है की हमें यह समझना होगा की इसके अच्छे और बुरे पक्ष दोनों ही है। और इसके लिए भी यह जिम्मेदार नहीं है, बल्कि हम हैं। एक तरफ, यह समाज में जागरूकता फैला रहा है। दुनिया की आधी आबादी को मुखर आवाज दे रहा है। यह तरह तरह से रचनात्मक प्रयोगों का साक्षी बन रहा है। नए लेखक और नई भाषा गढ़ रहा है । सिर्फ यही क्यों, रोजगार के नए तरीके भी इजाद कर रहा है । और तो और आजादी की नई इबारत भी इसपर ही लिखी जा रही है। लेकिन, दूसरी तरफ इस पर आपराधिक दुनिया अपने मंसूबे भी पूरे कर रही है। आपसी मतभेद और टकराहट का चरम भी इसी पर मौजूद है। अफवाहों, ट्रोल और फेक न्यूज का बाजार भी यहाँ बेहद गर्म है। दरअसल इसकी असीमित ताकत ही इसकी कमजोरी है। हमें इसे समझना होगा। इसकी अच्छाइयों के साथ इसका इस्तेमाल करना सीखना होगा, ताकि वायरल होती इस दुनिया में 'सोशल मीडिया' वाकई में 'सोशल' रह सके।

> **यदि भारतीय लोग बल, संस्कृति और राजनीति में एक रहना चाहते हैं, तो इसका माध्यम हिंदी ही हो सकती है।**
>
> **-चक्रवर्ती राजगोपालाचारी**

‘‘एक (अ) सफलता की कहानी’’

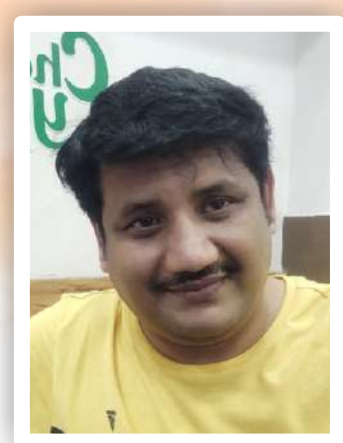

एस बालासुब्रमण्यम
सहायक सिस्टम प्रबंधक

मैं अपना सिर नीचा और मुर्झाया हुआ चेहरा लेकर इंटरव्यू रूम से बाहर निकला।

असफलता सब से भयावह शब्द है। यह आपके लिए बहुत कुछ करता है। यह आपको झकझोर देता है। यह आपको डराता है। यह आपको सुन्न और ठंडा छोड़ देता है। आप में से कितने लोग असफल होना चाहते हैं? शायद कोई नहीं। स्कूल, कॉलेज और यूनिवर्सिटी में टॉपर और लगातार अच्छा प्रदर्शन करने के कारण मैं कभी भी किसी भी परीक्षा में फेल नहीं हुआ। वास्तव में मैंने कभी भी 60 से कम अंक प्राप्त नहीं किए। लेकिन मैं उस खास दिन दुनिया के दूसरे ध्रुव पर था, क्योंकि मैं एक परीक्षा में फेल होना चाहता था! हाँ उस खास दिन! 12 अक्टूबर 2003। हाँ, मैं आज असफल होने जा रहा हूँ!

अपनी आँखों पर विश्वास कीजिए, आपने सही पढ़ा! मैं उस परीक्षा में पास नहीं होना चाहता था। यह हमारे देश के प्रीमियम बी–स्कूलों में से एक में कंप्यूटर प्रोग्रामर के पद के लिए एक लिखित परीक्षा थी। वजह बहुत मामूली थी। मैं अपने गृहनगर और सबसे महत्वपूर्ण अपने माता–पिता को नहीं छोड़ना चाहता था। मैं तब कितना भावुक और अपनों से जुड़ा हुआ लड़का था! लेकिन मेरे माता–पिता ने मुझे इस बात से अनजान होकर लिखित परीक्षा में शामिल होने के लिए मजबूर किया कि यह उनकी सबसे बड़ी गलती होगी। मेरे पास उन्हें संतुष्ट करने के लिए नई दिल्ली जाने के अलावा और कोई विकल्प नहीं था।

यह राजधानी की मेरी पहली यात्रा थी। मैं तब हिंदी जानता था, मगर शायद हिंदी ने मुझे ठीक से नहीं जाना था। मैं पूसा रोड में एक छात्रावास (प्रतिदिन 100 रुपये!) में रुका हुआ था हुआ। किताबी हिंदी के साथ, मैं गंतव्य तक पहुंचने के लिए एक ऑटो रिक्शा किराए पर ले सका था। बल्कि मैं कहूंगा कि नियति तक पहुंचने के लिए मैंने ऑटो रिक्शा किराए पर लिया! वहां मैंने सैकड़ों उम्मीदवारों को फाइलों और फोल्डरों के साथ देखा। मैंने बहुत सारे उम्मीदवारों को देखा, अध्ययनशील और बहुत ही शानदार!

अधिकांश उम्मीदवार परीक्षा की तैयारी कर रहे थे और कुछ आईटी रुझानों के बारे में चर्चा कर रहे थे। 10 बजे परीक्षा शुरू हुई और “अपरिहार्य विफलता” के विश्वास के साथ, मैंने प्रश्न पत्र खोला। कुल 75 बहुविकल्पीय प्रश्न थे। यह कठिन पेपर नहीं था और मैंने सोचा कि अगर यह मेरे लिए कठिन नहीं है तो निश्चित रूप से यह किसी के लिए भी कठिन नहीं होगा। मैंने परीक्षण में जल्दबाजी नहीं की, लेकिन मैंने निर्धारित समय से पहले अच्छी तरह से समाप्त कर लिया और अपने पसंदीदा गायक एस.पी. बाला के कुछ हिंदी गीतों को गुनगुनाना शुरू कर दिया। अनजाने में मैं उत्तर भारतीय की तरह लगने लगा!

“आजा शाम होने आई!”

परीक्षण के बाद, उन्होंने घोषणा की कि परिणाम अगले दिन जारी किया जाएगा और इसके बाद शॉर्टलिस्ट किए गए उम्मीदवारों को अंतिम साक्षात्कार के लिए बुलाया जाएगा। मुझे परवाह नहीं थी और मैंने 13 अक्टूबर को स्थानीय दर्शनीय स्थलों की यात्रा के लिए और 14 अक्टूबर को आगरा की यात्रा के लिए टिकट बुक किया! मैं विशेष रूप से, आगरा जाने के लिए बहुत उत्साहित था।

अगले दिन कुतुब मीनार से राजघाट तक दिल्ली के

ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण करने के बाद अपना परिणाम जानने के लिए मैंने सार्वजनिक टेलीफोन से प्रशासनिक अधिकारी को फोन किया। मोबाइल फोन के शुरुआती दिन थे और न तो मैं और न ही मेरे माता–पिता इतने समृद्ध थे कि एक सस्ता "501 मोबाइल" भी खरीद सकते थे! (दुनिया को मुट्ठी में लेना नहीं जानता था!) प्रशासनिक अधिकारी ने अपनी अनूठी आवाज के साथ मेरे परिणाम की घोषणा की– "बधाई हो! मेरे प्यारे दोस्त तुम्हारा चयन हो गया और कल तुम्हारा अंतिम साक्षात्कार है।

पहली बार मैं "बधाई" शब्द सुनकर चौंक गया था।

अगले दिन, मैंने, एक सिंहासनच्युत राजा की तरह, ताज यात्रा को रद्द कर दिया, ताकि मेरे जीवन के सबसे अवांछित साक्षात्कार में भाग लिया जा सके। पंद्रह उम्मीदवार थे और मैं सूची में तीसरे स्थान पर था। जब मेरी बारी आई तो मैंने साक्षात्कार कक्ष में प्रवेश किया और छह मध्यम आयु वर्ग के विद्वान साक्षात्कारकर्ताओं को देखा। उन्होंने मुझसे एनकैप्सुलेशन, इंडेक्सिंग, सी और सी. के बीच अंतर जैसी चीजें पूछीं। अंत में साक्षात्कारकर्ताओं में से एक ने मुझसे सबसे अधिक उपयोग किया जाने वाला साक्षात्कार प्रश्न पूछा– आप आईआईएफटी में कब शामिल होना चाहेंगे?

मन ही मन मैंने उन्हें उत्तर दिया कि मैं शामिल नहीं होना चाहता, लेकिन मैंने मुंह से उत्तर दिया– सर मुझे 3 महीने की नोटिस अवधि चाहिए!

मैं अपना सिर नीचा और मुर्झाया हुआ चेहरा लेकर इंटरव्यू रूम से बाहर निकला। मेरी दयनीय दशा देखकर अन्य अभ्यर्थी चिंता से मुझसे पूछने लगे–

क्या हुआ? इंटरव्यू अच्छा नहीं गया ?

मैंने उत्तर दिया :

नहीं! अच्छा गया !

बौद्ध दर्शन की मूल्य मीमांसा

चंदा रानी
पूर्व हिंदी अधिकारी

बौद्ध दर्शन नैतिकता पर सर्वाधिक बल देता है और नैतिकता के माध्यम से व्यक्ति के अंदर तथा समाज के मूल्यों की स्थापना करना चाहता है। बौद्ध दर्शन के अनुसार अणुओं से निर्मित इस संसार में चेतना प्रमुख है।

बौद्ध दर्शन अवैदिक, अनात्मवादी एवं अनीश्वरवादी होते हुए भी नैतिकतावादी, तर्कवादी एवं आदर्शवादी है। आत्माक्षण – क्षण परिवर्तित चेतना की अविरल धारा है। प्रत्यक्ष एवं अनुमान को ज्ञान की साधना मानते हुए बौद्ध दार्शनिक अनुभावात्मक ज्ञान को अवश्य बताते हैं और प्रत्येक अनुभव को विवेक की कसौटी पर रखते हैं। वे तर्कबुद्धि को प्राथमिकता देते हैं। शारीरिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों को बौद्ध महत्वपूर्ण मानते हैं। भगवान ने जिस पवित्रता, सदाचार के आधार पर अपने सिद्धांतों का प्रचार प्रसार किया और जिस सफलता से भगवान विश्व में महान गुरु, शांति गुरु, महान उपदेशक के रूप में हो गए, उसकी आचार पालन की आज्ञाएं भी उतनी ही महान थीं, भगवान ने भिक्षुओं एवं गृहस्थों के 'पंचशील' सिद्धांत की स्थापना की–

क. प्राणातिपात विरति : जीव हत्या नहीं करें।

ख. अदत्ता दान–विरति : आधे वस्तु ग्रहण न करें।

ग. मृषावाद–विरति : असत्य वचन न करें।

घ. सुरा–मैरेय–प्रमाद–स्था–विरति : मद्यापान न करें।

ङ. काम–मिथ्याचार– विरति : व्यभिचार न करें। भगवान ने कट्टर धार्मिक के लिए अधोलिखित तीन नियमों का पालन करना परमावश्यक कहा।

च. अकाल–भोजन–विरति : असमय भोजन का त्याग करें।

दृ माल्य–गंध–विलोपन विरति : सुगंधित पदार्थ का त्याग करें।

ज. उच्चासन शयन–विरति : भूमि पर शयन करें।

भगवान ने भिक्षुकों के लिए उक्त उपदेशों के अतिरिक्त निम्नलिखित दो अन्य नियमों का पालन करना आवश्यक बताया है–

झ. नृत्यगीत–वादित–विरति : नृत्य संगीत का त्याग।

ञ. जातरूप–रजत–प्रतिगृह विरति : सोना – चांदी का त्याग।

अतएव, भिक्षुकों के लिए दयाशील का पालन करना परमावश्यक है,, परंतु गृहस्थों के लिए 'पंचशील' का पालन करना आवश्यक बताया है। भगवान ने इंद्रीय संयम को परमावश्यक कहा है। भगवान कहते हैं कि जिनके इंद्रीय द्वारा अगुप्त हैं, जो भोजन की मात्रा का विचार नहीं करता है, उसकी आत्मा तथा शरीर दोनों कष्ट पाते हैं। संप्रजन्य एवं स्मृति से आत्मरक्षा होती है, ये दोनों द्वारपाल की भांति चित्त की गलत कर्मों से रक्षा करते हैं। भगवान ने तीन और अकुशल वितर्क बताएं हैं–काम, व्यापाद और विहिंसा। इनका परित्याग करना चाहिए। तीन कुशल वितर्कों का नैष्क्रम्य, अव्यापाद और अविहिंसा का संग्रह करना चाहिए। भगवान ने उपदेश दिया कि "अक्रोध से क्रोध को जीतो, साधुता से असाधु को जीतो, कदर्य को दान से और मृषावादी को सत्य से जीतो।" भगवान ने महामंगल सुत्त में कहा है कि माता–पिता की सेवा, दान, अनवद्यकर्म एवं धर्मचर्चा ये उत्तम मंगल हैं। ब्रह्मचर्य, तप, आर्य सत्यों का दर्शन निर्वाण का साक्षात्कार ये उत्तम मंगल है। भगवान ने राग, द्वेष, मोह को अकुशल मूल कहा है। इनका प्रहाण होना चाहिए, क्योंकि राग के समान कोई अग्नि नहीं है, द्वेष के समान कोई कलि नहीं है। आचार संबंधी महत्वपूर्ण नियमों का उल्लेख हमें 'सिंगालोवाद सूत्र' में किया गया है। इस ग्रंथ से तत्कालीन सामाजिक जीवन के आदर्श का यथार्थ ज्ञान प्राप्त होता है। अपने बच्चों को धार्मिक शिक्षा और सांसारिक सुख देने के लिए माता–पिता की उत्सुक भावना, माता–पिता का पालन करने, उनका सत्कार करने एवं मृत्यु के उपरांत आदरपूर्वक उनका स्मरण करने के लिए पुत्र की भक्तिपूर्ण अभिलाषा, शिष्य का अपने गुरु के प्रति सत्कार का व्यवहार और गुरु की शिष्य के लिए चिंता तथा प्रेम, पति का अपनी पत्नी के साथ सत्काम, दया, मान और प्रीति के साथ व्यवहार, पत्नी का गृहस्थी के कार्यों में सावधान रहना, स्वामी–नौकर में, गृहस्थों–धार्मिकों एवं मित्रों के मध्य जो दया का भाव रखने का जो उपदेश या शिक्षाएं दी गई हैं, वह सर्वोत्तम शिक्षाएं हैं, इन्हीं नियमों तथा सर्वोत्तम जन सुलभ शिक्षाओं के कारण तत्कालीन समाज में बौद्ध धर्म आध्यात्मिक, सामाजिक तथा नैतिक मूल्यों की स्थापना करने में समर्थ हुआ। भगवान ने उपासक को धर्म–श्रवण का उपदेश दिया, उपवास–व्रत रखना चाहिए, भिक्षुओं को दान देने का उपदेश दिया तथा चार तीर्थों कपिलवस्तु, बोधगया, सारनाथ तथा कुशीनगर की यात्रा करने का उपदेश दिया।

भगवान ने भिक्षुओं को उपदेश दिया कि तृष्णा का विनाश किए बिना दुःख का अत्यंत निरोध नहीं होता, तृष्णा का विनाश करने से विशुद्धि होती है, इस विशुद्धि के अधिगम का उपाय बताते हुए 'संयुक्त–निकाय' में भगवान ने कहा–" जो मनुष्य शील में प्रतिष्ठित है, समाधि और प्रज्ञा की भावना करता है,वह प्रभावान और वीर्यवानभिक्षु इस तृष्णा जटा का नाश करता है।"

भगवान कहते हैं कि सर्वपाप से विरित ही शील है, जब योगी प्रज्ञा से देखता है कि संस्कार अनित्य तथा दुःख है, सर्वधर्म अनात्म है, तब दुख का निरोध होता है। प्रज्ञाशील तथा समाधि को बौद्धो ने 'शिक्षात्रय' कहा है। यह बौद्ध धर्म दर्शन का मूलाधार है तथा यही विशुद्धि का भी मार्ग है। जो भिक्षु शिक्षापदों की रक्षा करता है, जो आचार–गोचर संपन्न है अर्थात जो मनसा, वाचा तथा कर्मणा अनाचार नहीं करता है और योग क्षेम चाहने वाले कुलों का आसेवन करता है, जिसकी इंद्रियां संवृत्त है जो अजीव के लिए पाप धर्मों का आश्रय नहीं लेता अर्थात जिसका अजीव परिशुद्ध है, जो परिष्कारों का उपयोग परियोजनानुसार करता है, जो शीतोष्ण से शरीर रक्षा के लिए और लज्जा के लिए वस्त्र धारण करता है, जो भिक्षु शरीर की स्थिति के लिए आहार करता है, उस भिक्षु का शील परिपूर्ण माना गया है, इस प्रकार शील संपन्न होकर ही समाधि की भावना करनी चाहिए। शील संपन्न सुभावित चित्त में राग को अवकाश नहीं मिलता है। भगवान हमें आंतरिक द्वंद में से, जो मानव का एक विशिष्ट लक्षण है, निकालने का मार्गदर्शन देते हैं।

भगवान के उपदेशों का लक्ष्य दुःख से छुटकारा पाना है। नैतिक जीवन का उद्देश्य इस विस्तृत असाधु जीवन से बच निकलना है। बुद्ध के अनुसार अपने आपको विनष्ट करना ही मोक्ष है। भगवान ने निर्वाण को उच्चतम लक्ष्य कहा और उपदेश दिया कि आचरण की ऐसी सब विधियां जो हमें निश्चित रूप में निर्वाण की ओर ले जाती हैं, शुभ हैं और उनके विपरीत सभी कर्म अशुभ हैं अर्थात शुभ कर्म वे हैं जो वासनाओं, इच्छाओं एवं अहं की भ्रांत भावनाओं के ऊपर हमें विजय प्राप्त करने का मार्गदर्शन करते हैं, जबकि अशुभ कर्म वे हैं, जो हमें दुःखदायी दंडभोग की ओर ले जाते हैं, जबकि अशुभ कर्म स्वार्थपरता को जन्म देते हैं। इस प्रकार भगवान के उपदेशों में लोकमंगल की भावना के सर्वत्र दर्शन होते हैं। वस्तुतः भगवान के इसी पवित्र संकल्प ने बौद्ध दर्शन को सर्वव्यापी एवं सर्वग्राह्य बनाया है।

व्यावसायिक शिक्षाः पढ़ाना बंद करें, प्रबंधकों को सीखने दें

डॉ. आर. पी. शर्मा
प्रोफेसर

शिक्षकों को व्याख्यान देने की बुरी आदत होती है। पढ़ाने की क्रिया उल्टी करने के समान है। सब कुछ सिखाया नहीं जा सकता। पढ़ाए जाने और सीखने में काफी अंतर होता है। पढ़ाया जाना प्रतिभागी के लिए एक निष्क्रिय गतिविधि है, जबकि सीखने में प्रतिभागियों की सक्रिय भागीदारी की आवश्यकता होती है। प्रबंधन कार्यक्रमों में, मुख्य रूप से कार्यरत प्रबंधकों की शिक्षा में शिक्षकों को पढ़ाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, बल्कि उन्हें सीखने के लिए अवसर प्रदान करने चाहिए।

एक अच्छे शिक्षक को कक्षा में शिक्षार्थी की मानसिकता के साथ जाना चाहिए। यह कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि प्रत्येक विद्यार्थी पढ़ा सकता है, और प्रत्येक शिक्षक सीख सकता है। महामारी के दौरान, दुनिया ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म पर चली गई। जब शिक्षक स्क्रीन पर बोलते थे, तो विद्यार्थी केवल ऊब जाने की ही उम्मीद कर सकते हैं।

एल्विन टॉफलर ने सटीक तौर से यह कहा है कि '21वीं सदी के निरक्षर वे नहीं हैं, जो पढ़–लिख नहीं सकते, बल्कि वे हैं जो अपनी जानकारी को भूल नहीं सकते, और फिर से कुछ नया सीख नहीं सकते हैं।' आज, सीखने की तुलना में भूलना अधिक महत्वपूर्ण है। समस्या यह नहीं है कि नए विचारों को दिमाग में कैसे लाया जाए, बल्कि पुराने विचारों को बाहर कैसे निकाला जाए।

पेशेवरों को शिक्षित करना

बी–स्कूलों को अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए प्रतिभागियों की तैयारी विकसित करनी चाहिए। प्रबंधन शिक्षा में किसी स्थिति की गंभीरता का विश्लेषण करने, समस्या की पहचान करने और समाधान विकसित करने से पहले उद्देश्यों को परिभाषित करने के लिए छात्रों को चुनौती दी जानी चाहिए।

पाठ्यक्रम संरचना और सामग्री भविष्य के प्रबंधकों को समुचित दक्षता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जब महामारी ने सब कुछ बदल दिया है, तो शिक्षकों को अपने शोध और अध्यापन में इस प्रभाव को संबोधित करने की आवश्यकता है।

बचपन से ही मानव मस्तिष्क को विशिष्ट रूप से तलाशने, सीखने और व्यक्त करने के लिए प्रोग्राम किया जाता है। स्कूल कई महत्वपूर्ण कौशल जैसे सुनना, कैसे बनाएं। ऐसे उदाहरण हैं जब शिक्षा शिक्षितों को असहाय बना देती है। बहुत से शिक्षित लोगों में सामान्य ज्ञान की बुरी तरह कमी होती है। कई बार हमारी शिक्षा प्रणाली बुद्धिमान इनपुट (बच्चों) को शिक्षा कारखाने के अबेचना, और महत्वपूर्ण विश्लेषण करना आदि नहीं सिखाते हैं। स्कूल शायद ही सिखाते हैं कि व्यवसाय कैसे शुरू करें, नकारात्मक भावनाओं और असफलताओं का सामना कैसे करें, समय का प्रबंधन कैसे करें और देखभाल करने वाले आउटपुट के रूप में गूंगा बनाने के लिए जिम्मेदार होती है। अलेक्जेंड्रे डुमास ने आश्चर्य से पूछा, "ऐसा कैसे होता है कि छोटे बच्चे इतने बुद्धिमान और वयस्क इतने मूर्ख होते हैं? यह शिक्षा ही होनी चाहिए जो ऐसा करती है।"

कौशल्य कैसे सीखा जाता है?

अमेरिकी राष्ट्रपति बनने के बाद भी अब्राहम लिंकन ने एक पत्रकार से कहा कि अगर उन्हें वापस स्कूल जाने का मौका मिले तो वे बोलने और लिखने में महारथ हासिल करना चाहेंगे। बेचने और नेतृत्व जैसे कौशल को भी पढ़ाने के बजाय सीखने की जरूरत है। फ्रैंक बेटगर (मैंने खुद को बेचने में असफलता से सफलता के लिए कैसे उठाया के लेखक) और जिग जिगलर ने अभ्यास के द्वारा दक्षता हासिल की। हेनरी मिंटजबर्ग ने अपनी पथ–प्रदर्शक पुस्तक 'प्रबंधक, पर एमबीए नहीं' में इस बात पर प्रकाश डाला कि उद्योग पेशेवर कौशल

की तलाश करता है, न कि केवल शैक्षणिक डिग्री की। किसी भी पेशेवर के लिए आवश्यक शर्तें हैं –सही मानसिक दृष्टिकोण, दक्षता और कौशल और विषय का ज्ञान। बेशक, उसी क्रम में। सीखने की प्रक्रिया एक अचेतन–अक्षम अवस्था से एक सचेत–अक्षम अवस्था से एक सचेत–सक्षम और अंत में अचेतन–सक्षम अवस्था में संक्रमण करती है। मस्तिष्क एक पैराशूट की तरह है। इसे खुला रखकर ही हम इसे विकसित करते हैं। कन्फ्यूशियस ने कहा – मैं सुनता हूं, मैं भूल जाता हूं, मैं देखता हूं, मुझे याद रहता है, मैं करता हूं, तो मैं समझता हूं।

प्रश्नों की शक्ति

आज फैकल्टी की भूमिका किसी को कुछ सिखाने की नहीं, बल्कि प्रश्न पूछकर सोचने पर मजबूर करने की है। प्रश्न हमें जानकारी एकत्र करने, संबंध बनाने और कक्षा में विद्यार्थियों के बीच संबंध बनाने में मदद करते हैं। अन्य व्यवसायों की तरह जैसे कानून, चिकित्सा और परामर्श, सहभागियों से प्रश्न पूछने वाले सूत्रधार यह संदेश देंगे कि वे अपने साथियों की तुलना में अधिक सक्षम हैं। प्रश्न प्रभावी होते हैं, क्योंकि वे उत्तर से अधिक महत्वपूर्ण होते हैं।

पाठ्यक्रम डिजाइन

पाठ्यचर्या डिजाइन और संरचना शक्तिशाली शिक्षण प्रदान करने के लिए इसकी एक महत्वपूर्ण भूमिका है। पाठ्यक्रम के डिजाइन को अच्छी तरह से निर्धारित सीखने के लक्ष्य, सहकर्मी और प्रतिभागी स्व–मूल्यांकन, और एक सत्र कवरेज योजना सुनिश्चित करनी चाहिए। प्री–सेशन और पोस्ट–सेशन रीडिंग, असाइनमेंट और इंटरनेट एक्सरसाइज को कोर्स डिलीवरी में असाइन करने से शिक्षार्थी जुड़ेंगे। जब सीखने और सिखाने में लगातार सुधार होता है, तो सब कुछ सुधर जाता है।

जहां पाठ्यक्रम गुणवत्तापूर्ण सामग्री वाला होता है, वहीं सीखाने की कला सीखने को सुनिश्चित करती है। इसमें शिक्षक और शिक्षार्थियों के बीच सार्थक बातचीत शामिल है। प्रबंधन कार्यक्रमों में, जो विविध पृष्ठभूमि के प्रतिभागियों को स्वीकार करते हैं, एक अध्यापक को उन्हें अपने पूर्व ज्ञान पर नवनिर्माण करने, एक–दूसरे से सीखने और कौशल और दृष्टिकोण विकसित करने में मदद करनी चाहिए। मामले के विश्लेषण और चर्चा से महत्वपूर्ण सोच, विचार–मंथन, विशिष्ट मानदंडों पर विकल्पों का मूल्यांकन और निर्णय लेने का विकास होता है। सही या गलत निर्णय जैसा कुछ नहीं होता, केवल परिणाम होता है।

संचार, बातचीत, और अन्य अनुभवात्मक अभ्यास जैसे पाठ्यक्रमों को प्रतिभागी–केंद्रित सीखने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। डिस्कवरी लर्निंग तब होती है, जब एक शिक्षक अधिक प्रश्न पूछता है। सेवा विपणन जैसे पाठ्यक्रम में लघु वीडियो का उपयोग ग्राहकों के साथ अतिथि के रूप में व्यवहार करने या सेवा संगठनों के केस वीडियो जैसी घटना को चित्रित करने के काम आता है। वीडियो एक बिंदु को खूबसूरती से चित्रित करते हैं। प्रतिभागियों से नियमित अनौपचारिक प्रतिक्रिया गतिशील रूप से पाठ्यक्रम सुधार में मदद कर सकती है।

समस्या समाधान और निर्णय लेना

विद्यार्थी एक मार्केटिंग पाठ्यक्रम में एक उद्यमशीलता विपणन स्थिति के साथ महत्वपूर्ण निर्णय बेहतर तरीके से ले सकते हैं। लक्षित बाजार के चयन के बारे में सीखने की सुविधा के लिए हम किसी उत्पाद–सेवा पर एक केस स्थिति निर्दिष्ट कर सकते हैं। एक दूसरे से सीखने की सहक्रियात्मक शिक्षा (सिनर्जी) प्रतिभागियों को कई वैकल्पिक दृष्टिकोणों के बारे में बता सकती है।

निष्कर्ष

कई वर्षों के उद्योग के अनुभव के बाद, अनुभवी विद्यार्थी खुद को कक्षा में किसी के द्वारा सिखाए जाने के लिए नहीं लाते हैं, बल्कि वे अपने अन्य साथियों से सीखने के लिए उत्सुक होते हैं। सभी भाषाओं की जननी संस्कृत इतनी समृद्ध और शब्दावली में उन्नत है कि इसमें शिक्षकों की अद्वितीय क्षमताओं को इंगित करने के लिए अलग–अलग शब्द हैं। जो शिक्षक केवल जानकारी साझा करता है उसे 'अध्यापक' कहा जाता है। इसके विपरीत, जो जानकारी को ज्ञान में परिवर्तित करता है वह 'उपाध्याय' है। एक 'आचार्य' कौशल प्रदान करता है, और एक 'पंडित' अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। जो विचार करना सिखाते हैं, वे 'धृष्ट' हैं। ज्ञान को जगाने वाला 'गुरु' है। महान शिक्षक जन्मजात नहीं होते हैं, वे प्रशिक्षित किए जाते हैं। सीखाने की कला वास्तव में अनुभव और प्रशिक्षण के माध्यम से विकसित एक कौशल है।

जीवन में सामंजस्य का महत्व

गौरव गुप्ता
अनुभाग अधिकारी (स्थापना)

जीवन में सामंजस्य का अत्यंत महत्व है। दो या अनेक के मध्य बेहतर तालमेल ही सामंजस्य है। हम सभी प्रसन्न रहें और परस्पर प्रसन्नता पूर्वक व्यवहार करने के लिए तत्पर रहें, यही सामंजस्य का सूत्र है। ये सूत्र हमारे जीवन को सुख से ओत–प्रोत करते हैं, संबंधों में समरसता पैदा करते हैं और हमारे व्यक्तिगत व आंतरिक जीवन में उमंग का वातावरण उत्पन्न करते हैं। सामंजस्य के अभाव में पारिवारिक विघटन, कलह, ईर्ष्या आदि दुर्भाव प्रभावी होने लगते हैं। सामंजस्य एक कला है, इस कला से व्यावहारिक जगत और आंतरिक जीवन, दोनों में सफलता हासिल की जा सकती है। जीवन में नदी की मर्यादित धारा के समान बहना ही उत्तम है। इसे तोड़ना–मरोड़ना असामान्य है, जो सामान्य व्यक्ति के लिए कठिन भी है।

ध्यान रखना है कि हमें जीवन के साथ चलना है। अपनी शर्तों के अनुसार जीवन की धारा मोड़ने से ही असामंजस्य उत्पन्न होता है और ऐसा होने का कारण है–हमारा अहंकार और अत्यधिक स्वार्थकरता। ये दोनों कारण सामंजस्य की कोमल व उर्वर भूमि को बंजर बना देते हैं। इस कारण मानवीय संबंधों के सभी संवेदनशील पहलू जराजीर्ण अवस्था में पहुंच जाते हैं। व्यवहार में उत्तेजना, निरर्थकवार्ता, कटु उक्ति, क्षमा न कर पाने का हठ, सामंजस्य को ठेस पहुंचाता है। सामंजस्य दो प्रकार होता है। प्रथम प्रकार के अंतर्गत व्यक्ति, संबंधों व परिस्थितियों के साथ समायोजन स्थापित करता है। इसके लिए जरूरी है कि रिश्तों की सौदेबाजी न की जाए, व्यक्ति को वस्तु की तरह न समझा जाए, अपने ही दायरों में सीमित रहकर दूसरे की संवेदनाओं व मनोभावनाओं की उपेक्षा न की जाए। परिस्थितियों की चुनौतियों को स्वीकारते हुए और इसके अनुसार परिस्थिति व परिवेश का सूक्ष्मावलोकन कर उसके अनुरूप योजना बनाकर सामंजस्य स्थापित करना दूसरे प्रकार का सामंजस्य है। बौद्धिक व भावनात्मक शक्तियों का समुचित प्रयोग सामंजस्य के लिए अति उत्तम है। अपने अस्तित्व के साथ दूसरे के अस्तित्व की स्वीकार्यता आदर भाव उत्पन्न करती है। इसलिए मानसिक व व्यावहारिक जीवन के विकास के लिए सामंजस्य स्थापित करना महत्वपूर्ण है।

बातें जो आपको रखेंगी गुस्से से दूर

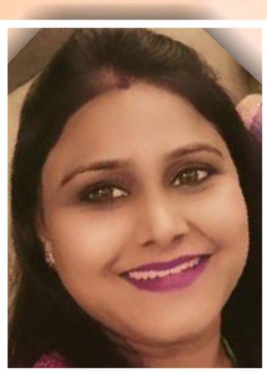

मोनिका सैनी
वरिष्ठ निजी सहायक

क्रोध एक ऐसी स्थिति है, जिसमें आपकी जिव्हा मन से ज्यादा तेज कार्य करती है। वह क्रोध ही है, जो किसी को भी आपका शत्रु बना सकता है और वही अगर इस पर संयम रखा जाए तो किसी को भी आपका घनिष्ठ मित्र बना सकता है।

किसी भी व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व को सुधारने की शुरुआत सबसे पहले गुस्से की नकारात्मक भावना से करनी चाहिए। चाहे घर हो या दफ्तर हर जगह व्यस्तता इतनी बढ़ गई है कि कई बार न चाहते हुए भी छोटी–छोटी बातों पर गुस्सा आ ही जाता है। अगर सचेत तरीके से गुस्से को नियंत्रित नहीं किया जाए तो धीरे–धीरे यह आदत में बदल जाता है, जो सभी के लिए नुकसानदेह है। इसे नियंत्रित करने के लिए निम्नलिखित उपायों को अपना कर देखें–

1. गुस्से की वजह से अगर किसी के साथ आपकी बहस हो जाए तो लगातार खुद ही न बोलते रहे, बल्कि सामने वाले व्यक्ति की बातें भी धैर्यपूर्वक सुनें। इससे आपका गुस्सा कम हो जाएगा।

2. कहते है कि धनुष से निकला बाण और मुख से निकले शब्द कभी वापस नहीं लिए जा सकते, इसीलिए चाहे आपको कितना ही गुस्सा क्यों न आए बोलते समय अपने शब्दों पर जरूर ध्यान दें।

3. गुस्से मे बॉडी लैंग्वेज पर नियंत्रण रखने की कोशिश करें। नकारात्मकता से बॉडी लैंग्वेज मे शारीरिक तनाव पैदा होता है और गुस्सा भी बढ़ जाता है।

4. गुस्सा आने पर ठंडा पानी पीने का पुराना तरीका अपनाए। पानी हमारे शारीरिक तनाव को कम करके क्रोध को शांत करता है।

5. अगर कभी गुस्सा आए तो उस समय थोड़ा शांत बैठने की कोशिश करें इससे हमारे मस्तिष्क को शांत रहने का संदेश जाता है और नर्वस सिस्टम सामान्य ढंग से काम करने लगेगा और गुस्सा शांत हो जाएगा।

6. अगर गुस्सा बहुत ज्यादा आता हो तो अपने लिए एक एंगर मैनेजमेंट डायरी बनाए, जिसमें यह नोट करें कि आज कितनी बार और किस बात पर गुस्सा आया और उसे रोकने के लिए आपने क्या कोशिश की, यह डायरी आपके गुस्से को नियंत्रित रखने पर बहुत मददगार साबित होगी।

7. कई बार छोटी–छोटी बेकार की बातों पर भी गुस्सा आ जाता है, ऐसी स्थिति में जब गुस्सा शांत हो जाए तो अपने आप से ये सवाल कीजिए कि क्या स्थिति वाकई इतनी बुरी थी कि आपको इस तरह चिल्लाना पड़ा? इस तरीके को मनोविज्ञान की भाषा में कोग्निटिव बिहेवियरल थेरेपी कहा जाता है। ऐसा करके आप सचेत और तार्किक ढंग से अपने गुस्से पर काबू कर सकते हैं।

8. अक्सर ऐसा होता है कि व्यक्ति अपना सारा गुस्सा अपने से कमजोर व्यक्ति पर निकलता है। कोई भी व्यक्ति जानबूझ कर ऐसा नहीं करता। यह एक स्वाभाविक मेंटल मैकानिजम है, जिसके तहत व्यक्ति अपने मन का गुब्बार बाहर निकालता है। फिर भी अगर आप ठंडे दिमाग से सोचे तो किसी बेकसूर को अपने गुस्से का शिकार बनाना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है। अगर ऑफिस से या ट्रैफिक जाम की वजह से मूड खराब हो तो घर पहुँच कर बच्चों को डाटना किसी समस्या का समाधान नहीं है। ऐसी बातों को भूलकर चुप रहने मे ही भलाई है।

9. अक्सर ऐसा होता है कि जब हमें किसी व्यक्ति पर

गुस्सा आता है तो हमें उससे जुड़ी सारी नकारात्मक बातें एक साथ याद आने लगती है, पर गुस्से मे भी इस बात का ख्याल रखे कि जिस बात पर बहस हो रही है सिर्फ उसी का ख्याल रखें।

10. समझदारी से काम लेते हुए आप अपने गुस्से को भी सकारात्मक रूप दे सकते हैं। अगर आपको किसी पर गुस्सा आ रहा है तो उसके सामने तार्किक ढंग से अपनी बात रखते हुए, उसे अपने गुस्से का कारण स्पष्ट रूप से बताए, हो सकता है कि इससे आपकी समस्या का हल निकल आए।

11. अगर गुस्से में आपने किसी का दिल दुखाया हो तो बाद मे उससे माफी मांग कर सारी कड़वाहट दूर कर ले। किसी भी रिश्ते में इगो को न आने दे और याद रखे की अपनी गलती स्वीकारने से इंसान छोटा नहीं होता।

12. अगर कभी आपको गुस्सा आता भी है तो एक बार अपने मन में ये जरूर सोचे की आपको गुस्सा नहीं करना है इससे काफी हद तक आपका गुस्से पर नियंत्रण हो जाएगा।

कृपया कुछ समय तक इन सुझावों पर अमल करें। इसके बाद आपको खुद अपने अंदर बदलाव महसूस होगा। व आप यह भी महसूस करेंगे की आप कितने सकारात्मक हो गए है और आप समस्याओं से नहीं, बल्कि समस्याएं आपसे दूर हैं। आप सभी लोगों के बीच अपने आप को बहुत सकारात्मक व सम्मानित महसूस करेंगे, आपके व्यक्तित्व मे एक सकारात्मक ढंग से बदलाव आएगा। कार्यालय मे आपके अधीनस्थ कर्मचारी आपके साथ अत्यंत निष्ठा व ईमानदारी के साथ कार्य करेंगे व घर पर सभी लोगों का आपके प्रति स्नेह मे वृद्धि होगी।

समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है।

-(जस्टिस) कृष्णस्वामी अय्यर

स्वामी विवेकानंद का जीवन परिचय और शैक्षिक दर्शन

चंदा रानी
पूर्व हिंदी अधिकारी

स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी, 1863 को कलकत्ता के एक प्रसिद्ध वकील विश्वनाथ दत्त के घर हुआ। माता प्रेम से उन्हें वीरेश्वर कहती थी, पर नामकरण संस्कार के समय उनका नाम नरेन्द्रनाथ रखा गया। उनकी माता जी धार्मिक विचारों की थी। उनका परिवार एक पारंपरिक कायस्थ परिवार था, स्वामी विवेकानंद के 9 भाई–बहन थे। उनके पिता, विश्वनाथ दत्त, कलकत्ता हाई कोर्ट के वकील थे।

दुर्गाचरण दत्ता जो नरेंद्र के दादा थे, वे संस्कृत और पारसी के विद्वान थे, जिन्होंने 25 साल की उम्र में अपना परिवार और घर छोड़कर एक संन्यासी का जीवन स्वीकार कर लिया था। उनकी माता, भुवनेश्वरी देवी एक देवभक्त गृहिणी थी। स्वामीजी के माता और पिता के अच्छे संस्कारों और अच्छी परवरिश के कारण स्वामी जी के जीवन को एक अच्छा आकार और एक उच्चकोटि की सोच मिली।

नरेंद्रनाथ एक मेधावी छात्र थे। 1879 में प्रथम श्रेणी में प्रवेशिका परीक्षा उत्तीर्ण कर उन्होंने कलकत्ता के सबसे अच्छे महाविद्यालय– प्रेसीडेन्सी कॉलेज में प्रवेश लिया। बाद में वे एक दूसरे महाविद्यालय में भी पढ़ें। विवेकानंद का अंग्रेजी और बंगला– दोनों ही भाषाओं पर अधिकार था। धर्मशास्त्र, इतिहास, विज्ञान आदि विषयों में इनकी गहरी रुचि थी। वे विद्यार्थी जीवन में अत्यंत ही क्रियाशील थे एवं विभिन्न क्रियाकलापों में रुचि लेते थे। परंपरागत भारतीय व्यायाम एवं कुश्ती से लेकर क्रिकेट जैसे आधुनिक खेल में उनकी रुचि थी।

बी0ए0 की परीक्षा के उपरांत नरेंद्र के पिता उनका विवाह कराना चाहते थे पर नरेंद्र गृहस्थ का जीवन जीना नहीं चाहते थे। पिता की अकस्मात् मृत्यु ने विवाह के प्रसंग को रोक दिया। पर नरेंद्र के कंधे पर पूरे परिवार का बोझ आ पड़ा।

नरेंद्रनाथ को कोई भी बंधन या मोह बाँध नहीं सका। 24 वर्ष की अवस्था में नरेंद्रनाथ ने संन्यास ग्रहण कर लिया– वे अपने योग्य गुरू रामकृष्ण परमहंस के योग्यतम शिष्य 'स्वामी विवेकानंद' के रूप में 'जगत प्रसिद्ध' हुए। विवेकानंद ने परिब्राजक के रूप में कश्मीर से कन्याकुमारी तक समस्त भारत का भ्रमण किया। इस अनवरत भ्रमण ने जहाँ स्वामी विवेकानंद के ज्ञान को बढ़ाया वहीं वे भारत के दीन–दुखियों की विवशता को भी अपनी आँखों से देख सके।

अपने गुरू स्वामी रामकृष्ण परमहंस के विचारों के प्रसार, वेदांत ज्ञान के अध्ययन एवं प्रचार तथा दीन–दुखियों की सेवा के लिए स्वामी विवेकानंद ने 1 मई, 1897 को रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। स्वामी विवेकानंद की मृत्यु 39 वर्ष की अल्पावस्था में 4 जुलाई 1902 बेलूर मठ, पश्चिम बंगाल में हुई।

स्वामी विवेकानंद का जीवन दर्शन

स्वामी विवेकानंद ने वेदान्त–दर्शन की व्याख्या आधुनिक परिप्रेक्ष्य में की तथा निराशा एवं कुंठा के दल–दल में फँसी हुई भारतीय जनता को जीवन का नया पथ दिखाया। स्वामी विवेकानंद का वेदों और उपनिषदों पर अटूट विश्वास था। स्वामी विवेकानंद के अनुसार मनुष्य के जीवन का अंतिम उद्देश्य आत्मानुभूति है। वस्तुतः वे आत्मानुभूति, मुक्ति और ईश्वर प्राप्ति को समानार्थी मानते थे।

स्वामी जी मानते थे कि सभी मनुष्यों में ईश्वर का निवास है अतः मानव सेवा सबसे बड़ा धर्म है। मनुष्य को मन, वचन और कर्म से शुद्ध होकर अर्थोपार्जन करना चाहिए, दीन–हीनों की सेवा करनी चाहिए और योग मार्ग द्वारा आत्मानुभूति प्राप्त करते हुए मुक्ति प्राप्त करनी चाहिए।

1. **धर्म** – विवेकानंद के अनुसार भविष्य के धार्मिक आदर्शों को सभी धर्मों में जो कुछ भी सुन्दर और महत्वपूर्ण है, उन सबको एक साथ लेकर चलना पड़ेगा। ईश्वर संबंधी सभी सिद्धांत– सगुण, निर्गुण, अनन्त, नैतिक नियम अथवा आदर्श मानव धर्म की परिभाषा के अन्तर्गत आना चाहिए। स्वामी विवेकानंद सभी धर्मों की एकता में विश्वास करते थे।

2. **सत्य** – विवेकानंद के अनुसार, विश्व में सत्य एक है और मानव उसे विभिन्न दृष्टिकोण से देखते हैं।

3. **अहिंसा** – विवेकानंद अहिंसा को श्रेष्ठ मानते हैं पर हिंसा को सर्वथा त्याज्य नहीं।

4. **त्याग** –स्वामी विवेकानंद के अनुसार त्याग का अर्थ है, स्वार्थ का संपूर्ण अभाव।

5. **मानव सेवा** – विवेकानंद ने यह सीख दी कि मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है। उससे मुँह मोड़ना धर्म नहीं है। वे कहते थे अगर तुम्हें भगवान की सेवा करनी है तो मानव की सेवा करो।

6. **जाति व्यवस्था के विरोधी** – विवेकानंद भारत में व्याप्त सामाजिक बुराईयों के विरूद्ध लगातार संघर्ष करते रहे।

7. **सामाजिक व्याधि के प्रतिकार का उपायः शिक्षा** – विवेकानंद कहते हैं "समाज के दोषों को दूर करने के लिए प्रत्यक्ष रूप से नहीं वरन् शिक्षा–दान द्वारा परोक्ष रूप से उसकी चेष्टा करनी होगी।"

8. **देशभक्ति की आवश्यकता** – विवेकानंद एक प्रखर राष्ट्र भक्त थे और वे सभी भारतीयों को राष्ट्रभक्ति की भावना से ओत–प्रोत देखना चाहते थे।

स्वामी विवेकानंद का शैक्षिक दर्शन

उन्होंने चार प्रकार के दान बताए धर्म (आध्यात्मिक ज्ञान का) दान, ज्ञान दान, प्राण दान और अन्न दान। इन सब में उन्होंने प्रथम दो दानों को श्रेष्ठ दान माना। वे ज्ञान–विस्तार को भारत की सीमाओं से बाहर भी ले जाना चाहते हैं। भारत ने संसार को अनेक बार आध्यात्मिक ज्ञान दिया।

स्वामी विवेकानंद के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य

शिक्षा के उद्देश्यों का विवेचन करते हुए वे लिखते हैं "जो शिक्षा प्रणाली जन–साधारण को जीवन–संघर्ष से जूझने की क्षमता प्रदान करने में सहायक नहीं होती, जो मनुष्य के नैतिक बल का, उसकी सेवा–वश्ति का, उसमें सिंह के समान साहस का विकास नहीं करती, वह भी क्या शिक्षा के नाम के योग्य है?" स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा के महत्वपूर्ण उद्देश्य बतलाए–

1. **अंतर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति** : विवेकानंद ने शिक्षा का सर्वात्तिक महत्वपूर्ण उद्देश्य मानव में निहित पूर्णता का विकास है।

2. **मानव–निर्माण करना** : स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा प्रमुख उद्देश्य मानव का निर्माण करना बताया। वे कहते हैं "शिक्षा द्वारा मनुष्य का निर्माण किया जाता है। समस्त अध्ययनों का अन्तिम लक्ष्य मनुष्य का विकास करना है।

3. **शारीरिक पूर्णता** : विवेकानंद के अनुसार मानव तभी पूर्णता प्राप्त कर सकता है जब उसका शरीर स्वस्थ हो। शारीरिक दुर्बलता पूर्णता के लक्ष्य प्राप्त करने में सबसे बड़ा बाधक तत्व है।

4. **चरित्र का निर्माण** : स्वामी विवेकानंद उसी शिक्षा को शिक्षा मानते थे जो चरित्रवान स्त्री–पुरूष को तैयार कर सके। उनके अनुसार सबल राष्ट्र के निर्माण हेतु नागरिक का चरित्रवान होना आवश्यक है।

5. **जीवन–संघर्ष की तैयारी** : शिक्षा विद्यार्थी को भावी जीवन के लिए तैयार करती है। विवेकानंद की दृष्टि में जीवन–संघर्ष की तैयारी के लिए तकनीकी एवं विज्ञान की शिक्षा आवश्यक है।

6. **राष्ट्रीयता की भावना का विकास** : विवेकानंद भारत की दुर्दशा से अत्यंत ही मर्माहत थे। वे एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था का विकास करना चाहते थे, जो भारतीय विद्यार्थियों में राष्ट्रीयता की भावना का विकास कर सके।

इस प्रकार शिक्षा के माध्यम से विवेकानंद भारतीयों के मध्य राष्ट्र के प्रति पूर्ण समर्पण की भावना का विकास करना चाहते थे।

पाठ्यक्रम

विवेकानंद के अनुसार धर्म शिक्षा की आत्मा है। विवेकानंद की धर्म की परिभाषा अत्यंत व्यापक है। वे धर्म अंतर्गत सम्प्रदाय विशेष को न मानकर नैतिक जीवन पद्धति को मानते हैं। वे पाश्चात्य शिक्षा को अधर्म के विस्तार का कारण मानते हैं। हृदय का विकास जहाँ मानव को आध्यात्मिक बनाता है वहीं मात्र बौद्धिक विकास उसे स्वार्थी बनाता है।

विवेकानंद शिक्षा में आध्यात्म के साथ विज्ञान एवं तकनीकी की शिक्षा आवश्यक मानते हैं। स्वामी विवेकानंद का यह स्पष्ट तौर पर मानना था कि भारतीय आध्यात्म एवं पश्चिमी विज्ञान का समन्वय ही मानव कल्याण का सर्वाधिक विश्वसनीय आधार बन सकता है। स्वामी विवेकानंद का मानना था कि आधुनिक विज्ञान एवं तकनीकी तथा उद्योग की शिक्षा ने मानव के जीवन को आरामदायक बनाया है। पर अगर इसका विकास बिना नैतिक– आध्यात्मिक समन्वय के साथ हुआ तो यह मानव जाति के विनाश का कारण बन सकता है। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान स्वामी विवेकानंद की भविष्यवाणी सच हुई। विवेकानंद की शिक्षा व्यवस्था में कला को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। वे मानते थे कि "कला हमारे धर्म का ही एक अंग है।" उन्होंने विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं शिक्षाशास्त्रियों का ध्यान चित्रांकित पात्रों, नयनाभिराम साड़ियों आदि से लेकर कृषक की झोपड़ियों तथा अनाज भरने के कोठारों तक खींचा। उन्हें जीवन का हर आयाम कलात्मक दिखता था और वे शिक्षा को कला की साधना का माध्यम बनाने पर जोर देते थे।

स्वामी विवेकानंद भाषा की शिक्षा के संदर्भ में अत्यधिक उदार थे। वे संस्कृत भाषा की शिक्षा पर अत्यधिक जोर देते थे क्योंकि यही हमारे धर्म और संस्कृति की भाषा है। इसके साथ ही मातृभाषा की शिक्षा आवश्यक मानते थे। विज्ञान एवं तकनीक की उचित शिक्षा के लिए वे अंग्रेजी की भी शिक्षा महत्वपूर्ण मानते थे।

जनसामान्य में शिक्षा के प्रसार हेतु विवेकानंद की शिक्षा–व्यवस्था में शारीरिक शिक्षा, खेलकूद और व्यायाम को उचित स्थान दिया गया है। वे नवयुवकों को गीता पढ़ने की बजाए फुटबाल खेलने का सुझाव देते थे। उनका मानना था कि अगर शरीर स्वस्थ होगा तो गीता भी बेहतर ढंग से समझ में आयेगी। उन्होंने नवयुवकों को शक्ति का महत्व बताते हुए कहा– "शक्ति ही जीवन और कमजोरी मृत्यु है। शक्ति परम सुख है और अजर अमर जीवन है, कमजोरी कभी न हटने वाला बोध और यंत्रणा है, कमजोरी ही मृत्यु है।" इस प्रकार शिक्षा के पाठ्यक्रम में स्वामी विवेकानंद ने प्राच्य धर्म, दर्शन और भाषा तथा पाश्चात्य ज्ञान–विज्ञान, तकनीक एवं औद्योगिक प्रशिक्षण को स्थान दिया। उन्होंने स्पष्ट रूप से यह महसूस किया था कि पाश्चात्य जगत के भौतिक ज्ञान से हम अपना भौतिक विकास कर सकते हैं और अपने देश के आध्यात्मिक ज्ञान से पश्चिमी जगत का कल्याण कर सकते हैं। इस प्रकार से स्पष्ट है कि पाठ्यक्रम के संबंध में स्वामी विवेकानंद का दृष्टिकोण समन्वयवादी, आधुनिक और व्यापक था।

शिक्षण विधि

स्वामी विवेकानंद के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने की सर्वोत्तम विधि एकाग्रता है। वे कहा करते थे कि जितनी अधिक एकाग्रता होगी उतना ही अधिक ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। उनका कहना था कि एकाग्रता के बल पर जूता पॉलिश करने वाला भी बेहतर ढ़ंग से जूता पॉलिश कर सकेगा एवं रसोइया भी अधिक अच्छा भोजन बना सकेगा।

एकाग्रता तभी आ सकती है, जब मनुष्य में अनासक्ति हो। स्वामी विवेकानंद कहते हैं कि तथ्यों का संग्रह शिक्षा नहीं है। सच्ची शिक्षा है तन को अनासक्ति द्वारा एकाग्र करने की क्षमता विकसित करना। इससे सभी तरह के तथ्यों का संग्रह किया जा सकता है, समस्याओं को समझा जा सकता है और उनके निराकरण का मार्ग ढूंढ़ा जा सकता है।

स्वामी विवेकानंद लौकिक एवं आध्यात्मिक दोनों ही प्रकार के ज्ञान के लिए योग विधि को अपनाने पर बल देते थे। भौतिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए जहाँ अल्प योग (अल्पकाल की एकाग्रता) पर्याप्त है वहीं आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए पूर्ण योग (दीर्घकालीन एकाग्रता) आवश्यक है।

स्वामी विवेकानंद शिक्षा को प्रत्येक बालक–बालिका का जन्म सिद्ध अधिकार मानते थे। खोये हुए सांस्कृतिक एवं भौतिक वैभव को फिर से प्राप्त करने के लिए जनसाधारण की शिक्षा को वे आवश्यक बताते थे। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा– ''मेरे विचार में जनसाधारण की अवहेलना राष्ट्रीय पाप है और हमारे पतन का कारण है। जब तक भारत की सामान्य जनता को एक बार फिर से शिक्षा, अच्छा भोजन और अच्छी सुरक्षा प्रदान नहीं की जाएगी, तब तक सर्वोत्तम राजनीतिक कार्य भी व्यर्थ होंगे।'' वे शिक्षा की सुविधा सभी के लिए समान रूप से उपलब्ध कराना चाहते थे।

स्वामी विवेकानंद के जीवन एवं शिक्षा संबंधी विचार आज की परिस्थितियों में भी उतनी ही उपयोगी है जितनी उनके समय में थी। आज वेदांत और विज्ञान के समन्वय की आवश्यकता और अधिक है। स्वामी विवेकानंद का दर्शन मानव मात्र का कल्याण के लिए है। उन्होंने स्वंय कहा था– ''हम मानव–निर्माण का धर्म चाहते हैं। हम मनुष्य का निर्माण करने वाले सिद्धांत चाहते हैं और हम मानव निर्माण की सर्वांगीण शिक्षा चाहते हैं।''

शिक्षक का दायित्व

विवेकानंद ने कहा कि शिक्षक का कार्य मार्ग से रूकावटें हटाना है। अर्थात् व्यक्ति के अन्तर्गत ब्रह्मत्व की शक्ति पहले से ही विद्यमान है, शिक्षा का कार्य उसे उजागर करना है।

सर्वजनीन और सर्वसुलभ शिक्षा प्रसार के लिए स्वामी जी ने शिक्षा देने हेतु ऐसे अध्यापकों की अपेक्षा की जो सदाचारी हों, त्यागी हों और उच्च भाव से ओत–प्रोत हों। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि भारत में शिक्षा 'ज्ञानदान' या 'विद्यादान' अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है और यह दानी पुरूषों द्वारा होता है। अतः ज्ञान प्रसार का कार्य निस्वार्थ त्यागी पुरूषों के कंधों पर ही होना चाहिए। शिक्षकों को निस्वार्थ भाव से शिक्षा देनी चाहिए न कि धन, नाम या यश संबंधी स्वार्थ की पूर्ति के लिए। शिक्षकों को मानव–जाति के प्रति विशुद्ध प्रेम से प्रेरित होना चाहिए क्योंकि स्वार्थ पूर्ण भाव, जैसे लाभ अथवा यश की इच्छा, इसके अभीष्ट उद्देश्य को नष्ट कर देगा। शिक्षा के लिए विवेकानंद गुरूगृह प्रणाली के पोषक थे। उनका मत था कि विद्यालयों का पर्यावरण एवं वातावरण गुरूगृह की ही तरह शुद्ध होना चाहिए, जहाँ व्यायाम, खेल–कूद, अध्ययन–अध्यापन के साथ भजन–कीर्तन और ध्यान की भी व्यवस्था हो। वे कहते है– ''मेरे विचार के अनुसार शिक्षा का अर्थ है गुरूकुल–वास। शिक्षक के व्यक्तिगत जीवन के बिना कोई शिक्षा हो ही नहीं सकती। जिनका चरित्र जाज्वल्यमान अग्नि के समान हो, ऐसे व्यक्ति के सहवास में शिष्य को बाल्यावस्था के आरम्भ से ही रहना चाहिए, जिससे कि उच्चतम शिक्षा का सजीव आदर्श शिष्य के सामने रहे।''

विद्यार्थी के कर्तव्य

शिक्षार्थी के लिए स्वामी जी कठोर नियमों का पालन एवं इंद्रिय निग्रह पर जोर देते थे, जिससे छात्र शिक्षक में श्रद्धा रखकर सत्य को जानने का प्रयास करें। उन्होंने कहा ''शिक्षक के प्रति श्रद्धा, विनम्रता, समर्पण तथा सम्मान की भावना के बिना हमारे जीवन में कोई विकास नहीं हो सकता। उन देशों में जहाँ शिक्षक–शिक्षार्थी संबंधों में उपेक्षा बरती गई है, वहाँ शिक्षक एक व्याख्याता मात्र रह गया है। वहाँ शिक्षक अपने लिये पाँच डालर की आशा रखने वाले और छात्र, शिक्षक के व्याख्यान को अपने मस्तिष्क में भरने वाले रह जाते हैं। इतना

कार्य संपन्न होने पर दोनों अपनी–अपनी राह पर चल देते हैं। इससे अधिक उनमें कोई संबंध नहीं रह गया है।''

विवेकानंद विद्यार्थी–जीवन में ब्रह्मचर्य पालन पर जोर देते हैं। उनके अनुसार इस काल में विद्यार्थी को मन, वचन और कर्म से ब्रह्मचर्य–पालन करना चाहिए। इससे संकल्प–शक्ति दृढ़ होती है तथा आध्यात्मिक शक्ति तथा वाग्मिता का विकास होता है।

नारी शिक्षा

स्वामी विवेकानंद स्त्री–पुरुष समानता के समर्थक थे। इसलिए महिलाओं की शिक्षा भी उनकी शिक्षा संबंधी योजना में महत्वपूर्ण विषय है। उनका मानना था कि देश की उन्नति के लिए महिलाओं की शिक्षा अत्यन्त आवश्यक है। महिलाओं की शिक्षा के लिए उन्होंने तपस्वी, ब्रह्मचारिणी तथा त्यागी महिलाओं को प्रशिक्षण देना आवश्यक माना ताकि ऐसी महिलाएं दूसरी महिलाओं को सम्यक शिक्षा प्रदान कर सकें। महिलाओं की समुचित शिक्षा के लिए विवेकानंद ने पुरुषों की भाँति महिलाओं के लिए अलग संघ स्थापित करने पर जोर दिया। उनका विचार था कि मठों की स्थापना के माध्यम से वहाँ प्रशिक्षित ब्रह्मचारी स्त्रियाँ, संन्यासी और सुशिक्षित बन कर नारी जाति को शिक्षा देने का प्रयास करेंगी। शिक्षित स्त्रियाँ भले–बुरे का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगी और स्वतंत्र तथा स्वाभाविक रूप से प्रगतिपथ पर अग्रसर हो सकेंगी। पुरुषों की तरह स्त्रियों को भी भाषा, गणित, विज्ञान, सामाजिक विषयों तथा लौकिक विषयों की शिक्षा दी जानी चाहिए, जिससे वे दूसरों तक सम्यक रूप से प्रसारित कर सकें। वे कहते हैं कि ''जिस तरह माता–पिता अपने पुत्रों को शिक्षा देते है उसी तरह उन्हें पुत्रियों को भी शिक्षित करना चाहिए। जबकि हम उन्हें प्रारंभ से ही दूसरे पर निर्भर रहकर परतंत्र रहने की शिक्षा देते हैं।'' विवेकानंद की दृष्टि में मिलनी चाहिए कि वे दूसरों पर निर्भर रहने की बजाय स्वयं अपनी समस्याओं का निराकरण कर सकें। वे लड़कियों की शिक्षा के केंद्र में धर्म को रखने का सुझाव देते हैं। इसके अतिरिक्त इतिहास एवं पुराण, गृह–व्यवस्था, कला एवं शिल्प, बच्चों की उचित देखभाल, पाक कला आदि की शिक्षा देने का सुझाव देते हैं। वे कन्याओं से 'सीता' के उज्ज्वल चरित्र से शिक्षा लेने को कहते हैं।

शिक्षा का प्रसार

स्वामी विवेकानंद ने राष्ट्र और मानव की समस्याओं का निदान शिक्षा को माना। वे शिक्षा को समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति के प्रभावशाली माध्यमों के प्रयोग पर बल दिया।

भ्रमणकारी संन्यासियों द्वारा शिक्षा

स्वामी विवेकानंद की यह योजना श्रमण प्रकृति से मिलती–जुलती है। उन्होंने कहा कि शिक्षा के प्रसार का कार्य उन हजारों संयासियों के माध्यम से हो सकता है, जो गाँव–गाँव धर्मोपदेश करते हुए घूमते रहते हैं। उन्हीं के शब्दों में ''हमारे देश में एकनिष्ठ और त्यागी साधु हैं जो गाँव–गाँव धर्म की शिक्षा देते फिरते हैं। यदि उनमें से कुछ लोगों को शैक्षिक विषयों में भी प्रशिक्षित किया जाए तो गाँव–गाँव दरवाजे जाकर वे न केवल धर्म की ही शिक्षा देंगे, बल्कि ऐहिक शिक्षा भी दिया करेंगे।''

रामकृष्ण मिशन

स्वामी विवेकानंद ने मानव जाति के उत्थान के लिए रामकृष्ण मिशन गठन किया। विवेकानंद ने इसका उद्देश्य निश्चित किया– ''आत्मनो मोक्षार्थ जगत् हिताय च।''– 'अपनी मुक्ति तथा जगत के कल्याण के लिए।' रामकृष्ण मठ की स्थापना 1897 में की गई तथा रामकृष्ण मिशन का पंजीकरण 1909 में किया गया। मठ और मिशन स्वामीजी के शिक्षा संबंधी विचारों को साकार रूप देने का माध्यम है। मठ का मुख्य कार्यालय बेलूर मठ में है। देश में तो मठ और मिशन की अनेक शाखाएं हैं ही, विदेशों में भी 130 शाखाएं स्थापित की गई हैं। रामकृष्ण मिशन का एक महत्वपूर्ण कार्य है जनसेवा। यह आपदा की स्थिति में पूरी निष्ठा से लोगों की सेवा करता है।

चित्रकला

प्रिशा वर्मा
कक्षा सातवीं
सुपुत्री सुश्री नीरू वर्मा, निजी सहायक

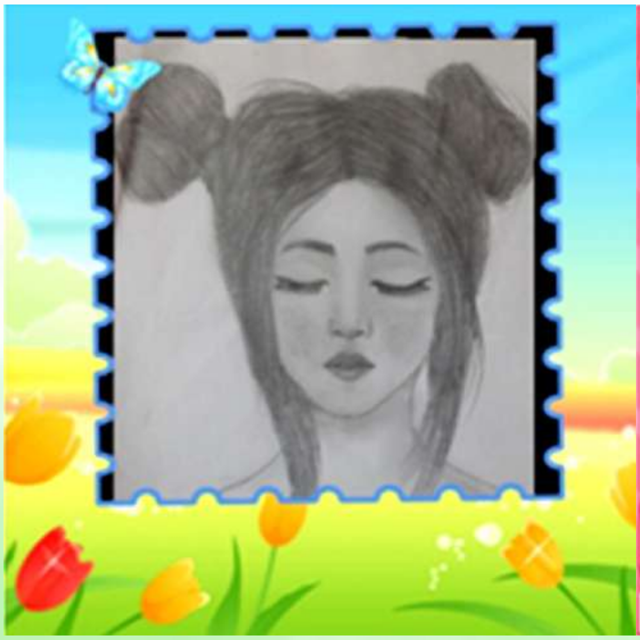

विज्ञान, प्रौद्योगिकी और अर्थव्यवस्था की समसामयिकी

अजय शर्मा
संपादकीय सहायक,
जर्नल प्रभाग

विज्ञान और प्रौद्योगिकी में प्रगति का आर्थिक विकास पर गहरा प्रभाव पड़ता है। वैज्ञानिक खोजों और तकनीकी नवाचारों से नए उद्योगों, उत्पादों और सेवाओं का विकास होता है, नौकरियां पैदा होती हैं और आर्थिक मूल्य पैदा होता है। उदाहरण के लिए, सूचना प्रौद्योगिकी में सफलताओं, जैसे कि इंटरनेट का विकास, ने उद्योगों में क्रांति ला दी है, व्यापार मॉडल को बदल दिया है, और वैश्विक स्तर पर आर्थिक विकास को बढ़ावा दिया है।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी में आर्थिक निवेशः अर्थव्यवस्था वैज्ञानिक अनुसंधान और तकनीकी विकास के वित्तपोषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सरकारें, निजी उद्यम और निवेशक आर्थिक प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने की अपनी क्षमता को पहचानते हुए, वैज्ञानिक अनुसंधान और तकनीकी प्रगति का समर्थन करने के लिए संसाधन आवंटित करते हैं। अनुसंधान और विकास (आर एंड डी) में निवेश से नई खोज और आविष्कार होते हैं, बौद्धिक संपदा के निर्माण, उत्पादकता में सुधार और प्रतिस्पर्धात्मकता में वृद्धि के माध्यम से आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलता है।

नवाचार और आर्थिक प्रतिस्पर्धात्मकताः वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति से प्रेरित नवाचार, आर्थिक प्रतिस्पर्धात्मकता का एक प्रमुख चालक है। जो देश और कंपनियां अनुसंधान और विकास में निवेश करते हैं, वैज्ञानिक उत्कृष्टता को बढ़ावा देते हैं और तकनीकी नवाचार को बढ़ावा देते हैं, वे अक्सर वैश्विक बाजारों में प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त हासिल करते हैं। नवाचारों से नए उत्पादों का विकास हो सकता है, विनिर्माण प्रक्रियाओं में सुधार हो सकता है और दक्षता में वृद्धि हो सकती है, जिससे उत्पादकता और आर्थिक विकास को बढ़ावा मिल सकता है।

प्रौद्योगिकी प्रसार और आर्थिक परिवर्तनः प्रौद्योगिकी को अपनाने और उसके प्रसार का अर्थव्यवस्थाओं पर परिवर्तनकारी प्रभाव पड़ता है। जैसे–जैसे नई प्रौद्योगिकियां अधिक सुलभ और सस्ती होती जाती हैं, उन्हें व्यवसायों, उद्योगों और उपभोक्ताओं द्वारा अपनाया जाता है, जिससे उत्पादन विधियों, उपभोग पैटर्न और बाजार की गतिशीलता में बदलाव आता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, स्वचालन और नवीकरणीय ऊर्जा जैसी प्रौद्योगिकियों को व्यापक रूप से अपनाने से उद्योगों को नया आकार देने, नई नौकरी के अवसर पैदा करने और आर्थिक परिवर्तन को बढ़ावा देने की क्षमता है।

वैज्ञानिक अनुसंधान को आकार देने वाले आर्थिक विचारः आर्थिक कारक अक्सर वैज्ञानिक अनुसंधान की दिशा और प्राथमिकताओं को प्रभावित करते हैं। सरकारें, संगठन और फंडिंग एजेंसियां अक्सर उन क्षेत्रों पर वैज्ञानिक अनुसंधान पर ध्यान केंद्रित करती हैं जिन्हें आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण माना जाता है, जैसे स्वास्थ्य देखभाल, ऊर्जा और स्थिरता। आर्थिक विचार अनुसंधान वित्तपोषण निर्णयों को संचालित कर सकते हैं और गंभीर सामाजिक चुनौतियों और आर्थिक अवसरों को संबोधित करने के लिए वैज्ञानिक एजेंडे को आकार दे सकते है।

वैज्ञानिक खोजों के आर्थिक प्रभावः वैज्ञानिक खोजों का सीधा आर्थिक प्रभाव हो सकता है। उदाहरण के लिए, चिकित्सा अनुसंधान में प्रगति से नए उपचार और उपचांरों का विकास हुआ है, सार्वजनिक स्वास्थ्य परिणामों में सुधार हुआ है और स्वास्थ्य देखभाल लागत में कमी आई है। इसी तरह, कृषि विज्ञान में प्रगति से फसल की पैदावार बढ़ सकती है, खाद्य सुरक्षा बढ़ सकती है और ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक विकास में योगदान मिल सकता है।

कुल मिलाकर, विज्ञान, प्रौद्योगिकी और अर्थव्यवस्था रिश्तों के एक जटिल जाल में आपस में जुड़े हुए हैं। वैज्ञानिक खोजें और तकनीकी नवाचार आर्थिक विकास और प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाते हैं, जबकि आर्थिक कारक वैज्ञानिक अनुसंधान की दिशा और प्राथमिकताओं को प्रभावित करते हैं। यह सहजीवी संबंध समकालीन समाज को आकार देता है और भविष्य की प्रगति और समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करता है।

राधे श्याम

राहुल पाठक
विपणन कार्यकारी

सब दासीन को दूर हटा कर, अपने हाथों, खीर बना कर
रुक्मिणी मन ही मन हर्षाई, तेज गरम, देई परसाई
बस एक निवाले भर से ही, कान्हा जी की, आंखे भर आई
रख कर मुख में, चम्मच आधा, अधरों से, बोल उठे राधा
कुछ होश साध और मुख को बांध, कृष्णा ने रुक्मिणी को ताका
किया आश्वस्त मुख नही जला, नहीं हुआ बाल इक भी बांका
यहाँ हर्ष था ओझल नयनों में जल, पीड़ा मुख पर, थी छाई
भार्या हूँ मै फिर पीड़ा में, प्रेयसी क्यों तुम्हें याद थी आई
क्यूं भला राधिका श्याम तुम्हें, अब तक थी न बिसराई
क्या अब भी श्याम के मन को रुक्मिणी स्वयं नहीं थी भायीं
जब हुआ भान गलती को मान, हरी बस थोड़ा मुसकाए
चुप्पी ने उल्टा काम किया, रुक्मिणी जो को परेशान किया
बोली मैं, स्वयं ही जाती हूँ, इस भेद का पता लगती हूँ
राधे में ऐसी क्या है बात, करते तुम उनको सदा याद
केशव फिर से बस मुसकाए, जिस पर रुक्मिणी और झल्लाईं
उस पल ही राधे महल पहुंची, जहाँ क्रोध में जलने की थी सोची
पर राधे स्वयं थी झुलसी बैठी, पीड़ा में भी थी शांत बैठी
विस्मय से पूछा कुशल क्षेम, बोली क्या तुम करती थी होम
ये तन कैसे है झुलसाया है, क्यूं कर ये सती रूप पाया है
राधे थोड़ी सी सकुचाईं, कहते कहते बस मुसकाई
हृदयवासिनी कहते हैं श्याम मुझे, आना था उनके कुछ काम मुझे
खौलती खीर खा बैठे थे, पर ताप झेल ना पाते थे
मैं उपासना के क्षीर में थी, स्वयं अग्नि देव उस खीर में थे
ज्वाला–सा काम किया उसने, मेरा ये हाल किया उसने
रुक्मिणी बहुत पछताने लगी, और अश्रु धारा बहाने लगी
रुक्मिणी ने स्वयं अधिकार दिया, राधा श्याम नाम स्वीकार किया
सब जग तब से ही गाता है, राधे संग श्याम ही आता है

"दिन में एक बार अपने आप से बात करें, अन्यथा आप इस दुनिया में एक उत्कृष्ट व्यक्ति से मिलने से चूक सकते हैं"

- स्वामी विवेकानंद

नारी हूँ

विशाखा सिंह
(सुपुत्री– श्री. कमल सिंह
वरिष्ठ सहायक)

नारी हूँ पर सबकी प्यारी हूँ
अक्सर लोग मुझे कमजोर समझते
वे क्या जाने, नारी हूँ पर बलशाली हूँ
किसी की बहन किसी की माँ तो किसी की बेटी हूँ,
कमजोर नहीं बस दुनिया की रीति से मजबूर हूँ
एक ओर माँ दुर्गा हूँ
बात परिवार, मां–बाप, भाई पर आए तो
दूसरी ओर माँ काली हूँ
नारी हूँ पर बलशाली हूँ
सौभाग्य है मेरा कि मैं नारी हूँ
नारी हूँ, सबकी प्यारी हूँ

मैं ही क्यों ?

सुश्री प्रीति वाजपेयी
(पत्नी– श्री अमित चनपुरियाए
उपकुलसचिव)

जब मन आया मान को मेरे, कुचल दिया कुत्सित पुरुषों ने
इतने से भी में मन ना भरा, तो क्या–क्या ना किया उन लोगों ने
कहने से जुबां कतराती है, रूह तक काँप जाती है
काश जन्म ना देता इश्वर, ऐसे लोगों को दुनिया में
या देता कुछ पहचान निशानी, ऐसे नर पशु को जन्म से ही
चली जाऊं इस दुनिया से, या देह रहे और रूह मरे
ये जीवन मृत्यु से कठिन हुआ, अब मुरझाया–सा फूल हुआ।
ये फूल कभी अब खिल न सकेगा, न कोई महक है जीवन की
जिंदा है माँ और बाबा उसके, पर प्राण नहीं उनमें हैं बचे
गुड़िया उनकी बिखर गई,या गुड़िया उनकी चली गई
खुश थे वे जब जन्म दिया था, खुशियां दी थी, आजादी दी थी
तुम हो ना किसी से कम गुड़िया, ये ख्वाब दिए, और पंख दिए
भ्रम टूट गया है उनका भी, सपनों की दुनिया टूट गई
बेटियां नहीं सुरक्षित है, जब तक ये नर पशु जिंदा है

कैसे करें अदा 'प्रकृति का कर्ज'

डॉ. प्रतीक माहेश्वरी
सहायक प्रोफेसर
भारतीय विदेश व्यापार संस्थान
(गिफ्ट सिटी, गाँधी नगर, गुजरात)

ग्लोबल वार्मिंग, क्लाइमेट चेंज, समुद्र का बढ़ता हुआ स्तर, जंगलों की आग, पेय जल की कमी आदि शब्द हम आए दिन सुनते हैं और समाचार पत्र में इस संबंध में पढ़ते भी हैं। कहने की जरूरत नहीं, यह सब प्रकृति के साथ खिलवाड़ का नतीजा है, जिसके लिए प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुन दोहन और मानव की अनियंत्रित विकास गतिविधियां जिम्मेदार है। ऐसा नहीं है कि विश्व समुदाय इन समस्याओं से अनभिज्ञ है। हर वर्ष वैश्विक और राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न आयोजनों, गोष्ठियों एवं मंचों के माध्यम से इन विषयों पर चर्चाएं और मंथन तो बहुत होता है, परंतु जमीनी स्तर पर कार्यान्वयन नहीं दिखता या फिर बेहद सीमित कार्यान्वयन ही सफल होता है। आम जनता भी इसे अंतरराष्ट्रीय/राष्ट्रीय संस्थाओं और सरकारों की जिम्मेदारी मानकर अपना पल्ला झाड़ लेते हैं।

लेकिन वास्तव में, इसके लिए संस्थान और सरकारें जितनी जिम्मेदार है, उतनी ही (या शायद ज्यादा) जिम्मेदारी हमारी भी बनती है। यदि हर व्यक्ति अपने जीवन काल में सिर्फ अपने हिस्से की जिम्मेदारी भी निभा दे तो हम अपनी आने वाली पीढ़ियों को एक बेहतर पर्यावरण और सुनहरा भविष्य दे सकते हैं। शायद आप यह सोच रहे होंगे कि इस संदर्भ में आप और हम चिंतन और दोषारोपण के अलावा कर ही क्या सकते हैं? तो आइए जानते हैं, आप और हम अपने जीवन काल में ही प्रकृति का कर्ज कैसे अदा कर सकते हैं। इसके लिए हमें 'पाँच सूत्रीय एजेंडा' का पालन करना होगा। आइए जानते हैं क्या है ये पाँच सूत्र :–

1. **हर वर्ष, एक वृक्षः** प्रण लें कि प्रति वर्ष न केवल एक पेड़ लगायेंगे, बल्कि उसका संरक्षण भी करेंगे। यह कार्य आप स्वयं के जन्मदिन पर या किसी अन्य निर्धारित दिन भी कर सकते हैं।

2. **हर माह, श्रमदानः** प्रण लें कि अपनी सुविधानुसार महीने में एक दिन अपने इलाके में श्रमदान करेंगे। इसके लिए कॉलोनी के गार्डन की साफ–सफाई या लगाए हुए पेड़ों का रख–रखाव भी कर सकते हैं। यदि आप इस कार्य को करने में झिझक महसूस करते हैं, तो किसी अधीनस्थ से भी काम करवाया जा सकता है।

3. **हर सप्ताह, सार्वजनिक परिवहनः** प्रण लें कि हर सप्ताह किसी एक दिन आप पेट्रोल/डीजल चलित वाहनों का उपयोग नहीं करेंगे, बल्कि उस दिन आप सिर्फ साइकिल या सार्वजनिक परिवहन का ही उपयोग करेंगे। अगर आप चाहे तो कार–पूलिंग भी कर सकते हैं।

4. **हर दिन, थैली बिनः** प्रण लें कि आप हर दिन सब्जी–भाजी, किराने का सामान इत्यादि खरीदने के लिए घर से कपड़े का थैला साथ ले जाएंगे। दिनचर्या में प्लास्टिक की थैलियों, बोतलों का उपयोग कम करेंगे।

5. हर पल, रहे जागरूकः जहाँ तक संभव होगा, आप दैनिक उपभोग की वस्तुओं के प्रति सजग रहेंगे। आप प्रकृति द्वारा प्रदत्त अमूल्य उपहारों (हवा, पानी आदि) का हर क्षण सही तरीके से उपयोग करेंगे।

जैसा कि स्पष्ट हैं, हमें बहुत बड़ी–बड़ी योजनाओं और उपायों की बिल्कुल भी आवश्यकता नहीं है। हमारे छोटे–छोटे किंतु अनवरत प्रयास एक बड़ा बदलाव ला सकते हैं। इस 'पाँच सूत्रीय कार्यक्रम' का पूरी निष्ठा से पालन करके हम पर्यावरण के प्रति अपने दायित्व को काफी हद तक निभा सकते हैं। जरा सोचिए, आने वाली पीढ़ियों को विरासत में देने के लिए इससे अच्छा उपहार और क्या हो सकता है?

विश्व मित्रता दिवस

सतपाल सिंह
वरिष्ठ सहायक

आज है विश्व मित्रता दिवस विश्वभर में खास,

आओ मिलकर बढ़ाते हैं दोस्ती का प्यार और उम्मीद का एहसास

दोस्ती का रिश्ता है अनमोल और प्यारा,

सभी देशों में बढ़ाता है बहुत सारा यारा

मिलते हैं हम एक–दूसरे से

होता है शुरू खुशियों का सफर,

विश्व में बढ़ती है दोस्ती और

मिलती रहती है स्नेह की डगर

सीमाओं को पार करती दोस्ती की यह रेल,

भाषाओं की सीमाओं को तोड़कर बढ़ता है खेल–मेल

आओ इस विश्व मित्रता दिवस पर बढ़ाएं दोस्ती की मिठास,

हर देश, हर जगह रखें प्यार का एहसास

तुम पिता हो गए हो

निकलते हो जब तुम घर से बाहर
कुछ कमाने लिए
खाने के डिब्बे के अलावा
बहुत कुछ साथ लेकर निकलते हो
साथ में होता है विश्वास
पत्नी और बच्चों का
कि तुम शाम को
इसी मुसकराहट के साथ वापस लौटोगे
होती है साथ माँ – बाप की आस
कि इस उम्र में तुम उन्हें अकेला नहीं छोड़ोगे
और साथ होता है ज़िम्मेदारी का एक बोझ
जो कभी दिखाई नहीं देता
पर जिसे पूरा करने के लिए
तुम अपनी कई इच्छाओं को
दफ़न कर देते हो
कभी–कभी कुछ दूर पैदल चलकर
या पुरानी चप्पल पहनकर पैसा बचाते हो
अब तुम दोस्तों के साथ मनमानी नहीं करते
सैर–सपाटे की जगह
बच्चों के साथ बैठकर
किताबों के पन्ने पलटते हो
अब तुम यूँ ही
बिस्तर पर पड़े ऊँघते नहीं
सुबह जल्दी उठकर
शाम को देर से सोते हो
अब तुम से कई लोगों की उम्मीदें जुड़ गई हैं
क्योंकि अब तुम एक बेटे से बढ़कर
एक परिवार के पालक और रक्षक हो गए हो
अब तुम पिता हो गए हो

– नीता पांडेय
टीजीटी, मैक्सफोर्ट स्कूल, रोहिणी
(पत्नी प्रो. आशीष पांडेय, एमडीपी प्रमुख)

संगति का प्रभाव

सीमा
वरिष्ठ सहायक

यह संसार अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के मनुष्यों से बना है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और इस संसार में जीवन व्यापन के लिए उसे दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है। कभी उसे दूसरों की ज़रूरत पड़ती है तो कभी वह किसी के काम आता है। जब दो इन्सान एक साथ बैठकर बातें करते है या फिर कोई अन्य कार्य करते हैं तो निश्चित रूप से उन पर एक दूसरे का अच्छा या बुरा प्रभाव जरूर पड़ता है ।

आप जिस तरह के इंसान के साथ बैठते हो उसी तरह का प्रभाव आप पर पड़ता है; अर्थात यदि आप बुरे व्यक्ति के साथ संगति रखते हो तो आप पर बुरा प्रभाव पड़ता है और आप उसकी बुरी आदतों को ग्रहण करते हो और यदि आप अच्छी संगति (सत्संगति) में रहते हो तो आप अच्छी आदतों को ग्रहण करते हो ।

इंसान सत्संगति में रहकर चाहे अच्छा न बने, किंतु कुसंगति में रहकर बुरा जरूर बन जाता है।

यदि आप कुसंगत में रहकर बुरी आदतें सीखते भी नहीं तो भी कुसंगत में रहने वाले लोगों को सदैव बुरा ही समझा जाता है।

दुष्ट और दुराचारी व्यक्ति के साथ रहने से सज्जन व्यक्ति का चित्त भी दूषित हो जाता है।

अच्छी आदतों को अपनाना थोड़ा मुश्किल होता है और बुरी आदतों को अपनाना बहुत सरल होता है।

इसलिए हमें अपने जीवन के क्षण–क्षण को सुसंगति में बिताना चाहिए और जितना हो सके कुसंगति से दूर रहना चाहिए –

एक घड़ी आधौ घड़ी, आधौ में पुनि आध।
तुलसी संगति साधु की हरै कोटि अपराध।।

आप इतना तो कर सकते हैं

- हिंदी में हस्ताक्षर करें।
- हिंदी पत्रों का उत्तर हिंदी में दें।
- हिंदी में कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त करें।
- हिंदी भाषी राज्यों को भेजे जाने वाले लिफाफे पर पते हिंदी में लिखें।
- विभाग के सभी कंप्यूटरों पर बहुभाषी शब्द - संसाधक यूनिकोड लोड करें।
- फाइल कवर, स्टेशनरी आदि पर कार्यालय का नाम द्विभाषी में ही लिखें।
- हिंदी हस्ताक्षरित अंग्रेजी के पत्रों का उत्तर भी हिंदी में ही दें।
- हिंदी प्रतियोगिताओं में भाग लें।
- अपने साथियों को हिंदी में काम करने की प्रेरणा दें।

बारूद

मेघा आचार्य
हिंदी अधिकारी

घोंसले से निकल कर
खुले आसमान में
उड़ान भरना क्या होता है...
नहीं पता...

सब कहते हैं–
आसमान में बारूद बिछा है

एक सवाल को शोर करते हुए हमेशा सुनती...
"दुनियाँ में घोंसला है या घोंसलें में दुनियाँ?"
पर जवाब का सन्नाटा कभी छाया ही नहीं
पर बाबा कहते हैं

घोंसला ही तो मेरी दुनियाँ है
पंख है मेरे पास
पंख तो है
लेकिन उनकी फडफडाहट से जाने क्यों
सबके माथे पर शिकन पैदा हो जाती है

मेरे दो पंख बहुत सुंदर है
माँ को कहते हुए सुना था बाबा से ऐसा
और झुर्रियां अधिक ही गहरी हो गई थी उनकी

इस 'दुनियाँ' से दूसरी 'दुनियाँ' में
फिर एक नई 'दुनियाँ' बसाने का ख्वाब
मेरे सिरहाने चुपके से रखती थी माँ
और मैं
करवट बदल कर उड़ने के सपने देखती...

सुना है कि आसमान में बारूद बिछा है
क्या है बारूद?
देखना है मुझे भी

एक सुबह मैं तैयार थी
उड़ान भरने लिए
बारूद देखने के लिए

लेकिन पता नहीं क्यों
दर्द सा महसूस हुआ
और फड़फड़ाहट भी शोर नहीं कर रही थी
उड़ना चाह रही थी लेकिन उड़ नहीं पा रही थी
तब पता चला...
बारूद सिर्फ आसमान में बिछा नहीं था!!

आज अंग्रेजी का प्रभुत्व प्राप्त करने के लिए दक्षिण के भाई-बहन जितना श्रम करते हैं, उसका आठवाँ हिस्सा भी हिंदी सीखने में करें तो हिंदुस्तान के बाकी दरवाजे जो उनके लिए बंद हैं, खुल जाएँ और वे हमारे साथ इस तरह एक हो जाएँ जैसे पहले कभी न थे।

- महात्मा गांधी

आइए ले चलें आपको ''लक्षद्वीप''

राजिंदर सिंह बेवली
पूर्व सहा. महाप्रबंधक (राजभाषा)
पंजाब एंड सिंध बैंक

जी आइए ना, ले चलते हैं आपको ऐसी जगह, जो बहुत सुंदर है और जिसे अरब सागर में मूंगे के द्वीपों का गुलदस्ता कहा जाता है।

हमने भी सुनी थीं लक्षद्वीप की विशेषताएं लेकिन कोई ऐसा व्यक्ति नहीं मिला जो वहाँ स्वयं जाकर आया हो। फिर भी हमने मन बना लिया और केवल मन ही नहीं बनाया, बल्कि ठान भी लिया कि लक्षद्वीप हो कर ही आएंगे। कहते हैं ना, जब इरादे नेक और संकल्प दृढ़ हों तो भगवान भी आपके साथ हो लेता है।

मैंने लगभग पूरा भारत देखा हुआ है। लेकिन यह यात्रा पिछली सभी यात्राओं से अलग थी। तो सुनिए लक्षद्वीप का आँखों देखा हाल ।

यहाँ मैं आपको कुछ महत्वपूर्ण जानकारी देता चलूं। लक्षद्वीप (संस्कृतः लक्षः लाख+द्वीप) भारत के दक्षिण–पश्चिम में हिंद महासागर में स्थित एक भारतीय द्वीप–समूह है। इसकी राजधानी कावारत्ती है। समस्त केंद्र शासित प्रदेशों में लक्षद्वीप सब से छोटा केंद्र शासित प्रदेश है। लक्षद्वीप द्वीप–समूह की उत्पत्ति प्राचीनकाल में हुए ज्वालामुखीय विस्फोटों से निकले लावा से हुई है। यह भारत की मुख्यभूमि केरल से लगभग 300 कि०मी० दूर पश्चिम दिशा में अरब सागर में स्थित है।

लक्षद्वीप द्वीप–समूह में कुल 36 द्वीप हैं परंतु जनजीवन केवल 7 द्वीपों पर ही है। देशी पयर्टकों को 6 द्वीपों पर जाने की अनुमति है, जबकि विदेशी पर्यटक केवल 2 द्वीपों (अगाती व बंगारम) पर ही जा सकते हैं।

मछली कारोबारः अरब महासागर में दुनिया की बेहतरीन मछली टुन्ना का लगभग 1 लाख टन का तथा लगभग इतना ही शार्क मछली का कारोबार है। बहुत ही बेहतर गुणवत्ता की टुन्ना यहां से निर्यात की जाती है।

नारियलः लक्षद्वीप का नारियल भी दुनिया का बेहतरीन नारियल है, जिसमें से लगभग 72% अच्छी क्वालिटी का तेल निकाला जाता है।

कोचीन से लक्षद्वीप एक क्रूज जाता है, जो आपको कावारत्ती, मिनिकॉय और कलपेनी आइलैंड का 5 दिन और 4 रातों का टूर करवाता है। इसका प्रति पर्यटक किराया लगभग रुपए 30,000/– होता है, जिसमें तीन समय का खाना और सुबह–शाम की चाय, बेहतर कमरा, वैलकम ड्रिंक्स, परमिट व हैरिटेज फीस आदि शामिल है, लेकिन वाटर स्पोर्टस आदि के व्यय इस खर्चे में शामिल नहीं होते। क्रूज के लिए अलग से परमिट लेने की जरूरत भी नहीं होती। खैर हमारे पास तो परमिट था ही।

हम दिल्ली से कोच्ची दोपहर को पहुँच गए और एक दिन कोच्ची का सुंदर शहर देखने के बाद अगले दिन सुबह लगभग सवा घंटे की उड़ान के बाद हम बहुत ही छोटे रनवे वाले अगाती द्वीप पर पहुँच गए, जो दुनियाँ का 5वाँ सबसे खतरनाक हवाई अड्डा है (चित्र 1)। ऐसा लगा जैसे समुद्र में ही जहाज उतर रहा हो। अगाती द्वीप को 36 द्वीपों वाले लक्षद्वीप के प्रवेश द्वार के नाम से भी जाना जाता है। अगाती में कदम रखते ही संसार का नजारा ही बदल गया हमारे लिए। अरब महासागर में बहुत ही छोटे–से इस द्वीप में कदम रखते ही हमने अपनी बाँहें फैला दीं, ताकि कुदरत के इस नजारे को हम अपने आगोश में भर सकें (चित्र 2)। यह जगह आज भी व्यावसायीकरण की दृष्टि से बिलकुल अछूती है। सफेद चमचमाते रेतीले समुद्र तट, अपरिवर्तित स्वच्छ पानी और फिरोजी नीले लैगून.....फिल्मों में जितने लुभावने लगते हैं, असल जिंदगी में भी यहाँ उतने ही लुभावने हैं। अगाती द्वीप में पानी के नीचे कि कई गतिविधियों मौजूद हैं जैसे स्कूबा डाइविंग, गोता लगाना, श्वास नली लगा कर गोता लगाना आदि। और मजे की बात ये है, कि ये सब खेल यहाँ बहुत सस्ते हैं, जिस कारण यहाँ आने वाले इन खेलों का पूरा लुत्फ

उठा सकते हैं। इस पूरे द्वीप में शराब का प्रयोग वर्जित है। द्वीप की लंबाई 6 किलोमीटर और अधिकतम चौड़ाई केवल

चित्र 1: अगाती: खतरनाक हवाई अड्डा

1000 मीटर है। सड़क के दोनों ओर अरब सागर का सौंदर्य देखते ही बनता है। (चित्र 3) 4 वर्ग किलोमीटर से कम का अगाती द्वीप सिर्फ 2 सैरगाहों वाला एक छोटा–सा द्वीप है।

लक्षद्वीप की राजधानी कावारत्ती

चित्र 2: आइए कुदरत को आगोश में भर लें (अगाती द्वीप)

अगाती से जाने का मन तो नहीं था, लेकिन दूसरी ओर मोटर बोट कावारत्ती ले जाने को हमारा इंतजार कर रही थी। पर्यटन में रुचि रखने वाले ज्यादातर पर्यटकों को ये यकीन ही नहीं होता है कि दुनिया में कोई इतनी अच्छी जगह भी हो सकती है।

खैर हम मोटर बोट पर बैठे और निकल पड़े कावारत्ती जाने के लिए। बहुत ही तेज गति से विशाल सागर को चीरती हुई स्पीड बोट का अपना ही आनंद था। खाने–पीने की अच्छी व्यवस्था थी। यह यात्रा इतनी आनंददायक थी कि थकान के बावजूद कोच्ची से आए सभी पर्यटकों को आँखे मूंदने से रोके हुए थी। हिलोरें मारता समुद्र, समुद्र और केवल समुद्र..... कभी–कभी तो और कुछ भी दिखाई नहीं देता था। रुक–रुक

चित्र 3: सड़क के दोनों ओर अरब सागर

कर कुछ विशालकाय मछलियाँ भी दिखाई दे जाती थीं। लगभग दो घंटे तीस मिनट की यात्रा के बाद हम पहुँच गए लक्षद्वीप की राजधानी कावारत्ती।

मोटर बोट पहुँचने पर हमारा इंतजार कर रही थी लक्षद्वीप के स्पोर्ट्स एंड टूरिज्म विभाग की गाड़ी और थोड़ी ही देर बाद हम पहुँच गए अपने टूरिस्ट रिजॉर्ट पर जहाँ एक खूबसूरत–सा स्वीट (2 कमरों का सैट) हमें दे दिया गया। हमने अपने कमरों में सामान रखा और तुरंत बाहर आ गए। हमारे लिए लगाई गई केन चेयर्स पर बैठते ही सामने दिखा कभी न भूलने वाला नजारा (चित्र 4)। वैलकम ड्रिंक्स पीते–पीते हमें लगा कि काश वक्त यहीं थम जाए। हमारा सारा पैसा वसूल हो चुका था। जी चाहा कि हम लंबी–लंबी सांसें ले लें और अगर बन पाए तो ढेर सारी ऑक्सीजन झोले में भरकर वापिस ले आएं। भगवान ने जैसे हमारी सुन ली हो ... और वक्त को रोक दिया उसने तीन दिनों के लिए।

हमारे कमरों के सामने था अथाह समुद्र का खूबसूरत लैगून। लैगून (Lagoon) और बीच (Beach) में यह अंतर होता है कि बीच पर समुद्र की लहरें सीधे टकराती हैं, लेकिन लैगून लगभग झील जैसा होता है। दूर समुद्र में सामने लहरें दिखाई देती हैं किंतु वे किनारे पर आने से पहले ही समुद्र के अंदर बनी एक प्राकृतिक दीवार से टकराती हैं, जो कि मछलियों के निवास और स्थिर समुद्री जीवों से बनी होती है.... जिन्हें कोरल्स कहते हैं। इस दीवार पर टकराने के बाद लहरें शांत हो जाती हैं और अंदर वाला समुद्र का हिस्सा एक प्राकृतिक झील जैसा बन जाता है, लेकिन होता समुद्र ही है। (चित्र 5 कोरल वाला चित्र)

वहाँ हम थे, कोरल सैंड थी और था अथाह समुद्र (अरब

चित्र 4: कावारत्ती लैगून का विहंगम दृश्य

सागर)। बस फिर तनाव की दुनियाँ से दूर आराम से लैगून में आगे बढ़ते हुए रंग–बिरंगी मछलियों को निहारने लगे.... शीशे के बाहर खड़े होकर नहीं, बल्कि खुद मछलियों जैसे ही बन कर। कितनी सुंदर होती है प्रकृति, कितनी सुंदर होती हैं मछलियाँ, कितना साफ होता है पानी... ये उसी दिन पता चला। वहाँ के समुद्र के किनारे की साथ–सुथरी और चमचमाती हुई रेत पर लेटने का अपना ही आनंद है। फिर कोरल रेत पर लेटकर, रेत की मकड़ी जैसे केकड़ों को देखना उनकी फोटो खींचना, उन्हें हाथों पर बिठाना.... वाह। (चित्र 6 सैंड क्रैब) यदि पूरा दिन भी लेटा जाए तो भी लगेगा कि काश थोड़ा समय और

चित्र 5: रिज़ॉर्ट पर अति सुंदर कोरल

मिल जाता। जी तो यह भी चाहता है कि ढेर सारे कोरल इकट्ठा कर लो, लेकिन वहाँ के नियमों के अनुसार द्वीप से कोरल लेकर जाने को एक संगीन अपराध माना जाता है।

बनाना राइड, नौकायन, कियाकिंग और फिर स्कूबा डाइविंग... क्या क्या नहीं था वहाँ। (चित्र 7) सच प्रकृति अपने पूरे यौवन में विराजमान थी वहाँ। स्कूबा डाइविंग का आनंद लेने के लिए हमें एक छोटी बोट पर बिठाया गया और दूर खड़ी बड़ी बोट पर उतारा गया, जिसमें कई ऑक्सीजन सिलेंडर पड़े थे। ट्रेनिंग तो हमें पहले भी दे दी गई थी, लेकिन बोट पर फिर से एक बार प्रैक्टिकल ट्रेनिंग दी गई और फिर हम सिलेंडर लगाकर उतर गए समुद्र के बीच और रंगबिरंगी मछलियों और विभिन्न प्रकार के सुंदर से सुंदर समुद्री जीवों को नजदीक से निहारने का नजारा इससे सुंदर क्या हो सकता है, हम सोच भी नहीं सकते। मछलियों को कुछ खिलाने का और उन्हें हाथ में

चित्र 6: मन को गुदगुदाती रेत की मकड़ियाँ

लेने का सुंदर मौका। पानी के बीचो–बीच मुँह से साँस लेने का (स्कूबा डाइविंग) हमारा पहला अनुभव था (चित्र 8)। फिर जब बाहर निकले तो ट्रेनर्स ने हमें ऑवले खिलाए, समुद्र में डुबोकर, समुद्र के नमक का मजा लेते हुए सच में आनंद आ गया।

चलते–चलते मैं आपको एक और रुचिकर बात बताता चलूँ कि पूरे कावारत्ती द्वीप समूह में हमें एक भी डॉगी दिखाई नहीं दिया। पूछने पर पता चला कि वहाँ की शत्–प्रतिशत आबादी मुस्लिम है और वे कुत्ते नहीं पालते। वैसे मुस्लिम तो काश्मीर

चित्र 7: अरब सागर में कियाकिंग

में भी होते हैं, किंतु वहाँ तो खूब डॉगी होते हैं। खैर कुत्ते तो हमारे बहुत नजदीकी दोस्त होते हैं इसलिए उनके बिना वहाँ हमें कुछ अजीब–सा लगा।

मछली का कारोबार

हमारे रिजॉर्ट के कुछ ही गज की दूरी पर मछली सुखाने का

चित्र 8: स्कूबा डाइविंग

काम चल रहा था। अरब महासागर में दुनिया की बेहतरीन मछली टुन्ना (विटामिन "Mh" का बेहतर स्रोत) का लगभग 1 लाख टन का तथा लगभग इतना ही शार्क मछली का कारोबार है। बहुत ही बेहतर गुणवत्ता की टुन्ना यहाँ से निर्यात की जाती है। रात के भोजन में हमें टुना भी परोसी गई।

नारियल

हमें बताया कि लक्षद्वीप में नारियल, नारियल की लकड़ी और नारियल के पत्तों के अलावा जो कुछ भी आप देख रहे हैं, सभी कुछ बाहर से लाया गया है। जो नारियल हमने वहाँ खाए उनका स्वाद ही अलग था। बहुत मोटी परत और खाने में बिलकुल ही नरम। हमें यह भी पता चला कि लक्षद्वीप का नारियल दुनिया का बहुत बेहतरीन नारियल है, जिसमें लगभग 72% अच्छी क्वालिटी का तेल होता है, जो लक्षद्वीप को इस कारोबार के लिए दुनिया के मानचित्र पर अंकित करता है ।

अगले दिन लाइट हाउस देखने का कार्यक्रम बनाया गया। 11.00 बजे के करीब गाड़ी आई और हम चल चल पड़े लाइट हाउस की ओर। सड़क के दोनों ओर महासागर के बीच चलते हुए और समुद्र के पानी को पीने लायक पानी बनाने वाले फिल्ट्रेशन प्लांट को देखने के बाद हम वहाँ पहुँचे। 37 मीटर ऊँचे लाइटहाउस की सीढ़ियों पर बहुत ध्यान से चढ़ना पड़ा। और सबसे ऊँचे स्थान से पूरे कावारत्ती का विहंगम दृश्य सामने था। दिखने में लगभग एक पैर की शक्ल का है कावारत्ती। ऊपर से केवल और केवल नारियल का जंगल और उसके चारों ओर अरब सागर। लाइटहाउस से नीचे देखने में डर भी लगता था और रूह भी काँप उठती थी कुछ लोग तो वहाँ बैठ ही गए थे। फिर भी नज़ारा इतना खूबसूरत था कि शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। (चित्र 9)

उसके बाद हम चले हैलीपैड देखने जो बिलकुल ही नीचे के किनारे पर था। अद्भुत और अविस्मरणीय। वहाँ की एक महिला (सबीना) से हमारी पारिवारिक दोस्ती हो गई और शाम को उनके घर हमें आमंत्रित किया गया। सबीना वहाँ के स्कूल में हिंदी पढ़ाती थीं। यहाँ आपको बताता चलूँ कि लक्षद्वीप की मुख्य भाषा मलयालम है और कम लोग ही हिंदी जानते हैं, जिनमें से सबीना एक थी। शाम को कितना इंतजार था उन्हें हमारा, कितना प्यार था उनकी सादगी में। पॉलिथिन से बहुत

चित्र 9: लाइट हाउस का नजारा

दूर थे हम... नारियल के पत्ते में पैक किए हुए नारियल के स्वादिष्ट लड्डू बहुत ही प्यार से खिलाए भी गए और घर के लिए दिए भी गए।

पता ही नहीं चला कब तीन दिन निकल गए। एक एक पल संजोने लायक, एक एक पल खूबसूरत। बस दिन आ गया वापिस बोट में बैठने का.... स्पीड बोट की वही रफ्तार थी और कावारत्ती तेजी से पीछे छूटता जा रहा था...। फिर पहुँच गए

अगाती। कावारत्ती वाले कुछ पर्यटक हमें हवाई अड्डे पर मिले जो बंगारम द्वीप होकर आए थे। उन्होंने हमें बताया कि बंगारम का अलग ही मजा है और वहाँ की स्कूबा तो बिलकुल ही निराली थी.... थोड़ा अफसोस हुआ कि हम बंगारम नहीं देख सके। अगाती आने के बाद पर्यटक बंगाराम द्वीप जरूर जाएं जो यहाँ का आकर्षण होने के अलावा एक बेमिसाल जगह है बंगारम ही लक्षद्वीप का वो एक मात्र द्वीप है जहाँ शराब की बिक्री की मनाही नहीं है। इस टापू पर शार्क मछली और समुद्री कछुए को देखा जा सकता हैं। यहाँ विंडसर्फिंग, पेरासेलिंग, स्नोर्कलिंग, कयाकिंग का आनंद लिया जा सकता है। यहाँ की स्कूबा डाइविंगकी विशेषता यह है कि आप चलते–चलते अचानक ही गहरे समुद्र में डाइविंग लगते हैं। (चित्र 10)

चित्र 10: बेहद खूबसूरत बंगारम द्वीप

द्वीप इतने हैं कि किसी–ने–किसी को कहीं–न–कहीं तो अफसोस रहेगा ही। कितना भी घूम लीजिए फिर भी कुछ–न–कुछ तो छूटेगा ही। बहरहाल, जो देखा उन्हीं यादों में कुछ साल बसे रहना ही अपने आप में पूरा आनंद है। कभी मौका मिले तो आप भी जरूर जाइएगा... लक्षद्वीप। (चित्र 11)

चित्र 11: बंगारम द्वीप में सूर्यास्थ

बहुत प्यार करने वाले बहुत भोले लोग हैं वहाँ के! हमसे भी उनका प्यार हमेशा के लिए बन गया। खुशी होती है मुझे यह बताते हुए की कुछ साल बीतने के बाद आज भी हमारे घर में नारियल का तेल कावारत्ती से सबीना ही भेजा करती हैं।

लैगून (Lagoon) और बीच (Beach) में यह अंतर होता है कि बीच पर समुद्र की लहरें सीधे टकराती हैं, लेकिन लैगून लगभग झील जैसा होता है।

1. मैं आपसे सिर्फ इतना ही कहना चाहता हूँ कि यदि आप एक पॉइंट पर जाकर वहाँ से फिर बस या कैब पकड़कर दूसरे पॉइंट पर और फिर तीसरे पर जाना चाहते हैं, तो आप लक्षद्वीप बिलकुल भी न जाएं और यदि आप आराम से, इत्मीनान से कुछ दिन प्रकृति की गोद में रहना चाहते हैं... रोजमर्रा की दौड़–धूप से दूर, तो पूरे भारत में सबसे हसीन जगह होगी... लक्षद्वीप.... आप जरूर जाएं।
2. लक्षद्वीप (संस्कृतः लक्षः लाख+द्वीप) भारत के दक्षिण–पश्चिम में हिंद महासागर में स्थित एक भारतीय द्वीप–समूह है। समस्त केंद्र शासित प्रदेशों में लक्षद्वीप सब से छोटा केंद्र–षासित प्रदेश है। लक्षद्वीप द्वीप–समूह की उत्तपत्ति प्राचीनकाल में हुए ज्वालामुखीय विस्फोट से निकले लावा से हुई है। यह भारत की मुख्यभूमि से लगभग 300 कि०मी० दूर पश्चिम दिशा में अरब सागर में स्थित है। लक्षद्वीप द्वीप–समूह में कुल 36 द्वीप हैं, परंतु जनजीवन केवल 7 द्वीपों पर है। देशी पयर्टकों को 6 द्वीपों पर जाने की अनुमति है, जबकि विदेशी पर्यटक केवल 2 द्वीपों (अगाती व बंगारम) पर ही जा सकते हैं।

नारियलः लक्षद्वीप का नारियल भी दुनिया का बेहतरीन नारियल है, जिसमें से लगभग 72% अच्छी क्वालिटी का तेल निकाला जाता है। इन दिनों तो तेल निकालने की मिलें भी लक्षद्वीप में लगा ली गई हैं।

लक्षद्वीप जाने के लिए पुलिस वैरिफिकेशन के बाद लक्षद्वीप सरकार से परमिट लेना होगा और जब तब वहाँ रहने का बंदोबस्त नहीं है, तब तक कोचीन से बोर्डिंग पास भी नहीं मिलेगा।

कावारत्ती की रोचक जानकारियाँ

1. नारियल के सिवा वहाँ का अपना कुछ भी नहीं हैं, किंतु नारियल पानी पीने के लिए आपको मुश्किल पेश आएगी, क्योंकि हर घर में तीन–चार पेड़ नारियल के पेड़ हैं और पर्यटक वहाँ बहुत ही कम हैं। तो किसे बेचेंगे नारियल? हाँ किसी को कहकर आप नारियल तुड़वा सकते हैं और जितना चाहें, मुफ्त में पी सकते हैं।

2. ऐसा द्वीप समूह जहाँ कोई पैट्राल पंप नहीं है। ड्रम में से एक कार को महीने में केवल 20 लिटर और एक स्कूटर को 10 लिटर पैट्रोल मिलता है।

3. शादी के बाद लड़का, लड़की के घर जाता है। घर जमाई बनकर रहता है। क्योंकि सास–बहु इकट्ठे नहीं रहतीं, इसलिए झगड़े का सवाल ही नहीं। वैसे वहाँ लड़कियां, लड़कों से अधिक पढ़ी–लिखी होती हैं। सभी पुरुष समुद्र में मछली पकड़ने का काम करते हैं।

मतभेद और मनभेद

सतपाल सिंह
वरिष्ठ सहायक

मतभेदः मतभेद एक समाज में विभिन्न धार्मिक, राजनीतिक, या सामाजिक मुद्दों पर लोगों के विचारों और मतों के भेद को दर्शाता है। इसमें लोग अलग–अलग धर्म, राजनीतिक पार्टियों, जाति, समुदाय, आदि में समर्थन देने या विरोध करने के कारण विभाजित होते हैं।

मतभेद समाज में विवाद और असमंजस को उत्पन्न कर सकता है और समाज की एकता को खतरे में डाल सकता है। यह धार्मिक या राजनीतिक समूहों के बीच विभाजन का कारण बन सकता है और एक अखंड समाज के लिए एक चुनौती प्रस्तुत कर सकता है। ये मतभेद अक्सर विवादों और उदासीनता का कारण बनते हैं।

मनभेदः मनभेद एक समाज में विभिन्न समूहों या व्यक्तियों के मनों में भेद को दर्शाता है। इसमें लोग अपने भाषा, धर्म, जाति, क्षेत्रीय आधार, आर्थिक स्थिति आदि के कारण अलग–अलग दृष्टिकोण रखते हैं और एक–दूसरे से अलग हो जाते हैं। मनभेद समाज में विशेषता और भेदभाव को बढ़ा सकता है, जिससे समाज में असमानता और विभाजन की स्थिति पैदा हो सकती है। मनभेद से अर्थ होता है मनों में भेद या मतभेद, जिससे लोग एक–दूसरे से अलग हो जाते हैं और समाज में एकता की कमी हो जाती है। यह मानसिक भेद विभिन्न समूहों या व्यक्तियों के बीच जाती–धर्म, भाषा, क्षेत्रीय आधार, आर्थिक स्थिति आदि से उत्पन्न हो सकते हैं।

मतभेद और मनभेद दोनों शब्द भारतीय संस्कृति और इतिहास में प्रयोग होने वाले शांति और समाज में समानता के मुद्दे को संक्षेप में दर्शाते हैं। ये शब्द सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक मामले में आमतौर पर प्रयोग किए जाते हैं। मतभेद और मनभेद दोनों एक समाज में दो अलग–अलग अवस्थाओं को दर्शाते हैं, इन दोनों के बीच अंतर को समझना और उन्हें दूर करने का प्रयास करना समाज के लिए महत्वपूर्ण है। समाज में समानता, समरसता, समझदारी और सहयोग को बढ़ावा देने से मतभेद और मनभेद को कम किया जा सकता है और एक एकजुट समाज का निर्माण किया जा सकता है। यह सभी के हित में होगा और समृद्धि और शांति को बढ़ाएगा। मतभेद और मनभेद दोनों के निवारण के लिए, समाज में समानता, समरसता, समझदारी और सहयोग को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण है। सामाजिक समानता, सभ्यता, और धार्मिक संप्रदायों के बीच समझदारी और समरसता को बढ़ाने से लोग एकता के अनुभव का आनंद ले सकते हैं।

मतभेद और मनभेद दोनों में बहुत अंतर होता है। मतभेद से मतलब विचारों में अंतर होता है। नया विचार से मनुष्य विकास की ओर बढ़ता है। परंतु मनभेद से मतलब दिलों में अंतर होता है। इस कारण व्यक्ति विनाश की ओर बढ़ता है एक दूसरे से दूर होने लगता है।

इसलिए जितना हो सके मतभेद रखें पर मनभेद न रखें। दो दोस्त अक्सर घंटों विचार विमर्श करते हैं कि हम दोनों की सोच अलग है, विचार अलग है, लेकिन फिर भी हम दोनों बहुत अच्छे दोस्त है, ऐसा क्यों है ? क्या कारण है ? शायद इसी को कहते हैं कि मतभेद हो सकता है, परंतु मन भेद नहीं होना चाहिए।

काफी बार ऐसा देखा गया है कि कुछ लोग मतभेद की वजह से मनभेद बना लेते हैं, जिससे व्यक्तिगत संबंधों में दूरी बन जाती है। मतभेद से मतलब है सोच में अंतर होना विचारों में अंतर होना, जबकि मनभेद से मतलब है दिलों में अंतर होना। अलग–अलग मतों से लोग साथ भी रह सकते हैं, काम भी कर सकते हैं, नए–नए विचार भी उपज सकते हैं, लेकिन अलग–अलग मनों से न तो लोग साथ रह सकते हैं न ही साथ काम कर सकते हैं, बल्कि संबंध भी खराब हो जाते हैं।

कभी–कभी लोगों की आपस में नहीं बनती, लेकिन फिर भी उनके संबंध बहुत अच्छे होते हैं।

वैचारिक संबंध और व्यक्तिगत संबंध दोनों अलग–अलग हैं। कभी–कभी लोग मतभेद से उपजे अज्ञान के कारण किसी व्यक्ति विशेष से मनभेद बना लेते हैं। हमे किसी भी रूप में मतभेद को अपने उपर हावी नहीं होने देना, चाहिए वरना कभी–न–कभी हमारे अंदर हीन भावना स्वार्थ जलन आदि घर कर लेगी। तभी हम सही बुरे की पहचान कर पाएंगे। मतभेद से कही–न–कही हमारा विकास भी रुकता है।

कभी–कभी ऐसा होता है कि कोई हमारे मत या विचार से सहमत नहीं होता है और हमारा विरोध करता है। हमें इसको सकारात्मक रूप से लेना चाहिए, न की यह सोचना चाहिए कि विरोध करने वाला हमारा दुश्मन तो नहीं है या हमसे ईर्ष्या तो नहीं रखता है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि उसकी हर बात गलत हो।

बड़े से बड़ा ज्ञानी व्यक्ति का मत या विचार गलत भी हो सकता है, इसलिए कभी भी इतना अहम नहीं होना चाहिए कि जो हमारा समर्थन करे, वो सही है और जो हमारा समर्थन न करे वो गलत है। चापलूसों ओर चुगलखोरों से हमेशा सावधान रहना चाहिए। अगर कोई मत या विचार सही है और ग्रहण करने योग्य है तो हमें उसका स्वागत करना चाहिए। किसी भी व्यक्ति के मतों या विचारों के विरोध या समर्थन को व्यक्तिगत नहीं लिया जाना चाहिए, क्योंकि गलती किसी भी व्यक्ति से हो सकती है और कभी कोई व्यक्ति सही भी हो सकता है।

हो सके तो मतभेद को मनभेद में तब्दील न करें। मतभेद और मनभेद एक जैसे लगते हैं, पर उनका मतलब बिल्कुल अलग है। मतभेद होना स्वाभाविक है पर उस मतभेद को मनभेद बना लेना व्यक्ति के कमजोर व्यकितत्व का परिचायक है। आज के समय में यदि कोई हमारे विचारों से सहमत नहीं है, तो हम उसे अपना विरोधी मान लेते हैं और उसके खिलाफ अपने मन में एक दूरी–सी बना लेते हैं। यह सही नहीं है और यह हमारी अपरिपक्वता को दर्शाता है। मतभेद, मनभेद में ना बदले इसके लिए हमें स्वयं को सामंजस्य के लिए तैयार करना होगा।

हृदय और विचारों में विस्तार ही इसका उपाय है। अगर कोई हमारे विचारों से मतभेद जाहिर करें, तो उसे स्वीकार करें और मनभेद में ना बदलने दें। हमारे मन में अपार भावनाएँ, वृत्तियाँ, रुचियाँ होती हैं, जो व्यक्तिगत होती हैं। मत का अर्थ है कुछ विशेष मान्यताओं को मानकर समूहों में जीवन जीना, जैसे वामपंथी, बौद्ध मत, कबीरपंथी आदि। छोटे रूप में अपने विचार रखना किसी व्यक्ति, कार्य, व्यवस्था पर सूक्ष्म तरीका है। देश की सरकार बनाने के लिए मतदान, जिसे एक एक व्यक्ति अपने मत द्वारा विचार, मान्यता प्रकट करता है, और शासन चलाने हेतु निर्वाचन द्वारा एक जैसी मान्यताओं वाले समूह का निर्माण। इस तरह मनभेद व्यक्तिगत तथा मतभेद सामूहिक दिखाई देता है।

'मतभेद' से तात्पर्य है किसी विषय–विशेष यानी मुद्दे पर अंतर 'मनभेद' से तात्पर्य है लोगों की मानसिकता में अंतर। वैसे कुछ मतभेद इतने गहरे जा सकते हैं कि वे मनभेद में तब्दील हो जाएं या फिर कोई भी मतभेद, मनभेद को परिलक्षित कर सकता है। पर अक्सर ऐसा होता है कि बहुतेरे मतभेद जब इकठ्ठा हो जाते हैं, तो इनसान को पता चलता है उसका अगले से मनभेद ही है।

मतभेद का अर्थ स्पष्ट है, यानि कि 'मत' में भिन्नता। शायद मतभेद शब्द से काफिया मिलाते हुए मनभेद शब्द का सृजन कर लिया गया है, जिसका अर्थ 'दो दिलों का न मिलना' माना जाता है। वास्तव में यह हिंदी भाषा का एक मानक शब्द नहीं है। मतभेद होने में कोई बुराई नहीं। यह तर्कशक्ति के विकास में आवश्यक भी है पर मनभेद नहीं होना चाहिए। मनभेद से रिश्तों में दरारें आ जाती है।

जब विचारों में भेद होता है, तो उसको मत भेद कहते हैं और जब किसी को हम पसंद नहीं करते या उससे चिढ़ते हैं, तो उसको मनभेद कहते हैं। मतभेद दूसरों के अलग–अलग फैसले को दर्शाता है, जबकि मनभेद अपने मन का कारण है। कोई मतभेद होगा ही नहीं अगर हम ये समझ जाए कि सामने वाला गलत नही बस, उसकी सोच अलग है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और उसके उपयोग

नेहा विनायक
कंप्यूटर प्रोग्रामर

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) मशीनों, विशेषकर कंप्यूटर सिस्टम द्वारा मानव प्रक्रियाओं के अनुकरण को संदर्भित करता है। इन प्रक्रियाओं में सीखना, तर्क करना, समस्या–समाधान, धारणा, भाषा समझ और निर्णय लेना शामिल हैं। एआई प्रौद्योगिकियों का लक्ष्य ऐसे सिस्टम बनाना है जो ऐसे कार्य कर सकें जिनके लिए आमतौर पर मानव बुद्धि की आवश्यकता होती है, जो अक्सर गति, सटीकता और पैमाने के मामले में मानव क्षमताओं से आगे निकल जाते हैं।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की अवधारणा 1950 के दशक में एलन ट्यूरिंग और जॉन मैकार्थी जैसे अग्रदूतों के काम से शुरू हुई।

एआई अब केवल चर्चा का शब्द नहीं रहाय यह हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया हैद्य समाज के हर पहलू को इस तरह से प्रभावित कर रहा है जैसा हम कुछ साल पहले केवल सपना देख सकते थे।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग:

मशीन लर्निंग: एआई काफी हद तक मशीन लर्निंग एल्गोरिदम पर निर्भर करता है, जो सिस्टम को डेटा से सीखने और समय के साथ अपने प्रदर्शन में सुधार करने की अनुमति देता है। इस तकनीक का उपयोग विभिन्न अनुप्रयोगों में किया जाता है, जिस में छवि और वाक्पहचान, प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण और पूर्वानुमानित विश्लेषण शामिल हैं।

प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (एनएलपी): एनएलपी कंप्यूटर को मानव भाषा को समझने, व्याख्या करने और उत्पन्न करने में सक्षम बनाताहै। इसका उपयोग चौटबॉट्स, वर्चुअल असिस्टेंट, भाषा अनुवाद, भावना विश्लेषण और सामग्री निर्माण में किया जाता है।

कंप्यूटर विजन: कंप्यूटर विजन मशीनों को छवियों और वीडियो जैसी दुनिया की दृश्य जानकारी की व्याख्या और समझने में सक्षम बनाताहै। इसका उपयोग चेहरे की पहचान, वस्तु का पता लगाने, चिकित्सा छवि विश्लेषण और स्वायत्त वाहनों में किया जाता है।

रोबोटिक्स: एआई–संचालित रोबोट स्वायत्त रूप से या न्यूनतम मानवीय हस्तक्षेप के साथ कार्य करने के लिए डिजाइन किए गए हैं। इनका उपयोग विनिर्माण, स्वास्थ्य देखभाल, कृषि और अन्वेषण में किया जाता है।

स्वायत्त प्रणाली: एआई स्वायत्त वाहनों और ड्रोन का एक प्रमुख घटक है, जो उन्हें सेंसर सेवास्त विक समय के डेटा के आधार पर नेविगेट करने और निर्णय लेने की अनुमति देता है।

हेल्थ केयर: एआई का उपयोग चिकित्सा छवि विश्लेषण, दवाखोज, रोग भविष्यवाणी और व्यक्तिगत उपचार योजनाओं में किया जाता है। यह डॉक्टरों को अधिक सटीक निदान करने और उचित उपचार सुझाने में मदद कर सकता है।

वित्त: एआई का उपयोग एल्गोरिथम ट्रेडिंग, धोखाधड़ी का पता लगाने, क्रेडिट स्कोरिंग और जोखिम मूल्यांकन के लिए किया जाता है। यह बड़ी मात्रा में डेटा का त्वरित विश्लेषण कर सकता है और डेटा–संचालित निवेश निर्णय ले सकता है।

मनोरंजन: एआई का उपयोग स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म पर सामग्री अनुशंसाओं को निजीकृत करने, फिल्मों में डिजिटल चरित्र और प्रभाव बनाने और बुद्धिमान एनपीसी के साथ वीडियो गेम विकसित करने के लिए किया जाता है।

वर्चुअल असिस्टेंटः सिरी, गूगल असिस्टेंट और एलेक्सा जैसे एआई–संचालित वर्चुअल असिस्टेंट उपयोगकर्ताओं को प्राकृतिक भाषा इंटरैक्शन के माध्यम से कार्य करने, सवालों के जवाब देने और स्मार्ट उपकरणों को नियंत्रित करने में मदद करते हैं।

शिक्षाः एआई का उपयोग अनुकूलीशिक्षण प्लेटफार्मों के लिए किया जाता है जो व्यक्तिगत छात्रों के लिए शैक्षिक सामग्री को निजीकृत करते हैं, असाइनमेंट की ग्रेडिंग में सहायता करते हैं और बुद्धिमान ट्यूशन प्रदान करते हैं।

सुरक्षाः एआई को साइबर सुरक्षा में खतरे का पता लगाने, नेटवर्क निगरानी और विसंगति का पता लगाने, संभावित सुरक्षा उल्लंघनों की पहचान करने और उन्हें कम करने में मदद करने के लिए नियोजित किया जाता है।

पर्यावरण निगरानीः एआई पर्यावरणीय स्थितियों की निगरानी और प्रबंधन के लिए बड़े डेटा सेट का विश्लेषण कर सकता है, जैसे मौसम के पैटर्न की भविष्यवाणी करना, प्रदूषण के स्तर का आकलन करना और वन्यजीवों के व्यवहार पर नजर रखना।

कृषिः एआई–संचालित एप्लिकेशन फसल प्रबंधन को अनुकूलित कर सकते हैं, मिट्टी की स्थिति की निगरानी कर सकते हैं और रोपण और कटाई जैसे कार्यों को स्वचालित कर सकते हैं।

आपूर्ति श्रृंखला और लॉजिस्टिक्सः एआई का उपयोग मांग पूर्वानुमान, मार्ग अनुकूलन, इन्वेंट्री प्रबंधन और डिलीवरी शेड्यूलिंग के लिए किया जाता है।

ऊर्जा प्रबंधनः एआई इमारतों में ऊर्जा खपत को अनुकूलित कर सकता है, उपकरण विफलताओं की भविष्यवाणी कर सकता है और पावर ग्रिड की दक्षता में सुधार कर सकता है।

ये विभिन्न उद्योगों और क्षेत्रों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के विविध और तेजी से बढ़ते अनुप्रयोगों के कुछ उदाहरण हैं। एआई लगातार विकसित हो रहा है और जिस तरह से हम प्रौद्योगिकी और हमारे आसपास की दुनिया के साथ बातचीत करते हैं उसे आकार दे रहा है।

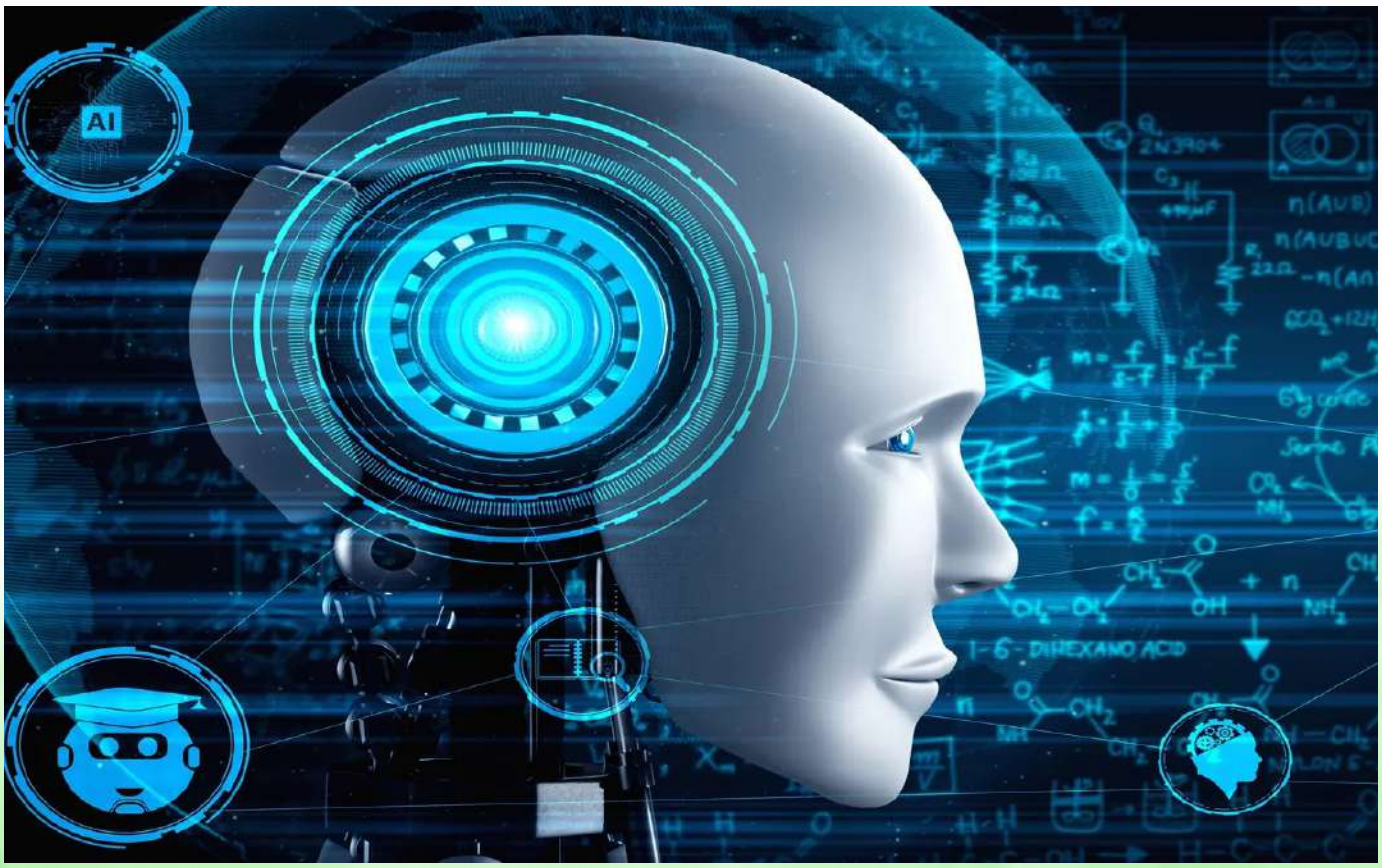

अंधा प्रेम

स्त्री को
किसी से अंधा प्रेम नहीं करना चाहिए....
'अंधा प्रेम'
छीन लेता है
सोचने–समझने की
तर्क करने की
विरोध करने की शक्ति....
और बना देता है उसे
निरा गाय....!!!!!
बिना सींगो वाली...!

और पिता भाई प्रेमी या पति
जिनसे भी वह आँख मूँद कर प्रेम करती है
दोहन करते रहते हैं उसकी भावनाओं काकृ
और उसे लगता है,
वे उससे प्रेम करते हैं....!

अंधा प्रेम स्त्री की मति को भी अंधा ही बना देता है
वह देख नहीं पाती पिता भाई प्रेमी या पति द्वारा किया गया दुत्कार!
वह देख नहीं पाती
जब वे उसे
उसकी इच्छाओं
उसकी भावनाओं का बलिदान करने पर
विवश कर देते हैं,
अपनी झूठी शान के लिए...!
वह देख नहीं पाती
जब वे उसकी सुरक्षा के नाम पर
छीन लेते हैं उसकी स्वतंत्रता!!!!
और समय–समय पर
पढ़ते हैं उसके कर्तव्यों की पोथी!!!
और वह भूल जाती है उसके अधिकार
और रटती रहती है,
"पिता उवाच.....
पति उवाच....."
और यही सब देती है विरासत में
एक और स्त्री को!

जब पिता अपना बोझ(?) किसी और पर डाल देता है...
वह बंध जाती है
किसी और खूँटे पर..
और कोल्हू के बैल की भांति
पूरा जोर लगाकर
गोल–गोल घुमती रहती है
उसके(?) संसार के चारों ओर
सुबह से रात तकदृ
और
रात से फिर सुबह तक!!!!!

स्त्री सब से प्रेम करती है...
पर उसे कोई प्रेम नहीं करता..!
उसके न होने पर
सबकी दिनचर्या
हो जाती है अस्तव्यस्त
फिर क्या..?
उसे एक दिन के 'निजी अवकाश' की
सुविधा भी नहीं दी जाती

सबको उसकी आवश्यकता है....
यही उसके लिए संतोषप्रद हो जाता है
जिसे वह प्रेम(?) समझती है
वह नहीं जानती
कि
उनके इस आवश्यकताजनित 'प्रेम' का
वास्तविक प्रेम से दूर–दूर तक कोई संबंध नहीं है

स्त्री को किसीसे भी ऐसा अंधा प्रेम नहीं करना चाहिए....
क्योंकि
केवल और केवल उसके लिए
प्रेम की परिभाषा
उन्होंने 'गुलामी' गढ़ी है...!!!!!

– डॉ मेघा आचार्य
हिंदी अधिकारी

'द मार्केटिंग गीता' : पुस्तक समीक्षा

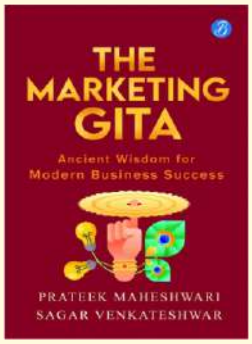

पुस्तक: द मार्केटिंग गीता
लेखक: डॉ. प्रतीक माहेश्वरी (आई.आई.एफ.टी, दिल्ली), सागर वेंकटेश्वर (सिटी ग्रुप)
प्रकाशक: सृष्टि पब्लिशर एवं डिस्ट्रीब्यूटर
पृष्ठ संख्या: 300
मूल्य रू 449/–
ISBN: 9789395192231

श्री आयुष बाडोले
अधिकारी (प्रत्यायन एवं रैंकिंग)

आधुनिक व्यावसायिक परिदृश्य जटिल चुनौतियाँ से भरा हुआ हैं। इन चुनौतियाँ का सामना करने के लिए बुद्धिमत्ता की आवश्यकता है। लेकिन आज विश्व में बुद्धिमत्ता की कमी और ज्ञान की अधिकता सर्वव्यापी है। ऐसी स्थिति में हाल ही में प्रकाशित पुस्तक 'द मार्केटिंग गीता' विभिन्न हितधारकों के लिए एक समाधान के रूप में उभर सकती हैं।

भारतीय वेद और पुराण सर्वदा व्यापक सिद्धांत के रूप में जाने जाते हैं, जो अनादि काल से हमारे जीवन को आगे बढ़ाने में मार्गदर्शक रहे हैं। विष्णु के दशावतार की पौराणिक कहानियों को माध्यम बनाकर यह पुस्तक व्यावहारिक व्यापार जगत की सभी विपणन दुविधाओं के लिए समाधान प्रदान करने का प्रयास करती है, जिसमें आधुनिक प्रबंधक अक्सर खुद को फँसा हुआ पाते हैं। इस पुस्तक में व्यवसाय और विपणन रणनीति को एक बहुत ही नवीन और कल्पनाशील आध्यात्मिक तरीके से पेश किया गया है।

ऐसे कई लोग हैं, जो हमारे प्राचीन ग्रंथों की प्रासंगिकता पर सवाल उठाते हैं। यह पुस्तक उन सभी लोगों को एक उत्तर देने का प्रयास है। कालातीत कहानियों को चित्रित कर, उन्हें वास्तविक दुनिया के परिदृश्यों पर लागू करते हुए, यह पुस्तक पाठकों को एक नया दृष्टिकोण प्रदान करती है। इस पुस्तक में समृद्ध दंतकथाओं और कहानियों को मनोरम ढंग से पेश किया गया है और प्राचीन पौराणिक कथाओं और समकालीन व्यापार दुनिया के बीच की खाई को पाटने का प्रयास किया गया है। साथ ही, यह पुस्तक पौराणिक तथ्यों की छिपी हुई शक्ति और क्षमता को उजागर भी करती है।

'द मार्केटिंग गीता' के माध्यम से लेखकों ने किसी ब्रांड की शुरुआत से लेकर विलुप्त होने तक की यात्रा को समझने के लिए मार्केटिंग और पौराणिक कथाओं की अलग–अलग दुनिया को खूबसूरती से एक साथ बुनने में कामयाबी हासिल की है। एक ब्रांड के निर्माण की प्रक्रिया और उससे जुड़ी चुनौतियों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। यह पुस्तक 10 अध्यायों में विभाजित है। हर एक अध्याय भगवान विष्णु के एक अवतार को आधार बनाता हुआ बिजनेस और मार्केटिंग के सिद्धांतों पर प्रकाश डालता है और इनकी समसामयिक व्यावसायिक परिदृश्य में उपयोगिता को रेखांकित करता है।

पुस्तक के लिए प्राक्कथन प्रोफेसर हिमांशु राय (डायरेक्टर, आईआईएम इंदौर) ने लिखा है। यह पुस्तक ऐसे किसी भी व्यक्ति के लिए पढ़ने में आनंददायक है, जो व्यवसाय एवं मार्केटिंग को जानने में रुचि रखता है या फिर कोई व्यवसाय शुरू से कैसे फलता–फूलता है या पौराणिक कथाओं की संभावनाओं में रुचि रखता है। एक सरल और आकर्षक पठन, द 'मार्केटिंग गीता' प्रत्येक प्रबंधन और व्यावसायिक विद्यार्थियों, विपणन पेशेवरों, कामकाजीयों, व्यावसायिकों और उद्यमी के लिए उपयोगी साबित हो सकती है।

वाणिज्य और लघुउद्योग मंत्रालय
सरल हिंदी वाक्यकोश

क्रम सं S.No.	English Sentence	हिंदी वाक्य
1	Start-up India mobile app has been developed to provide information and the go services to start-up companies.	स्टार्टअप कम्पनियों को सूचना तथा गो सर्विसेज उपलब्ध कराने के लिए स्टार्टअप इंडिया मोबाइल एप बनाया गया है।
2	Funding of start-ups in India has seen a rising trend.	भारत में स्टार्टअप्स के वित्तपोषण में बढ़ोत्तरी देखी गई है।
3	Assured pension is a voluntary and contribution based central sector scheme.	स्थायी पेंशन स्वैच्छिक तथा अंशदान आधारित केंद्रीय क्षेत्र स्कीम है।
4	This department has taken various steps to encourage the private sector.	इस विभाग ने निजी क्षेत्र को प्रोत्साहित करने के लिए अनेक कदम उठाए हैं।
5	To support small scale industry there is a credit guarantee scheme.	लघु उद्योग की सहायता के लिए एक ऋण गारंटी स्कीम उपलब्ध है।
6	A self certified undertaking is sufficient for this purpose.	इस उद्देश्य के लिए एक स्वप्रमाणित शपथ–पत्र पर्याप्त है।
7	Stakeholders, E-commerce companies, traders, kirana stores association, and retailers have been consulted.	स्टेकहोल्डर्स, ई–कॉमर्स कंपनियों, व्यापारियों, किराना स्टोर एसोसिएशनों तथा खुदरा व्यापारियों से परामर्श किया गया है।
8	All handholding facilities are being provided to new startup companies.	नई स्टार्टअप कंपनियों को सभी सहायक सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं।
9	Auto sector needs more focus.	ऑटो सेक्टर पर अधिक ध्यान देने की जरूरत है।
10	Domestic industry with quality infrastructure has the potentiality to become globally competitive.	बेहतरीन अवसरंचना वाले स्वदेशी उद्योग में वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनने की क्षमता है।
11	A proactive approach has been adopted by the Government.	सरकार द्वारा सक्रिय दृष्टिकोण अपनाया गया है।
12	Micro, Small and medium Entrepreneur sector is being promoted by the government.	सरकार द्वारा सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम क्षेत्र को प्रोत्साहित किया जा रहा है।
13	Fertile land shall not be acquired.	उपजाऊ भूमि का अधिग्रहण नहीं किया जाएगा।
14	Land management falls under the legislative and administrative jurisdiction of the States.	भूमि प्रबंधन का वैधानिक तथा प्रशासनिक क्षेत्राधिकार राज्यों का होता है।

क्रम सं S.No.	English Sentence	हिंदी वाक्य
15	These figures are provisional.	ये आंकड़े अंतिम हैं।
16	Unnecessary requirements have been done away with.	अनावश्यक अपेक्षाएं समाप्त कर दी गई हैं।
17	The business environment has been benefitted by this liberal policy.	इस उदार नीति से व्यवसाय परिवेश को लाभ हुआ है।
18	A district level business reform action plan has been prepared by this department.	इस विभाग द्वारा एक जिला स्तरीय व्यवसाय सुधार कार्य योजना बनाई गई है।
19	Incubator connections have been established through portal for start-ups	स्टार्टअप पोर्टल के जरिए इन्क्यूबेटर संपर्क स्थापित किए गए हैं।
20	Government has taken various steps to liberalize the FDI policy.	सरकार ने एफडीआई (विदेशी प्रत्यक्ष निवेश) नीति के उदारीकरण के लिए अनेक कदम उठाए हैं।
21	The policy regarding Startups has been finalized.	स्टार्टअप संबंधी नीति को अंतिम रूप दे दिया गया है।
22	Under automatic route 100 percent FDI is allowed in brown field projects.	स्वतः अनुमोदन मार्ग के अंतर्गत ब्राउनफील्ड परियोजनाओं में 100 प्रतिशत एफडीआई की जा सकती है।
23	Initial Master Planning has been completed Best manufacturing infrastructure is available in India.	प्रारंभिक मास्टर प्लानिंग पूरी कर ली गई है। भारत में बेहतरीन विनिर्माण असंरचना उपलब्ध है।
24	No Segregated Data is maintained centrally in this Department.	इस विभाग में केंद्रीय रूप से कोई अलग आंकड़े नहीं रखे जाते हैं।
25	Barring a selected sectors, FDI is permitted up to 100 percent under the automatic route.	चुनिंदा क्षेत्रों को छोड़कर स्वतः अनुमोदन मार्ग के अंतर्गत 100 प्रतिशत एफडीआई की अनुमति है।
26	India is going to become a five trillion Dollar Economy.	भारत पाँच ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने जा रहा है।
27	A Road Map has been prepared to encourage MSME.	एमएसएमई को बढ़ावा देने के लिए एक रोडमैप बनाया गया है।
28	A Corpus fund of Rs. 10000 crores has been created in this department.	इस विभाग में 10 हजार करोड़ रुपये का कॉर्पस फंड बनाया गया है।
29	Online sale and purchase facility is available on this portal.	इस पोर्टल पर ऑनलाइन क्रय–विक्रय की सुविधा है।
30	Unification of taxes will reduce the cascading effect of taxes.	करों के एकीकरण से करों के दुष्प्रभाव कम होंगे।
31	NID Ahmedabad is the mentor of NID Vijayawada and NID Kurushetra.	एनआईडी अहमदाबाद एनआईडी विजयवाड़ा तथा एनआईडी कुरूक्षेत्र का परामर्शदाता है।
32	Startup has considerably increased the turnover of the domestic industry.	स्टार्टअप ने स्वदेशी उद्योग के कारोबार में अच्छी–खासी वृद्धि की है।

क्रम सं S.No.	English Sentence	हिंदी वाक्य
33	Cutting-edge technology is being used in industrial corridors.	औद्योगिक गलियारों में नवीनतम प्रौद्योगिकी का प्रयोग किया जा रहा है।
34	Make in India will generate employment opportunities.	मेक इन इंडिया से देश में रोजगार के अवसर पैदा होंगे।
35	The Production and distribution of salt is regulated by the Salt Act.	नमक के उत्पादन एवं वितरण पर नमक अधिनियम लागू होता है।
36	Start-ups with innovative ideas are given priority.	नवप्रयोग विचार वाले स्टार्टअप्स को प्राथमिकता दी जाती है।
37	The Govt. has developed several industrial corridors in the country.	सरकार ने देश में अनेक औद्योगिक कॉरिडोरों का निर्माण किया है।
38	The Govt. has a project to create 100 smart cities in the country.	सरकार की परियोजना है कि देश में 100 स्मार्ट शहर बनाए जाएंगे।
39	The Govt. has designed a new policy on digital India.	सरकार ने डिजीटल इंडिया के संबंध में एक नई नीति बनाई है।
40	The Govt. has an investor friendly FDI policy.	सरकार की एफडीआई नीति निवेशक अनुकूल है।
41	Tax exemptions are provided for new comer startups.	नए स्टार्ट–अप्स के लिए कर में छूट दी जाती है।
42	Perishable items are kept in cold storage.	जल्दी खराब होने वाली चीजें कोल्ड स्टोरेज में रखी जाती हैं।
43	Consumers can buy product online through e-commerce trade.	उपभोक्ता ई–कामर्स व्यापार के जरिए ऑनलाइन उत्पाद खरीद सकते हैं।
44	Any startup company may manufacture multi-brand product.	कोई भी स्टार्टअप कंपनी मल्टीब्रांड उत्पाद बना सकती है।
45	Land acquisition is the subject of state Govt.	भूमि अधिग्रहण राज्य सरकार का विषय का है।
46	Infrastructure up-gradation is a continuous process	अवसंरचना का उन्नयन एक सतत प्रक्रिया है।
47	Engineering clusters are setting up in the country.	देश में इंजीनियरिंग क्लस्टर स्थापित किए जा रहे हैं।
48	Government has launched an e-marketplace for online procurement of goods and services.	सरकार ने वस्तुओं और सेवाओं की ऑनलाइन खरीद के लिए ई–मार्केट प्लेस की शुरुआत की है।
49	Freight subsidy is provided to eligible industrial units	पात्र औद्योगिक इकाइयों को मालभाड़ा सब्सिडी दी जाती है।
50	Economic corridors are playing effective role in industrial growth.	आर्थिक कॉरीडोर औद्योगिक विकास में प्रभावी भूमिका निभा रहे हैं।
51	Government has taken several steps to facilitate ease of doing business.	सरकार ने व्यापार को आसान बनाने के लिए कई कदम उठाए हैं।
52	There is huge potentiality for investment promotion.	निवेश संवर्धन के लिए अपार संभावनाएं हैं।

संस्थान में हिंदी सप्ताह 2021

14–21 सितंबर 2021 के दौरान कोलकाता केंद्र सहित दिल्ली परिसर में एक ऑनलाइन संयुक्त हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया। इस दौरान सक्षम प्राधिकारी द्वारा गठित निर्णायक मंडल की देखरेख में विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। दिल्ली परिसर में प्रतियोगिताओं में निर्णायक मंडल द्वारा प्रतियोगिताओं का परिणाम घोषित किया गया ।

पुरस्कार जीतने वाले कर्मचारियों/अधिकारियों का विवरण निम्न प्रकार से है :

1. हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता

रंजन कुमार	–	प्रथम पुरस्कार
दीपा पी.जी. (हिंदीतर भाषी)	–	प्रथम पुरस्कार
मनोज मरोठिया	–	द्वितीय पुरस्कार
मोनिका सैनी	–	द्वितीय पुरस्कार
करिश्मा खान	–	तृतीय पुरस्कार
सते सिंह	–	तृतीय पुरस्कार

2. प्रश्नोत्तरी लिखित प्रतियोगिता

रौनक बिष्ट	–	प्रथम पुरस्कार
सतपाल सिंह	–	द्वितीय पुरस्कार
राकेश कुमार ओझा	–	तृतीय पुरस्कार

3. वाद–विवाद प्रतियोगिता

रितिका	–	प्रथम पुरस्कार
संजीव कुमार	–	प्रथम पुरस्कार
राकेश कुमार ओझा	–	द्वितीय पुरस्कार
नीतीश दवे	–	द्वितीय पुरस्कार
सतपाल सिंह	–	तृतीय पुरस्कार
करिश्मा खान	–	तृतीय पुरस्कार

4. कथा–कहानी–कहो अपनी जुबानी प्रतियोगिता

तनुश्री अरोड़ा	–	प्रथम पुरस्कार
पीताम्बर बेहेरा (अहिंदी)	–	प्रथम पुरस्कार
रितिका	–	द्वितीय पुरस्कार
एस. बालासुब्रमणियन (अहिंदी)	–	द्वितीय पुरस्कार
मोनिका वर्मा	–	तृतीय पुरस्कार
सविता अरोड़ा बेदी	–	तृतीय पुरस्कार

14–21 सितंबर 2021 के दौरान हिंदी सप्ताह (कोलकाता केंद्र) के अंतर्गत आयोजित प्रतियोगिताओं और उनके विजेता

1. हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता

अनुष्का श्रीमानी	–	प्रथम पुरस्कार
अतुल कुमार (हिंदी भाषी)	–	प्रथम पुरस्कार
उपासना आचार्य	–	द्वितीय पुरस्कार
दिब्येंदु पात्रा	–	द्वितीय पुरस्कार
श्राबनी मंडल	–	तृतीय पुरस्कार
तन्मय रॉय	–	तृतीय पुरस्कार

2. प्रश्नोत्तरी लिखित प्रतियोगिता

अतुल कुमार	–	प्रथम पुरस्कार
धीरेन्द्र	–	द्वितीय पुरस्कार
पिनाकी भट्टाचार्य	–	तृतीय पुरस्कार

3. वाद–विवाद प्रतियोगिता

रामकृष्ण दास	–	प्रथम पुरस्कार
जैनब इमाम	–	प्रथम पुरस्कार
तन्मय रॉय	–	द्वितीय पुरस्कार
सोमा घोष	–	द्वितीय पुरस्कार
श्राबनी मंडल	–	तृतीय पुरस्कार

4. कथा–कहानी–कहो अपनी जुबानी प्रतियोगिता

जैनब इमाम	–	प्रथम पुरस्कार
रामकृष्ण दास	–	प्रथम पुरस्कार
सोमा घोष	–	द्वितीय पुरस्कार
पिनाकी भट्टाचार्य	–	द्वितीय पुरस्कार

हिंदी उन सभी गुणों से अलंकृत है, जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में आसीन हो सकती है।

- मैथिलीशरण गुप्त

भारत में हिंदी भाषा की प्रमुख संस्थाएँ

1. नागरी लिपि परिषद्, नई दिल्ली
2. साहित्य मंडल, नाथद्वारा, राजसमंद, राजस्थान
3. राजभाषा संघर्ष समिति, दिल्ली
4. मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, भोपाल, मध्य प्रदेश
5. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा, महाराष्ट्र
6. कर्नाटक महिला हिंदी सेवा समिति, बेंगलूर
7. केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद्, नई दिल्ली
8. मुंबई हिंदी विद्यापीठ, मुंबई
9. केरल हिंदी प्रचार सभा, तिरुवन्तपुरम, मैसूर, कर्नाटक
10. हिंदी प्रचार परिषद्, बेंगलूरु
11. मणिपुर हिंदी परिषद्, इम्फाल
12. अखिल भारतीय भाषा–साहित्य सम्मेलन, पटना, बिहार
13. अंग्रेजी अनिवार्यता विरोधी समिति, नकोदर, पंजाब
14. राष्ट्रीय हिंदी सेवी महासंघ, इन्दौर, मध्य प्रदेश
15. हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश
16. भारत–एशियाई साहित्य अकादमी, दिल्ली
17. राष्ट्रीय हिंदी परिषद्, मेरठ, उत्तर प्रदेश
18. हिंदी प्रचार सभा, हैदराबाद, आंध्रप्रदेश
19. दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, चैन्नई, तमिलनाडू
20. अखिल भारतीय हिंदी संस्था संघ, नई दिल्ली
21. अखिल भारतीय साहित्य कलामंच, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश
22. भारतीय भाषा प्रतिष्ठापन राष्ट्रीय परिषद्, मुंबई, महाराष्ट्र

आज ज्ञान-विज्ञान, प्रौद्योगिकी और अन्य क्षेत्रों में तेजी से विकास हो रहा है। इस प्रगति और विकास से जन-साधारण भी लाभान्वित हो, हमें इसे सहज और सरल हिंदी के माध्यम से उन तक पहुँचाना होगा।

- अटल बिहारी वाजपेयी

तिमाही हिंदी कार्यशाला

1.	जनवरी–मार्च 2021	वरिष्ठ तकनीकी निदेशक श्री केवल कृष्ण जी राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र (NIC) को आमंत्रित किया गया था, जिसमें दिल्ली परिसर व कोलकाता केंद्र "कंप्यूटर पर हिंदी में काम कैसे करें" विषय पर व्याख्यान दिया।
2	अप्रैल–जून 2021	डॉ. एन. के. अग्रवाल, प्रोफेसर एवं प्रमुख, गणित विभाग तथा निदेशक, आईक्यूएसी, एल. एन. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार से ऑनलाइलन जुडे "प्रशासनिक पारदर्शिता एवं सूचना का अधिकार" विषय पर व्याख्यान दिया।
3.	जुलाई–सितम्बर 2021	दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. पुरन चंद टंडन जी ने एम. एस. टीम्स पर ऑनलाइन "सहज व्यक्तित्व ही सहज भाषा का प्रयोक्ता" विषय पर व्याख्यान दिया।
4.	अक्तूबर–दिसम्बर 2021	प्रो. गरिमा श्रीवास्तव, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय से एम. एस. टीम्स के माध्यम से ऑनलाइन जुड़ी, जिन्होंने हिंदी कार्यशाला में राजभाषा वेबगोष्ठी के दौरान विषय "वैश्विक परिदृश्य में हिंदी" पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।
5.	जनवरी–मार्च 2022	श्री ओ. पी. अग्रवाल, भारतीय रिजर्व बैंक (सेवानिवृत्त) जयपुर द्वारा एम एस वर्ड से परिचय–एक नए परिप्रेक्ष्य में विषय पर आयोजित कार्यशाला संचालित की गई।
6.	अप्रैल–जून 2022	श्री ओ. पी. सिंह, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली द्वारा "भारतीय भाषाएँ मातृभाषा और नई शिक्षा नीति में राजभाषा कार्यान्वयन की प्रासंगिकता" विषय पर आयोजित कार्यशाला संचालित की गई।
7.	जुलाई–सितंबर 2022	प्रो. देव शंकर नवीन, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली द्वारा "राजभाषा कार्यान्वयन में अनुवाद की भूमिका" विषय पर आयोजित कार्यशाला संचालित की गई।
8.	अक्तूबर–दिसंबर 2022	ओ. पी. अग्रवाल, भारतीय रिजर्व बैंक (सेवानिवृत्त) द्वारा "एम. एस. वर्ड से परिचय (उन्नत) एक नए परिप्रेक्ष्य में– घंटों का काम मिनिटों में कैसे करें" विषय पर आयोजित कार्यशाला संचालित की गई।

आज अंग्रेजी का प्रभुत्व प्राप्त करने के लिए दक्षिण के भाई-बहन जितना श्रम करते हैं, उसका आठवाँ हिस्सा भी हिंदी सीखने में करें तो हिंदुस्तान के बाकी दरवाजे जो उनके लिए बंद हैं, खुल जाएँ और वे हमारे साथ इस तरह एक हो जाएँ जैसे पहले कभी न थे।

- महात्मा गांधी

संस्थान में स्वागत

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान अपने शिखर बनाए रखने व समग्र रूप से इसकी उन्नति को ध्यान में रखते हुए समय–समय पर शिक्षण–प्रशिक्षण व अनुसंधान के क्षेत्र में विषय विशेष के विशेषज्ञों (संकाय सदस्यों) तथा प्रशासनिक कार्यों के लिए कर्मचारियों/अधिकारियों की भर्ती करता रहा है। इसी क्रम में वर्ष 2020–21 के दौरान दिल्ली तथा कोलकाता केंद्र में निम्न संकाय सदस्यों ने संस्थान में विभिन्न क्षेत्रों में अपना कार्यभार संभाला है: –

डॉ. आंचल अरोड़ा
सहायक प्रोफेसर (अर्थशास्त्र)

डॉ. विजय प्रकाश ओझा
ईसीजीसी चेयर प्रोफेसर (अर्थशास्त्र)

डॉ. अनिर्बान बिस्वास
सहायक प्रोफेसर (अर्थशास्त्र)

सुश्री नेहा जैन
सहायक प्रोफेसर (अर्थशास्त्र)

डॉ. चारू ग्रोवर
सहायक प्रोफेसर
(व्यापार संचालन तथा संभार तंत्र)

सुश्री सुगंधा हुरिया
सहायक प्रोफेसर (अर्थशास्त्र)

डॉ. आशीष पाण्डेय
प्रोफेसर (वित्त) एवं एमडीपी विभाग के प्रमुख

डॉ अंजू गोस्वामी
सहायक प्रोफेसर (वित्त)

डॉ. जितेंद्र कुमार वर्मा
सहायक प्रोफेसर
(सूचना प्रौद्योगिकी)

सेवानिवृति पर संस्थान से विदाई

संस्थान को जब समग्र रूप से परिभाषित करने का प्रयास करते हैं तो पाते हैं कि उसके समस्त सदस्य जो उसकी गतिविधियों को मूर्त रूप देने में अपना योगदान देते हैं, उसके साझेदार, उसकी इमारत, स्थान आदि सब मिलाकर इसकी पहचान है। एक इकाई के रूप में परिवार की उन्नति की परिधि में उस परिवार के सदस्यों की मुख्य भूमिका रहती है। आज आईआईएफटी अग्रणी बिजनेस स्कूलों में से एक है जिसका श्रेय इसके परिवार के पूर्व एवं वर्तमान सदस्यों अर्थात छात्र, संकाय सदस्य, अधिकारियों व कर्मचारियों को जाता है। वर्ष 2020–21 के दौरान इस परिवार के कुछ सदस्य अपना सेवाकाल पूरा करते हुए सेवानिवृत्त हुए हैं, जिन्होंने अपने जीवन का अमूल्य समय देकर संस्थान की उत्तरोत्तर उन्नति में अपना योगदान दिया है। हम सभी इन सदस्यों के समृद्ध व मंगलम जीवन की कामना करते हुए अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

डॉ. रवि शंकर
अध्यक्ष
16-06-2001 से 31-05-2020

डॉ. विजया कट्टी
अधिष्ठाता
07-07-1989 से 31-10-2020

श्री देश राज
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी
01-01-1982 से 30-06-2020

श्री बी प्रसन्ना कुमार
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी
30-03-2007 से 31-05-2021

श्री राजेंद्र प्रसाद
हिंदी अधिकारी
31-07-1992 से 30-11-2021

राजभाषा नियम, 1976

हिंदी के अनुमानित ज्ञान के आधार पर देश के राज्यों/संघ शासित प्रदेशों को तीन क्षेत्रों, यथा – क, ख, ग में प्रभाषित किया गया है।

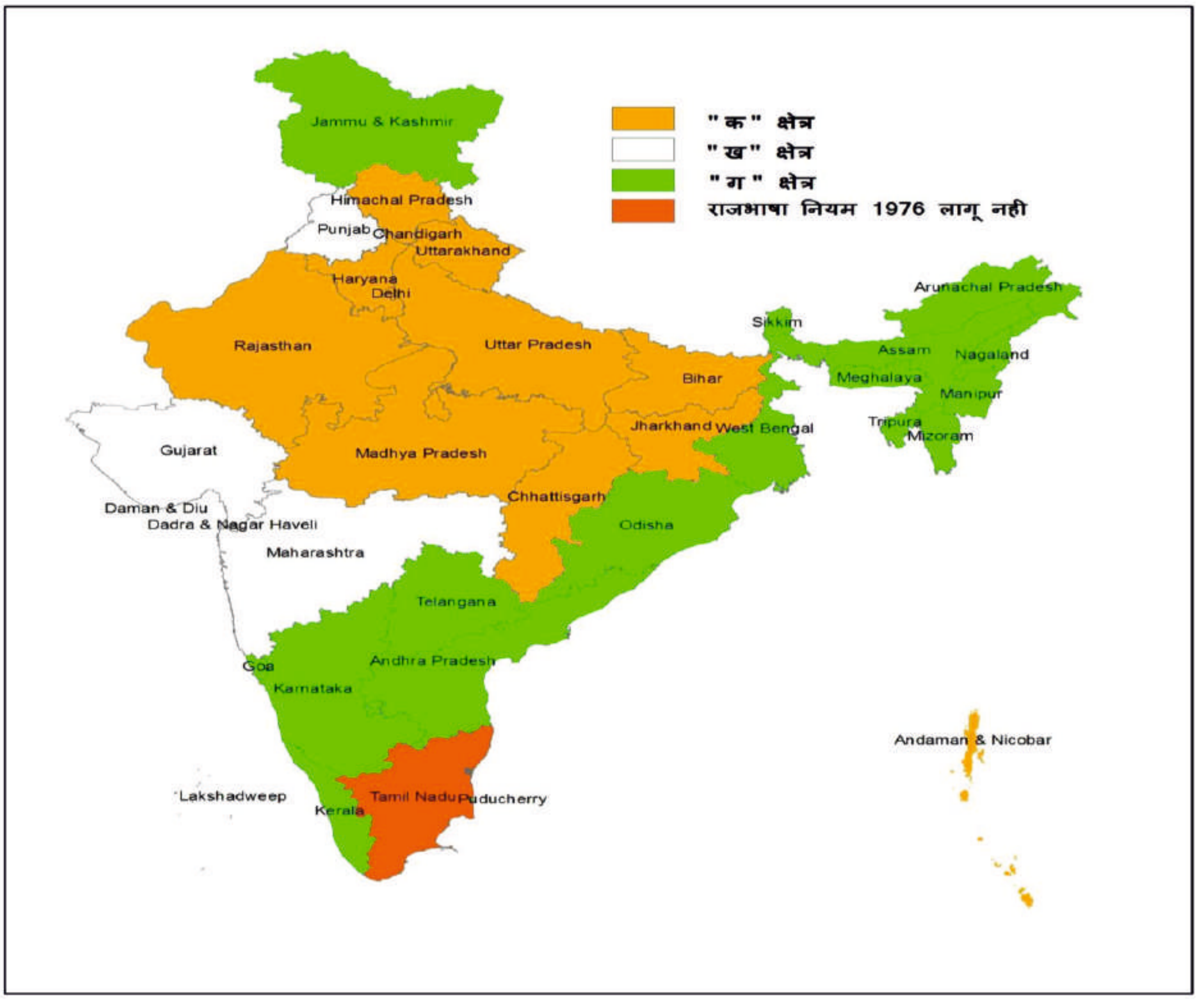

भाषा क्षेत्र	राज्य/संघ राज्य
'क'	बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड़, उत्तराखंड, राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्य तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली संघ राज्य हैं
'ख'	गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमण और दीव तथा दादरा और नगर हवेली संघ राज्य
'ग'	उपरोक्त निर्दिष्ट राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा संघ राज्य

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2021-22 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	'क' क्षेत्र	'ख' क्षेत्र	'ग' क्षेत्र
1	हिंदी में मूल पत्राचार (ई–मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 65% 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 100% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1. ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2. ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3. ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 90% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1. ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 55% 2. ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55% 3. ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के 55% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति
2	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3	हिंदी में टिप्पणी	75%	50%	30%
4	हिंदी में माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
6	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वंय तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपिक)	100%	100%	100%
8	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोडकर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजीटल सामग्री अर्थात हिंदी ई. पुस्तक, सीडी/डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय	50%	50%	50%
10	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद	100%	100%	100%

राजभाषा हिंदी के सरल कार्यान्वियन हेतु हम क्या करें?

- पत्रों या फाइलों में टिप्पणियां हिंदी भाषा में लिखें और हर पत्र पर या फाइल में हस्ताक्षर हिंदी भाषा में ही करें।
- राजभाषा कार्यान्वयन से संबंध सूचनाओं को कार्यालय के सूचना पट्ट पर लगाते रहे, ताकि सभी कार्मिक इसके महत्व को समझ सकें।
- हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर अनिवार्य रूप से हिंदी में ही दे। 'क' क्षेत्र से अंग्रेजी में प्राप्त पत्रों के उत्तर भी आप हिंदी में दे सकते हैं।
- हिंदी में फैक्स/ई–मेल करना आरंभ करें। अंग्रेजी में प्राप्त ई–मेल का उत्तर भी आप हिंदी में दे सकते हैं। अपने ई–मेल के व्यक्तिगत सूचना विकल्प में जाकर आप अपना नाम, पता, विभाग आदि द्विभाषा में लिखें।
- रबर की मोहरें हिंदी एवं अंग्रेजी यानी द्विभाषी बनवाएं।
- डिस्पैच रजिस्टर में डाक हिंदी में चढ़ाएं तथा हिंदी में भेजे जा रहे पत्रों के आगे H लिखे तथा अंग्रेजी में भेजे जा रहे पत्रों के सामने कॉलम में E लिखें ताकि हिंदी पत्राचार का वास्तविक प्रतिशत ज्ञात हो सके।
- कार्यालय प्रभारी हिंदी में कामकाज की देखरेख करते हुए कार्मिकों को हिंदी में कामकाज के लिए पूर्ण प्रोत्साहन एवं प्रेरणा प्रदान करें ।
- राजभाषा अनुभाग में उपलब्ध हिंदी किताबों को लेकर पढ़ें । रोज कम से कम एक हिंदी शब्द सीखें तथा उसका प्रयोग जरूर करें।
- अपने विभाग से संबंधित पत्राचार में द्विभाषी प्रारूप का प्रयोग करें ।
- अपने वार्तालाप में सरल बोलचाल की हिंदी का प्रयोग करें।
- लिफाफों पर पते हिंदी में लिखें।

राजभाषा हिंदी अपनाएँ / देश का गौरव बढ़ाएँ

भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल भाषाओं की सूची

हिंदी	1950	ओड़िया	1950	संस्कृत	1950	बोडो	2004
असमिया	1950	तमिल	1950	मराठी	1967	डोगरी	2004
बंगला	1950	मलयालम	1950	सिंधी	1992	मैथिली	2004
गुजराती	1950	तेलुगु	1950	कोंकणी	1992	संथाली	2004
कश्मीरी	1950	उर्दू	1950	मणिपुरी	1992		
कन्नड़	1950	पंजाबी	1950	नेपाली	1992		

याद रखने योग्य बातें

- राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3 (3)के अंतर्गत निम्नलिखित कागजात अनिवार्य रूप से द्विभाषी रूप से जारी किए जाने चाहिए: सामान्य आदेश/परिपत्र/ज्ञापन, प्रेस विज्ञप्तियाँ/टिप्पणियां, संविदाएँ, करार, लाइसेंस, परमिट, टेंडर के फॉर्म/नोटिस, अधिसूचनाएँ ,संकल्प, प्रशासनिक या अन्य रिपोर्ट।

  The following documents which come under section 3(3) of OL Act must be issued in Bilingual: General Order/Circulars/Memo, Press Communiques/Resolutions, Administrative and other Reports.

- हिंदी में प्राप्त पत्रों के जवाब हिंदी में ही दें।

  Replies to the letters received in Hindi may be replied to in Hindi.

- सभी लेखन सामग्रियां, प्रपत्र और प्रारूप हिंदी और अंग्रेजी दोनों में होने चाहिए।

  All Stationery items, Forms and Formats should be in Hindi and in English.

- सभी रबड़ की मोहरें, विजिटिंग कार्ड हिंदी में भी होने आवश्यक हैं।

  All Rubber Stamps, Visiting Cards must be in Hindi also.

- साइन बोर्ड, होर्डिंग, बैनर जैसी मदें क्षेत्रीय भाषा में, हिंदी और अंग्रेजी के क्रम में होने चाहिए।

  Sign Boards, Hoarding, Banners etc. may be prepared in Regional Language, Hindi and in English respectively.

- केंद्र सरकार के कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन की जिम्मेदारी कार्यालय के प्रशासनिक प्रमुख की होती है।

  The onus of OL Implementation lies on the Administrative Head of the Central Govt. office.

- 'क' क्षेत्र में होने के नाते हिंदी/द्विभाषी पत्राचार का हमारा लक्ष्य 100% है ।

  Being in 'A' region, our target for Hindi/ bilingual correspondence is 100%.

- 'क' क्षेत्र में होने के नाते हिंदी/द्विभाषी टिप्पणी लिखने के लिए हमारा लक्ष्य (न्यूनतम) 75% है।

  Being in 'A' region, our target (minimum) for Hindi/ bilingual noting is 75%.

- सभी कंप्यूटरों/लैपटॉप में हिंदी में कार्य करने के लिए यूनिकोड सक्रिय होना चाहिए।

  All PCs/Laptops should be Unicode enables to work in Hindi.

एक दिन हिंदी एशिया ही नहीं, विश्व की पंचायत में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगी।

- गणेश शंकर विद्यार्थी

आसानी से हिंदी सीखें

- इसके लिए आपको एक सवाल का जवाब देना होगा, क्या आप तैरना सीखना चाहते हैं? यदि हां तो आपको पानी के संपर्क में रहना पड़ेगा, उसमें डूबना, उतरना और हाथ पैर मारना सीखना होगा, तभी आप तैरना सीख सकेंगे, यही इस दुनिया में कुछ भी सीखने के संबंध में सच है।
- किसी भी भाषा को सीखने के लिए उसे पढ़ना, सुनना और व्यवहार में लाने का प्रयास करते रहना होगा।
- आप हिंदी समाचार, पत्रिका, टीवी प्रोग्राम देखिए, सुनिए और खुद हिंदी लिखने–बोलने का प्रयास करते रहिए। ऐसे लोगों की संगत में रहिए जो हिंदी भाषा का प्रयोग करते हो, कुछ समय बाद आप भी उन सभी की तरह हिंदी बोलना, लिखना सीख जाएंगे। इसे आज से ही शुरू कर दीजिए।
- किसी भी भाषा को सीखने से पहले यदि बेसिक स्पष्ट हों तो कोई भी समस्या नहीं आती है। अतः बिना किसी झिझक के प्राइमरी शिक्षक से उच्चारण सीख ले, मात्राओं का तरीका देख लें, बस हिंदी सीख लेंगे।
- हिंदी में डब इंग्लिश फिल्में देखिए। आप बहुत कुछ सीख पाएंगे डब फिल्मों से।
- हिंदी भाषा भाषी क्षेत्र में कुछ दिन रहिए, लोगों से मिलिए, बातचीत कीजिए, हिंदी सीख जाएंगे।
- छोटी–छोटी कहानियों की हिंदी किताबें पढ़ना शुरू करें।
- नोटबुक बनाएं और प्रतिदिन उपयोग में आने वाले हिंदी शब्दों व वाक्यों को नोट करें और प्रयोग करें।
- पसंदीदा हिंदी गाने सुनिए और उन्हें गुनगुनाए।

हिंदी की कुछ उपयोगी वेबसाइटें

क्र.सं.	वेबसाइट का नाम	यूआरएल
1.	**हिंदी साहित्य चैनल** – आपको हिंदी विषय से संबंधित संपूर्ण जानकारी इस वेबसाइट पर मिलेगी जिसमें हिंदी साहित्य एवं हिंदी व्याकरण के सभी टॉपिक सम्मिलित होंगे।	http://www.hindisahity.com
2.	**साहित्य मंजरी** – देश–विदेश के कोने–कोने से भेजी गई समकालीन रचनाकारों की नवीन कविता, कहानी, गजल का लेख समीक्षा इत्यादि।	https://sahityamanjari.com
3.	**हिंदी कुंज डॉट कॉम** – हिंदी व्याकरण, हिंदी पत्र लेखन, हिंदी निबंध आदि का संकलन है।	https://www.hindikunj.com
4.	**रफ्तार** – खबर, शब्दकोश, ज्योतिष, स्वास्थ्य आदि विषयों से संबंधित लेखों का संकलन है।	https://www.raftaar.in
5.	**वेबदुनिया** – वेबदुनिया एक भारतीय समाचार जालस्थल है। हिंदी के साथ–साथ तमिल, मलयालम, तेलुगू आदि भाषाओं में उपलब्ध है	https://hindi.webdunia.com

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान
राजभाषा कार्यान्वयन समिति

प्रो. सतिंदर भाटिया, कुलपति	अध्यक्ष
डॉ. प्रमोद कुमार गुप्ता, कुलसचिव	सदस्य
श्री विमल कुमार पंडा, प्रणाली प्रबंधक	सदस्य
श्री गौरव गुलाटी, उपकुलसचिव (सा.प्र. एवं परियोजना)	सदस्य
डॉ सिद्धार्थ शंकर रॉय, सहायक प्रोफेसर, काकीनाड	सदस्य
सुश्री कविता वाधवा, सहायक प्रोफेसर, कलकत्ता केंद्र	सदस्य
श्री पार्थ शाह, कुलसचिव, गिफ्ट सिटी (प्रतिनियुक्ति पर)	सदस्य
सुश्री पी.जी. दीपा, सहायक वित्त अधिकारी	सदस्य
सुश्री निर्मला, सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष	सदस्य
श्री अनिल कुमार मीणा, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
सुश्री सुमिता मरवाहा, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
सुश्री मोहिनी मदन, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
सुश्री कविता शर्मा, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
सुश्री ललिता गुप्ता, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
श्री करुण दुग्गल, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
श्री जितेंद्र सक्सेना, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
सुश्री होईजात बाईते, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
श्री राहुल कपूर, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
सुश्री लीना नागवानी, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
श्री द्वैपायन ऐश, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
सुश्री सविता अरोड़ा बेदी, निजी सहायक	सदस्य
श्री संजीव कुमार, वरिष्ठ सहायक	सदस्य
सुश्री गगन अरोड़ा, प्रशासनिक समन्वयक	सदस्य
डॉ. मेघा आचार्य, हिंदी अधिकारी	सदस्य सचिव

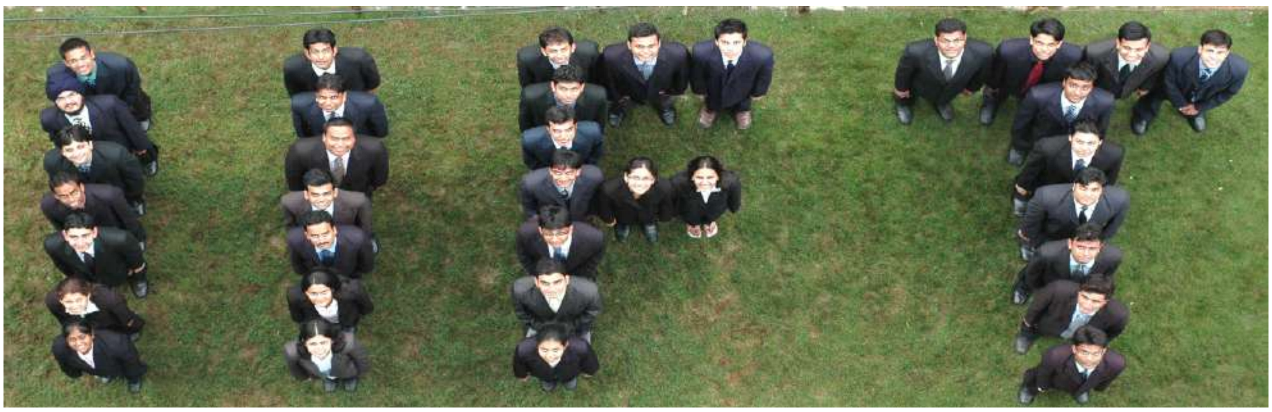

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान
(मानित विश्वविद्यालय)
बी–21, कुतुब इंस्टीट्यूशनल एरिया, नई दिल्ली–110 016
फोन : 91–11–39147200, 201, 202, 203, 204, 205

कोलकाता परिसर :
1583 मदुराहा, चौबधा रोड, वार्ड नंबर 108, बरो XII कोलकाता 700 107
फोन : 033–24195700, 24195900, 24432453
वेबसाइट : **www.iift.edu**

काकीनाडा परिसर :
आईआईएफटी, जेएनटीयू कैंपस, काकीनाडा, आंध्र प्रदेश 533003

डॉ प्रमोद कुमार गुप्ता, कुलसचिव, भारतीय विदेश व्यापार संस्थान, नई दिल्ली
के लिए ए.के. प्रिंटर्स द्वारा मुद्रित व प्रकाशित